



# ब्रह्मात्र

(राजस्थान के सृजनशील शिक्षकों की राजस्थानी रचनाओं का संकलन)



शिक्षा विभाग राजस्थान  
के लिए  
सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर  
द्वारा प्रकाशित



# बहुला

सं. सूर्यशंकर प्रशिक

सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर

कठे ही  
कठे ही  
कहर त

नोसल  
मेळ है

रचना L  
भाषा

© शिक्षा विभाग, राजस्थान, बीकानेर  
प्रकाशक

शिक्षा विभाग राजस्थान के लिए  
सूर्य प्रकाशन मन्दिर,

बिस्तो का चौक, बीकानेर

आवरण एवं कला पदा : तूलिकी

मूल्य : रुपये मात्रह पैंमे बयासी मात्र

संस्करण : प्रथम, 5 सितम्बर 1988

मुद्रक

रचिका प्रिण्टमं

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032,

BADLAV

(Rajasthani Vividha) Edited by  
SURYA SHANKAR PAREEK

Price Rs. 17.82 p.

## आमुख

साहित्य में लगाव रखनेवाले रचनाशील अध्यापकों की ये पाँच पुस्तकें आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। शिक्षक दिवस प्रकाशन योजना के रूप में हमारे राज्य की जो एक शानदार परम्परा सन् 1967 से बराबर चली आयी है, उसी की अगली कड़ी में इस साल की इन पाँच पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है। शिक्षकों के द्वारा लिखी गयी रचनाओं को सामने लाने के लिए शिक्षक दिवस से अधिक सुसंगत अवसर और कौन-सा हो सकता है।

बालकों को पढ़ाने के साथ-साथ मौलिक लेखन में लगना भी एक तरह का शिक्षण कर्म ही है। साहित्यकार हमारे समाज के शिक्षक ही तो होते हैं। उनके अनुभव समाज में रहनेवाले मानवीय विचारों, गुणो-अवगुणों आदि को लेकर एक तरह का संवाद होता है, जो व्यापक रूप में चलता रहता है, और व्यक्ति तथा समाज के संस्कारों को सँवारता रहता है। साहित्य-लेखन समाज की शिक्षा का एक अनौपचारिक प्रयास है। मुझे खुशी है कि हमारे राज्य के अध्यापक अपनी समाजपरक चेतना के लिए रचनाशील रहते हैं और अभिव्यक्ति के तरह-तरह के माध्यमों पर काम करते हैं।

मुझे बताया गया है कि राज्य के अनेक अध्यापक देश की स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में भी लिखते हैं और उनका अपना स्वतन्त्र साहित्य भी प्रकाशित हुआ है। यह जानकर मुझे अपार सुख मिला है कि इस दिशा में उन्हें सन् 1967 में विभाग द्वारा शुरू की गयी इस 'शिक्षक दिवस योजना' से पर्याप्त दिशा मिली है। मैं चाहता हूँ कि साहित्य की सभी विधाओं में गति के साथ लिखनेवाले कलम के धनी अध्यापकगण शिक्षक दिवस योजना के तहत प्रकाशित होनेवाली पाँचों पुस्तकों की अगली कड़ी को इतना स्तरीय बनायें कि उनकी रचनाओं पर राज्य के विद्यालयों में और साहित्य संस्थाओं में गोष्ठियाँ आयोजित की जायें। इसके लिए वे अभी से

प्रयत्न में लग जाये ताकि अगले वर्ष के प्रकाशन में उनकी वर्ष के दौरान लिखी गयी प्रतिनिधि रचना ही प्रकाशन में आये।

इस वर्ष प्रकाशित होने वाली पाँच पुस्तकें ये हैं।

1. सहस्रधार (कविता सकलन) स. ज्ञान भारिल्ल
2. राग महान्धा (हिन्दी विविधा) स. रामप्रसाद दाधीच
3. बदलाव (राज विविधा) स. सूर्य शंकर पारीक
4. क्षितिज पार (कहानी सकलन) स. नासिरा शर्मा
5. आकाश के फूल (बाल साहित्य) स. रत्नप्रकाश शील

इनके सम्पादन का जिम्मा उठानेवाले अतिथि सम्पादकों, प्रकाशकों और रचनाशील अध्यापकों को धन्यवाद। जिन अध्यापकों की रचनाएँ इस वर्ष प्रकाशन में न आ सकी, वे निराश न हों, बल्कि अपने लेखन की धार को और अधिक तराशने की कोशिश करें।

शिक्षक दिवस, 1988





(सलित के. पंवार)

निदेशक,  
प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा  
राजस्थान, बीकानेर

## पै'ली थकां म्हारी बात

आपरें मिनख जमारें मे सुख-दुख रा अणगिणत झोला झेलणियां अर खोड़ा रें गावा री अबखाई नै विना गिनार कर्यां सैन करणियां वां अध्यापकां नै लखदाद है जिका टावरां री भणाई सारू छाती तोड़ता आपरें जीवण रें करडें-कंवळें अर खारें-खाटें अनुभवां नै आपरें लेखण मांय कर प्रगटाया है। आंरी कविता-कहाण्यां अर कोई निबन्ध साचरें घरातल मार्ये साव खरा उतरें। लिखणो हरेक रें तावें आवणियो कोई सहज काम नी है। इणी वास्तै 'कविमंतीपी स्वयम्भू' कैयो है। कवि लेखक री रचना उणरी भाव सन्तान हुवै। उणनै वें जाबतें सू राखणो चावै। उणनै बधतो-पसरतो देखणों चावै। लेखक रें छाडा आ खिमता किणी पावू दुनियां मे नी लाघै। कवि-लेखक क्षीणें सू क्षीणें अर डूगें सू डूगें भावां नै जगत री भलाई अर इतिहास री साख वेई सँवडूड क'रर छोडै।

आज तो प्रजातन्त्र है, देश आजाद है जद कोई भी आपरी दाय आवै जिया आज आपरें मँनचाही आलोचना कर सकै, राज तेज रो कोई खोप नी पण कवि तो राज-शाही रें जमाने मे भी साची बात कैयां विना नी रेंयो। दौया-सी चसती आंध्यां अर गलमूछ्यां आळें उण खाडाधारी राजा-नहाराजावा नै पण साचरी खरी-खोटी कँवण सू कदेई नीं चूक्यो। जद कै याने माथो कवल करण रो गुनो माफ हो। पण कवि किणी सू खोप खायो नी। जदहीज ओ कैयो है कू कवि सू अळसेड नी करणी।

कवि-लेखक देखा दिस्टी में था-म्ही जेडो साव अदनो सो दीसै पण उणरें तोव सै अन्तस में बीजां करतो एक न्यारो हीज संजोरापण हुवै। राजस्थानी कवि सदीय सूँ उतर-पडूतर एकै साथै देवतो आयो है। राजस्थान रा कवि-लिखारा आदजुगाद सूँ काम पडूघां मुहाणा फोरता आया है। कवि दो ओळी रें दूहै मे जीवण रें पाट नै इस तकमोड नाखै जिस तक सिनेमा रें पडूदें मार्ये सैन, आँख फरूकै। तिी ताळ



मे फुरतो निजर आवै । अेडी कविता धोरो धरती रै राजस्थान मे ङाजी है । आ राजस्थान री घणी बत्ताई है ।

उत्तर पडूतर रो व्यापार इण धूहै में सावळसर देख्यो जाय सकै है—  
कहो लूबाँ कित जायसो पावस धर पड़ियाँ ।  
कै—

हियै नवोडै नार रै वासम वीछड़ियाँ ।

एक कविराजा राजदवार मे आपरो जोगतो आदर-मान हुवतो नी देख  
भरघँ दरबार मे राणा भीव नै कैय सुणाई—  
भीवाँ तू भाटो मोटै डूगर माँयलो ।

पण राणा चतराई सू धौ राखतै कवि नै आदर देवतो आपरी छाती रै चिपाय  
लियो अर 'आयो कविराजा' साद प्रगटाया कै बैरी अबै बख मे आयो है, तू थारो  
मायो बढा'र रँसी पण कवि इतरो काचो नी हो उण छट पासो फोरतै कैयो—  
कर राखू काठो शकर ज्यूँ सेवा कहँ

राणा रै मनसोबै पर पाणी फिर-यो, कान खुस'र हाय मे आयग्या । आ है अठै  
रै कवि री करामात ।

अठै रो कवि राजा-महाराजावा रै भोताड अर रोव रै हेठै न डरघो अर न  
कदेई दब्यो । सुणावण जोग बात तो सुणा'र हीज रँयो । बेटै अर बाप रै हत्यारै  
जयपुर अर जोधपुर रै धणचाँ नै एक साथै बैठ्या देख'र कवि उणरा कारनामा  
जणावता थकाँ कैयो—

धिन जैपर धिन जोधपुर दोनूँ थाप जयाप

कुरम मारघो डीकरो, कमघज मारघो बाप

जैपुर आळै बेटै नै अर जोधपुर आळै आपरै बापनै मार'र राजगादी हाँसल  
करी ।

जद हीज जोधपुर रै बखतसिधनै एक कवि साची कैय सुणाई उण टेम बखत  
सिध 'बापो-बापो' कैयर घोडै नै विडदाय रँयो हो ।

बापो कैमत बखतसिध काँपि है कै काण

अबकँ बापो जे कैयो तो भवग तजँलो प्राण

इण धरती रै कवि री आही तुकम तासीर है ।

राजस्थान री धरती सदामद सूँ हीज बोलाळो राखती आई है । बा मून  
भालर कदेई नी वँठी । इणी खातर राजस्थानी साहित्य री सिरजण परापरी जद  
सूँ आज लग लगोलाग चाल रँयी है अठै तरव. रँ खडकी है तो कविता रा साद  
दडूक्या है । भालाँ रा भञ्जका अर तरवारा'रा पळका नै मोळो नी पडण देवणो

कवि अर कविता रो दावो रँयो है ।  
आज भी अठैरा कवि नै लिखारा आपरै फरजनेँ सावळसर निभाय रँया है ।

इण रो प्रमाण है इण सग्रँ सारू प्रदेश री च्याहूँ कूटां सू अर दूर आतरै वस्तै गाँवां सू रचनाधर्मी शिक्षक लिखारा आपरी भाँत-भतीली अथवा विविध विधावाँ में लिखी थकी जेटबन्द रचनावाँ खिनाई नै समदाई है। राजस्थानी साहित्य आज जिण गति-मति सूँ लिखीज रँयो है उण में अध्यापकाँ रो सरावण जोग अर सबळो योगदान रँयो है।

मिनख लिखाराँ री दाईँ सुगार्याँ रो पण इण धकै पूरो जोर लाग रँयो है। वै गद्य अर पद्य रै लेखण में सगळीँ रै साथै पग सूँ पग जोड़'र घालण में समर्थ हैं।

अठै आ बात कँवण री घणी उतावळ है कँ शिक्षा विभाग सिरजणवन्त शिक्षक लेखकाँ री रचनावाँ नै हर साल पोथी रूप में छापण री जिकी बाल्ही नै आलीजा योजना चालू करी है उण सू जिकाँ में बीजरूप लेखण रा सस्कार है वानै आ योजना खिमतावान अर आदर जोग लेखक हुवण में सागीड़ो सायरो दे रँयी है। इण योजना मायकर(माध्यम सूँ) प्रेरणा लेपर केई भाई प्रतिभावान अर लूँठा साहित्यकार बप्प्या हैं। वँ आज साहित्य रै इतिहास में आपरो नाँव ओपती जागाँ लिखावण में पकायत ही समर्थ हैं। कहाणी रै क्षेत्र में तो बाँरो निजूपणो सांप्रतख सामनै है। बीजा केई लिखारा बळोवळी नै तरोतर लिखारा रूप में सामनै आय रँया है। नोसला लिखारा पण इण योजना सू जोधजुवान लिखारा हुवण में किणी सूँ पाल्या नी पत्लै।

आ एक ठावी बात है कँ लेखक जद कठै ही छपै नी तो उणनै आपरै कियोड़ै काम रो के सुख? हाथ सूँ लगायोड़ै विड़लै नै सगळा ही फळतो पांगरतो देखणी चावै। कितासीक उठता लेखक तो इण खातर अठीनै सूँ मूँडो फेर लेवै कँ वारी खून पसीनो एक कर'र लिख्योड़ी रचना कठै ही छपैनी तो वानै उण रो के सुवाद आयो। वँतो बापड़ा रोही में खिल्योड़ै पोहप दाईँ उठै रा उठै ही मुरझाव'री। जद लिखण री वेगार अँळी जावै ता पछै अँडी वेगार करै हीज क्यू!

राजस्थानी रचनावाँ नै छप्पण रो तोड़ो वाँ लेखकाँ सारू भी खटकण आळी वांत है जिका इण सारू आपरै जमारनै समरप्यो है। पण जाणा आ हालात सदा नी रँवैला। साहित्य री सुरज चौगड़दे आपरो उजास प्रगटावै-भसरावैला।

जियाँ कँ पैला बतायो जा चुक्यो है कँ शिक्षा विभाग हर साल साहित्य सिरजण सू जुड़या थका 'शिक्षका' री रचनावाँ नै पोथी रूप देयर छपावै अर इण सारू वँ सारा ही लेखक अध्यापकाँ री रचनावाँ तेड़ावै। सगळीं नै ही आप आपरी रचनावाँ भेजण रो अधिकार है। अब की वार दो सौ'क रै अड़गड़ै रचनावाँ आई हैं। कविता, कहाणी, निबन्ध अर विविध। कई लेखक तो तीनूँ ही विधावा में एक सूँ बती रचनावाँ खिनाई है। केई दो में अर केई एक ही विधा री एक सूँ बती रचनावाँ भेजी हैं। आँ रचनावाँ रा छपण आळी पोथी सारू तीन बंट पैला थकाँ सू करीजता आया है। हरेक बंट सारू पचास रै अड़गड़ै पेज राखीज्या है। रचनावाँ

रो बोझ अर उणारी गुण धर्मिता न देखता अ पेज साव धोड़ा है पण बंध्योड़े नेमाने न तो रचनाकार तोड़ सकी अर न हीअ सपादक रै इयां करणू सारू है ।

इण सग्रे सारू नी चावता थका पण केई घणो आछी रचनावां नै छोड़ देणी पड़ी है । सग्रे सारू रचनावां रो चुणाव छातीनै करही राघर करीज्यो है । मन नै केई हेला दांगड़ चिती मे पड़ना पड़यो है की रचना आ लेऊं का आ ! अंते पते मननै काठो कर'र अँ सँमूडे आळी रचनावा तयसुदा करी है ।

न्यारे न्यारे ढबढाळें आळी सँकडू रचनावा में सू बीण-बिखण म्हारें ताल अर समझ मे आई जकी इण सग्रे मे भेळीजी है पण जिकी नी ली जाय मकी वां में सू घणकरी रचनावा आपरें रूप सरूप में किणी सू घाट नी है । कोई आ नी समझ के लारें रँयोड़ी रचनावा हळकी का अजोगती हुवण रै कारण छोडीजी हुवै ।

छोडण रा बीजा कारण अँ रँया है —

- (1) पैला थकी किणी पत्रिका में छप्पोड़ी ।
- (2) टाइप री अणमेधा गळतिपा, वर्तनी में गडबड़ पढण में सावळमर नी आवणो ।
- (3) जाबक क्षेत्रीय बोली में अर हिन्दी राजस्थानी रो अंतर सपट नी करण आळी ।
- (4) जाबक तउ-वायरी घसारा काटण सारू लिह्योड़ी अर रोळगदोळ लिपि मे लिह्योड़ी ।

इण सग्रे मे अँडी रचनावां घणै कोड सू पै'खड़ीजी हैं जिकारें अकुरा मे मोटे रूख बणनै रा गुण है । जिकै लिखारा में लेखक रा बीज रूप सम्कार दीठ चढथा ।

इण सग्रे री रचनावां रा मुर कठे ही तीखा है तो कठे ही मधरा मौजाळू है । कठे ही मासा मारता लखाबे तो कठे ही निवण बीनती करता निजर चडे । कठे ही काळ री कहर तो कठे ही बादळी री मनुहार है । जे कठे ही कौमी एकता रो दावो है तो कठे ही गणतंत्र रो मीजान बँठाइज्यो है । कठे ही शोपण है तो कठे ही पोषण रा भाव है । कठे ही किणी री चितार तो कठे ही इतिहास री पुकार है । कठे ही जुगबोध अर कठे ही प्रबोध देईज्यो है । इण परवार कर बीजा नीराही भाव । मूळ रचना पढ्योँ सू पाठक नै वारी असनूत रो ठाव लागती । इण में कठे ही सँदा कवि बोलता सुणीजै तो कठे ही नोसला आपरो मुर उघरै । नूवा-जूता रो अँठे खोरखाड सो मेळ है । इणी तुमार इण सग्रे री कहाण्या रा बोल जे आँडा-तिरछा है तो कठे ही सख पाधरा पण अबखाया रो धो-नो नी । गाँवां मे आज रै जुग मे भी आवण-जावण रा घणा फोड़ा है । आज आखो देश राजनीति रै साथे मे सुख-दूख री साटी झेलै । आज राजनीति रो, चुणाव रो, बोटो रो सेळो कानाने बै'रा करै । आज बोट री राजनीति गाँवा रै मिनखनै बोट नाक्यो है । ज्यू बकरी

तूम्हें नै बोटे । पंचा सरपंचां री डागपटेली मुखरा सास नी लेवण देवै । च्यारां कनै भीड ही भीड़ । वसा मे मिनखा री भीड़ अर घर मे नार्णरी भीड़ । सहारा मे गदगी तो गांवां मे मांदगी । जैड़ी भी घटना घटे उणरो प्रभाव सब सू ज्यादा लिखारा पर हुवै । वं घणा संवेदनशील । दूसरै रो हक मारणों, उजर करै तो सुणै कुण नौकर हुवै तो अबखी जागां तबादलो करा नाखै । नातर सीट तो सीरी भीरी है हीज । एक हीज कहाणी में बोळी बोळी बाता रो विवरों आयो है । असरदार कहाण्यां कें पडै तो उत्सुकता बणी रैवै ।

राजनीति रै प्रभाव सू लोग पटै सुदी जमीना आपरै नाव कर लैवै अर वारों वाळ ही भुरै नी । आज भाईचारो खाली सबद रैयग्यो है । सत्यासियो काळ लोग ने चमगूंगा बणा दिया है ।

निबंध विधा मे मंज्योडै लेखकां री करामात है । इण मे इतिहास है, गैवाळ शिल्प है, मिनख है अर मिनखाचारो है । आदर्श अध्यापक है तो गरीबी मेटण रा उपाय है । लोकतन्त्र है, लोक-पर्व है । भाषा भाव अर मँणत री दोठ सू संग्रै री सै'न रचनावां पढण जोग है मानण जोग है । आस बंधै कें राजस्थानी भाषा समृद्धि रै उच्च शिखरां चढ रैयी है । कवि कविता नै, कहाणीकार कहाण्या नै अर निबंध-कार निबंधां नै घणां सवारया है । विषय नै आपरी समझ रै पाण सावळ सावट'र चाळया है । उखड़ाव री जागा ने ठाव घणो है । लिखण रो ढव खासा खासा एक सो है ।

आज राजस्थानी भाषा आपरै सकड़ीलैने तोड़'र चपट मैदान मे दावै सू ऊभी रै'वण री खिमता राखै है । नूवै नूवै चरसै चलाण मे ओपतो अर जोगतो लिखीज रैचो है । एक रूपता रै म्यानै में आज राजस्थानी एक है एक सी है । जिका एकरूपता नी हुवण रो कूडो सवाल उठावै है वानै अंडा संग्रै पढ'र आपरा विचार बदळ देवणां चाहिजे । आज राजस्थानी जूनै सू नूवै मे दाखल हुय चुकी है । इणरो सिवरो अंडै लेखका रै माथै मेलीजला जिकां सै लोग मायड़ भाषा राजस्थानी री सेवा में लाग्योड़ा है ।

राजस्थानी नै आपरी ओपती अर समी ठोड़ लेवण मे शिक्षा विभाग रो योगदान पण इतिहास रै पानां मंडैली ।

नगर-परिषद रै खने,  
बीकानेर

(सूर्य शंकर पारीक)



## विगत

### कहाणियाँ

- बदलाव 17 भीखालाल व्यास  
विदाई 23 नृसिंह राजपुरोहित  
अमूँझता आखर 32 भीठेश निरमोही  
मौत री जड़ता 32 रामनिवास शर्मा  
गुरु परसादी 45 शिवराज छंगाणी  
फंसलो 49 भीठालाल खत्री  
टैक्सी स्टैण्ड 53 पुष्पलता कश्यप  
पारखी 56 महावीर प्रसाद पंवार  
जंसलमेर री हवा 60 गौरीशंकर व्यास  
लघु कथावां 63 उदयवीर शर्मा  
नेह री द्वीपां री खोज 66 उषा किरण जैन

### निबंध

- छंद राव जैतसी री 69 चन्द्रदान चारण  
आपां री गांव री हस्त शिल्प 73 नानूराम संस्कर्ता  
म्है कयू लिखूं 77 सांवर दइया  
धिन है एड़ा बीरां नै 80 विष्णुदत्त सरमा  
घुड़लो घूमेलां जी घूमेला 82 श्रीमांछी श्रीबन्धन श्रीप  
पुरस्कार: तच्चादलो 85 जैठनाथ गोस्वामी  
गम, खावो गम 87 अमीरुद्दौलत खंड रानिदु

## कवितावां

- कौमी एकना 91 केशव आचार्य  
 गणतन्द्र 92 प्र० ना० कौशिक  
 मन रौ बोझ 93 कल्याणसिंह राजावत  
 भाषा अर विम्यान 94 श्यामसुन्दर श्रीपत  
 ५० म्हारी छोटी सो परिवार 95 धनंजय वर्मा  
 काळ रौ कहर 96 गणपत मिह  
 विरखा सूं मुगती भई 98 संतोप पारीक  
 तूटती लकीरा 100 दीपचंद सुधार  
 साचो सपनो 101 केशव पथिक  
 आखा घर में धुआ ही धुआ 102 त्रिलोक गोपल  
 गजलां 103 अरविंद चूहवी  
 अखंडता रौ दिवलो 104 रामनिरंजन शर्मा ठिमाऊं  
 प्रगतिशीलता रँ सारे 105 हनुमानसिंह पूनिया  
 बदळाव 107 भगरचंद्र दवे  
 किसान रौ विसवास 108 भईतुदीन कोरी  
 मन म्हारी जद भर आवै 109 सुरेश उदय  
 जिन्दगाणी 110 मीताराम सोनी  
 बादळी 112 चतुर कोठारी  
 बादळी 114 महेन्द्र यादव  
 जुगबोध 115 शारदा शर्मा  
 हेत 115 हेमलता पारनेरकर  
 चाहे प्राण गमाऊं ए 116 गणपतसिंह मुग्धेश  
 मिनखडा सोच विचार 117 जुगलाल बेदी  
 ओ म्हारी गांव हे 118 ओम पुरोहित 'कागद'  
 आदमखोर 121 वासुदेव चतुर्वेदी  
 आगण पड़्यो बीज बोल्पो 123 विश्वंभर प्रसाद  
 घुळरी भांग समंदर में 124 शिव 'मृदुल'  
 मिनखपणौ मत भूल 125 जयसिंह चौहान  
 -गीत 127 रामनिवास सोनी  
 उधार रा आंसू 128 शशिकर खटका राजस्थानी  
 कियों छै जावै हे 129 जितेन्द्र शंकर बजाड़  
 अस्यो हो म्हारी गांव 130 नन्दकिशोर चतुर्वेदी

- रजपूतण 132 ज्ञानसिंह चौहान  
 सूरज री संदेशो 133 विद्योत्तमा वर्मा  
 पारस्या 134 कमला जैन  
 काळी बादळी 135 सुकान्त 'सुमि'  
 एक हाथ घूँघटा में 136 जगदीश सैन  
 मेरो देश 137 दीनदयाल शर्मा  
 अग्नि परीक्षा 138 दीनदयाल शर्मा  
 चक्कर 138 हरीश व्यास  
 प्रगति 138 हरीश व्यास  
 काळीन्दर नाग 139 इब्राहीम खां सम्मा  
 नित अखवार देख ल्यो 140 सम्पतसिंह 'सरल'  
 जका बखत ने सैसी 141 वासु आचार्य  
 गजल 142 अर्जुन 'अरविंद'



ब्रह्मात्र

## बदलाव

भीखालाल व्यास

जिन गाँव में चौबीस घण्टों में अक इज बस आवती हुबै अर या ई आगै सूँ ई ऊपर-नीचै पूरी भरीज्योड़ी, उण बस में चढणो ई घणै हिम्मत री काम । पछै सीट मिळणी तो भगवान मिळणै री दाई कठण ।

दूजी सवारियाँ री गळाई म्है ई कोई घण्टा भर सूँ बस नै उडीकती हो । जे आज बस नी मिळी तो गयी पाछी कालै सुबै ताई री, मो टेम माथै ठेसण माथै आब'र बँठग्यी हो । राजीना री गळाई आज ई अणूती भीड़ ही अर ज्यूँ ई आगा सूँ बस री होनै सुणोज्यो के मिनख आपो-आप रा पोटका-सामान सँभाळणो शुरू कर दियो अर बुण्डेर री पाळ सूँ मुडताई तो जाँणै साँमी दौडण लागग्या । बस थमै-थमै जितरै तो मिनख बस में घुसणा अर बस माथै चढणा शुरू हुयग्या हा ।

६. म्है ई धक्का-मुक्की करतो बस में घुस्यो अर गैलेरी में ऊभो हुयग्यो । अक हिचकोळै साथै बस स्टार्ट हुयी अर सवारियाँ नै आपस में अफळावती वहीर हुपगो ।

७. खनै बँठोड़ा बीरजी भाइसा नै घोडी दया वापरी अर उणाँ, धोड़ा खिसक'र म्हारै बँठण री जगै बणायी ।

८. 'सिध पधारोला सा...'  
'समदड़ी...'

९. 'समदड़ी...ठीक, गाड़ी तो मिळ जावैला...'

१०. 'दिखी-राम है...महीना में पच्चीस दिन तो मिळा देवै है...'  
'काई टैम हुयी...'

११. 'नव बजिया...'  
'बस खारा माँय सूँ होय'र निकळ रयी ही...धूड़रा गोट खिड़की माँय सूँ बस

मे भरीजण लाया। घर सँ अपट्टेट वण'र निकळघोड़ा छोरों री पण्टो अर वुसट्टो मे धूड़ जमण लागी। उणां रा माथा धूड़ मूँ भरीजण लाग्या अर हाथ में पकड़योड़ा वेग माथे ई धूड़ जमण लागी।'

'बारी बन्द कर दे नी भाया... धूड़ आय रयी है' किण ई बारी खन वैटोड़ा छोराने कह्यो।

बारी खन वैटोड़े छोर आपरा लम्बा-लम्बा बाळ झाडतां तारे देख्यो अर पाछी आपरो धुन मे गिडकी सँ देखती रह्यो।

'आप देखावो सा... उण छोरा रे वुसट्ट रे कॉलर वैडां लगायोड़ी है...'  
वीरजी माइसा कह्यो।

'किसा छोरा रे...'

'वो साँमी वैठो है नी... तीजी सीट माथे...।'

'हाँ देख्यो... भूँ वठोनें देखतां कह्यो।

'काँई फँशन आयी है देखो नी सा... कॉलर में सब मर्या है... लुगायां मगजी लगावे नी ज्यू...।'

'हमे तो छोरों मे अर छोर्यां मे को फरक ई नीं रह्यो...'

'इसा कॉलर लगायां सँ फायदी है सा... खन वैटोड़ा देवी बा बोल्या—'अक तो कपड़ा घणो चाहिजे... दूजो मेल भरीजे तो ई दीपे कोनी...'

'हाँ नै फेर जुआं हवे तो ई कॉलर री मगजी में दबियोड़ी पड़ी रेवै...'  
वीरजी माइसा बात जोड़ी।

'साँची कँवो...। हमे तो फँशन ई इण तरे री बधती जाम रयी है। हमे आप देखावो के इण तरे री धूड़ रा गोठ मे ई छोरा बेटा कपड़ा झाड़ें। अक जोड़ी तो कपड़ा राखें अर फँशन करै अणूती...।'

'वो तो फेर ठीक है... पण पेट में भूखें मरै अर सिगरेटां रा धुआं काड़े। भूख तांगे तो पचाग ग्राम सेवां अर चाय पी नै दिन काड़े। हमे इणां नै पूछी के दोप र. पियां री सेवां नी खाय'र रोटी खापजो तो पेट तो भरीज जावे...।'

'साँची कँवो सा...। सिगरेट रा ई आठ आँना लागण लाग्या। पेट में भूखी मरणो कयूल पण सिगरेट तो पीवणी इज...।'

'अरे सा हमें काँई पूछी... छोरा अर छोरियां... छोरियां पण किसा कम पग छोड़्या है।'

'हाँ सा... काँई तो पर' वेश विगड़ियो है अर काँई खान-पान... अर मरजादा... मरजादा तो विगड़ी तो पछी विगड़ी इज विगड़ी...।' उणां बात में हुंकारो भर्यो।

'अक बात है सा... हमे तो गाँव ई वै गाँव नी रह्या जिको पैली हा। मिनघां री राँम मरयो। म्हारी देखणी-देखणी मे इतरो बदलाव आययो है...।'

‘बदलाव कोई...मिनख-मिनख रो दुश्मण बण-यो है। काले ताई जिका भाई-भाई हा आज अके दूजे ने मारण ने उत-योड़ा है। आप करमाबास खने ब्हियो जिको नो सुवियो?...’

‘हां मुणियो...सा...चालती मोटर में दोय मोट्यार आगे ऊ... हुया अर दोय तारे अर मोटर ने मोड़ाय दी उजड़ मारग माथे। कोई कोस भर माथे जाय’र ऊभी रखाई अर पछे गोलियां सू धड़ा-धड़...धड़ाधड़...’

‘अरे-राम...’

‘मिनखा में कळबळाट माचगी टावर-लुगामां घूरी तरें सू कूके...पण उणां ने दया कठे...जाणे भाटा रा काळजा...अर पलक झपके जितरी जेज में तो लोही-ई-लोही...हमे उणांने पूछी के घारे लोही रा अर इणां रे लोही रा रंग में कोई फरक है?...ने कोई मिळैला इण टावरां...लुगामां अर मिनखां ने मारण सू...’

‘अरे सा...उण दिन पदमाराम रे घर रा टी. वी. देखता हा...अके जणो आय’र दरवाजा खटखटावा लाम्यो। पदमाराम री जोड़ायत उठ’र आडी खो-यो तो—धड़ाधड़...धड़ाधड़...’

‘ठा नीं किण टैम...किण तरें सू...मार नांधे...ठाई नी पडे। मिनख कितरी ओछी बण्यो है। उणां रे वास्तें मिनख ने मारणी माछर ने मारण सू ई हल्को काम।’

‘गांव पधारता हुवीला...’

‘हां खासा दिन हुयग्या हा। हमार दोय-तीन, महीनां मे जावीजियो ई कोनी हो। सोच्यो—काले रविवार है...घरे जाय आवूं...’

‘ना ठीक कर्यो। हमें आप देखो नीं...टैम कितरी खराब आयगी है...दिन आयमियां पछे घर सू वारे नीं निकळ सकां। धवळा दिन रा ई काई भरोसो किण टैम कोई आडो खटखटावे अर देखतां-ई-देखतां धड-धड़ गोळियां चलाने खतम कर देवे।’

‘हां टैम कितरी खराब आयी है। म्हारी देखणी-देवणी में गांव मे किणरे ई आधी रात रा ई काम पड़तो तो झट दौड़’र जावता। पण हमे...हमे तो भलाई पडोसी हाका कर-कर’र मर जावे पण मिनख आडो ई नी खोलें।’

‘गांव-गांव में...घर-घर में खार भरोजग्यो है...माडसा...मिनख जातियां मे...घर्भों मे अर सम्प्रदायो में बेटग्यो...मिनखपणो तो रह्यो ई कोनी।’

‘बातां करतां समदड़ी गांव आयग्यो। म्हें वस सू उतरयो, थेली खाम में घाली अर घर कानी वहीर हुयग्यो।’

‘म्हारा भाबोसा वारे इज वैठा मिळग्या। म्हें घर मे गयो...मगळां ने मिळयो। गांव री सगळी हकीकत पत्तों लगायी।’

म्है जिण दिनां घे आवतो, म्है घाली रोटी जीमण री वेळा इज घर मे आवतो बाकी दिन भर यार-दोस्तो ने मिळतो । वारें फिरतो रेंवतो ।

आज ई रोटी जीम'र वारें निकळण वास्तें त्यार हुयो तो म्हारें मा मा बोल्पा  
— मिघ जावें ?

'अठ्ठे वारें ...'

'पाछो वेगो आ जाडजे...' उणां री बोली मे की भय दिखती ही ।

म्हने अचूम्भो हुयो । पं'ली ती म्है आधी-आधी रात ताई वारें फिरतो पण म्हने कदैई वेगो आवण री नां कहघी हो ने हमे आ काई यात !

'हमा' आय जावूला...' म्है पडूतर दियो ।'

गांव री सगळी घातावरण इज वद-योडो दिश्यो । होळी आडा सात दिन हा पण नी चग री घःमीडो नी तूरां नी फाग'नीं मिनघां मे उछाव'नी कोई हुस । गांव मे मसाण री गळाई चुप्पी छापीडो । म्है वारें निकळ'र वस स्टॅण्ड कांनी जावण ला यो । वस-स्टॅण्ड मार्ये ई कोई मिनघ नी ।'

लारला दिनां की रोळा हुया पछे दिन आधमियां पछे कोई वस आर्व-जावे कोनी । मगळी दिनरां-दिनरां इज चाले ।

म्है पाछो आवण लाःयो । सोच्यो, जगतार रें घरें मिळतो चालूं । आज दिन रा दिख्यो ई कोनी ।

म्है जगतार रें घरें पूगो । दरवाजो बन्द हो । मांय सूं धीरें-धीरें बोलेण री आवाजां आवती ही ।

'म्है आडो छटावटायो—जगतार' जगतार' ।'

'कुण है !...' घणी ताळ पछे आवाज आयी ।'

'म्है हूँ सकाराम...'

'वो तों सुपग्यो है...' मुवें आइजी...'

म्हने अचूम्भो हुयो । जिण जगतार री मा म्हारी नाम सुणतो ई खुद दीडो आवतो, म्हने प्रेम मूं धिठावतो, दूध री मनघार करती...वा हमे आडो ई नी खोले । उणे म्हारें मे अर जगतार मे कदैई फरक नी राखियो । दोल्यू ने बराबर राख्या । म्हारें बीचे कदैई घम आडो नां आयो —भनाई वेशाखी हुवो या राखडी । जगतार री वैन रें व्याव मे म्हारा घर रा सगळा जिणा आपरी घर री कांम संपन्न ने निभाव करघो—कुण विमला अर कुण मुरिन्दर पण ओ वदळाव' आ भाई-भाई रें बीचे खाई...'

म्है मोचण लाग्यो । ओ काई हुयतो जाय रेंयो है म्हारें गांव नें ? कठे गयो वा मगळी अपनायत, वो प्रेम, वो स्नेह वा सहयोग अर भाईचारे री भावना...कुण ममळ नांखी है उण भावना नें... किण कांटा घोसा है म्हारा इण बगीचा मे... कुण है...कुण है आखिर वो जिणने भाई-भाई री प्रेम नी मुहावे, कावर री बीज... ।

म्है घर आयी तो देख्यो म्हारै मा सा म्हनै उड़ीकता हा । आय्यो वा .. ठीक रह्यो . फेर किणनै ई मिळणी हुवै तो मूवै परी जाइज !

म्हनै लायो —म्हारै मा सा रै मन मे ई कोई अज्ञात भय समावनी जाय रयी है ।

म्है खाट मार्य बैठ्यो ।

'खाट चौक में नगाय लेवता नी ..मायनै तो गरमी लागै ..'

'ना कोई विशेष गरमी कोनी ..नै हमार रात डळैला ज्यू-ज्यू ठण्डक हुवती जावैला ..' हारा भावोसा बोल्या ।

आ काई बात है . पैली तो फागण लागता इज चौक मे खाटा डळ जावती ..आधी-आधी रात ताई परमा चालती, मिन्दर रै चौक मे तो मिनख मावती ई कोनी हो ..छोरा ..मोट्यार ..लुगायां .. घमचक मच्योड़ी रैवती ।

'म्है बारै लगा दू ..'

'नी .. नी .. माय इज ठीक है .. नै आडी बन्द कर दे ..' म्है बोनुं उण सूं पैली म्हारै भावोसा बोल्या ।

'आडी बन्द कर दू .. आ काई बात ..औ काई हुवती जाय रयी है .. म्हारै गाँव रै मिनखा मार्य औ किणतरै रो ग्रहण लाग रयी है ..'

म्है आडी बन्द करण वास्तै उठ्यो कोनी तो म्हारै भावोसा खुद उठ'र आडी बन्द कर दियो ..च्याहूँ मेर फिर'र सगळा आगळ-कूटा आछी तरै सूं हाय लगाय'र देख्या . प्रोळ री भखारी मे ई झाँक'र देरयो .. माय कोई छिपियोड़ी तो कोनी .. अर म्हनै कह्यो—रात रा आडी मत खोलजै .. !

'क्यू ..'

'बस .. 'वायहम' मायनै इज है .. कोई बुलावै तोई नी बोलणो ..'

नी कँवता थकाई म्है सगळी बात समझ्यो । लारला दिना जिण तरै सूं गाँवों में हुय रह्यो है .. उण सूं उणां रो भयभीत हुवणो स्वाभाविक इज हो ।

म्हनै रात भर नोद नी आयी .. म्हारै गाँव री मानसिकता किण तरै री हुयगी ..मिनख-मिनख सूं डरण लाग्यो .. भाई-भाई सूं बात करती शक .. पडोसी सूं मिळती डर .. काई औ इज म्हारै गाँव रो रूप है ..

मुवै उठियो जितरै खासी दिन चढ्यो हो । म्है स्नान-पाणी सूं निवृत्त हुय'र जगतार रै घर कानी वहीर हुयो । .. म्है उणनै ओळमो देवणी चावती हो— भला मिनखा सिझघा सूं इज सुय्यो ! नै फेर आडो ई नी खोलणो । अहेड़ी ई काई बात .

म्है उणरै घरै पूगो । रोजीना घड़ले सूं घर में घुस जावती हौ पण आज ठा नी क्यू पग पाछा पड़ण लाग्या । दरवाजै सूं इज आवाज लगाई—जगतार .. जगतार ..

'कुण है?' केवती-केवती जगतार बारै आयो ।

उणै म्हनै देख्यो । आओ कय'र म्हनै वारै कमरे में बिठायो ।

जगतार रै व्यवहार मे की फरक निगै आयो । नीं वो हूस्यो...नीं म्हनै बाप घाल'र मायनै लेय्यो ।

'करै आयो करै जावैला...भारै बठै रा काई हालचाल है...' बस इणी तरै रो बातं वो करती रह्यो ।

थोडी ताळ पछै म्है कह्यो— 'ले जावूँ आइजै...'

'हाँ आवूँला...' अर नीं च्याय-पांणो रो मनवार...नीं बैठण रो कोई आग्रह...नीं विशेष बात ।

जगतार में इज नीं, गाँव रें सगळै वातावरण मे ठा नीं किण तरै रो अळगाव आयग्यो है । दिन-दिन फासलो बढती जाय रैयो है । खुद रा कंपड़ा माथै ई भरोसो रह्यो कोनी...कुण किण टैम धीखी देय देवैला । चालती बस मे लूट लेवैला...मार देवैला...घर में सुतोडों नै भून देवैला...। मिनख-मिनख रें बीचै ब्रण्पोडी खाई दिन-दिन चवडी हुवती जाय रैयो है । गाँव-गाँव अंर घर-घर में मिनखा रें बीचै प्रेम खतम हुय रैयो है । म्है इण बात माथै विचार करती चुपचाप पाछो घरै आयग्यो । म्हारी मेंछा ई नीं रैयो के म्है फेर किणी दोस्त रें घर ताई जावूँ ।

## विदाई

नृसिंह राजपुरोहित

गाँव में फगत अेक बस आवै । बाकी आवण-जावण री कोई साधन नी । दिनुंगे जे बस चूक्या तो पछै मौज करी । गयी पूरा चौबीस घण्टीरी । इण कारण अमुमन लोग पाव-आधी घण्टी बेगा, ई सँभै अर यग ग्टेण्ड माथे जायनै बैठ जावै । पछै कच्चै लूट सूँ आवती बस नै आँख्याँ फाड-फाड़ नै, मेहर रे ज्युँ उडीकता रे वै । दूर सूँ साँकड़ै सेरिये मे जद घूड़ रा गंतूळ उडता निर्ग आवै तद लोग समझ जावै के बस आयगी । सगळा सारवचेत होय नै ऊभ जावै । बस मे चढणी ई कोई मामूली बात कोनी । जाणै ओम्भंपिक री कुप्तो जीतणी है । जितरा मुसाफर बस मे होवै, उणसूँ ई बेसी ऊपर अर, च्याल्मेर लटकता लाधै । इण सगळीं सूँ बाथोड़ी करनै बस में घुसणौ घणे पराक्रम री काम है । अेक पग टेक नै अेक हाथ सूँ हत्यौ पकड़याँ लटकता मुसाफर नै कोलम्बस सूँ कम किर्याँ गिण सकाँ ? आ अेक दिन री नी पण तीसूँ तारीख रोजीना री हालत है ।

इण वारतै प्रोफेसर प्रवीणकुमार आपरी डोकरी मा नै अेक दिन पैलीज चेताय दियो — मा काले बेगो सँभणी है । बस मे गिड़दी घणी आवै । बेखा किया तो बस निकळ जासी । इण वारतै पँखेरुवाँ नै चुगो, सुळसी नै पाणी अर ठाकुर जीरी सेवा-पूजा सगळा काम फुरती सूँ निवेड़ लीजै । जे बस चूक्या तो पाछी दूजै दिन है अर म्हारै छुट्टी फगत अेक दिनरीज बाकी रही है ।

‘सै बखतसर निवेड़ जासी रे वेटा !’ डोकरी अणमणै भाव सूँ कह्यौ अर अेक ऊँडी निसासा नाँख’र खरी मीट सूँ दरबाजै कानी देखण लागी ।

प्रोफेसर प्रवीणकुमार डोकरी मा री मानसिकता नै आछी तरियाँ समझै । घर-गाँव छोड़ नै शहर में जावणौ उणरै वास्तै भाथै रो घाव । पण अथै दूजौ कोई रस्तो ई तो नी । प्रोफेसर लारला बीस बरसाँ सूँ शहर में नोकरी करै । लुगाई



टापर सागँ ई रैवै । कारण टाबर सगळ्हाई स्कूल कॉलेजाँ मे पढै । पण डोकरी जेकली गाँव मे रैवै । उणँ आखी उमर गाँव मे विताय दी इण कारण शहर री जिन्दगी उणनँ रास नी आवै । बेटी बहू घणा इज लारँ पड़ जावै तो च्यार दिन टाबराँ कनँ रैय आवै पण छेवट गाँव आयाँ ई नेहचो होवै । शहर मे फ्लेट री जिन्दगी उणतँ कँद रँ उनमान लखावै । हर बधत दरवाजो बन्द करनँ दड़वै में बँठा रँ वी, आ कियाँ होय सकै ? आखी उमर खुलँ आभँ रँ नीचँ आजादी सूँ विचरण कियोई प्राणी री इण वातावरण में जीव अमूमण लागै । उठै कठँ वा गाँववाळी बात-बनळावण, उठक-बैठक, कथा-वारता, भजन-भाव अर भाई सँग सूँ मेळ-मुलाकात । थोड़ाक दिन होवै के इण कँद खाने में डोकरी री जीव तो जाणँ अमूमण लागै । छेवट बेटी नै कँवणो पड़ै - प्रवीण म्हनँ तो अबँ गाँव पुगाय दे रे दोकरा ! म्हारो अठँ मन नी लागै ।

पण डोकरी रँ पण्ड मे गाढ़ हो जितरँ तो कोई बात नी ही । वा आपरो घाकी मजँ सूँ धिकावती । बेटी आपरँ लुगाई टाबराँ सागँ निश्चित होय नै वारँ रैवती । पण अबँ दिन-दिन टोकरी रा हाला थाकण ला-या तो बेटा नै ई चिन्ता रैवण लागी । दिन आयाँ देवळ डिगँ रँ मुताबिक सदीव निरोग रैवणवाळी डोकरी अबँ सांजी-मादी रैवण लागी अर आँख्याँ री रोशनी ई मन्द पड़वा लागी तो बेटी उणनँ आपरँ सागँ लिजावण री हर करी । डोकरी ई मन मे समझगी के अबँ दूजो कोई उपाव कोनी ।

पण ज्यू-ज्यू घर छोड़ण रा दिन नँडा आदण ला या, डोकरी री मन उदास रैवण लाग्यो । उणनँ मन मे पक्की जँचगी के अँकर' घर छोड़घी पछँ वा इण घर री पेढो पाछो नी चढसी । इण गाँव रा आड़का पाछा नी देखसी । उणर निजराँ सामी गाँवरर कई डोकरी-डोकरीयाँ आपरा बेटा बहूवाँ सागँ देस दिसावर गया तो पाछा गाँव आवण सारू तरसता ई रैमग्या । कई तो उठँ ई प्राण त्याग नै असँधा भूता भेळा भिळग्या । डोकरी नँ मन मे पक्की जँचगी के उणरी पण सावण वा ई हालत होवणो हे ।

मा नै निस्कारा नाँवती देख'र बेटी ई विचार मे पडायी । शहर में मा री मन लागै नी । अर गाँव में अबँ इणनँ अँकली छोड़ीजँ नी । इतराँ दिन तो घँर आ आपरँ पण्डरी छाँटी काढ लेवती इण वास्तँ कोई दँण-दुआळ नी हो । पण अबँ इणनँ अठँ किणरँ भरुसँ छोड़णी ? कार्ल कोई ओछी वती होयगी तो दुनिया माजनँ में घूड पालगी के लो सा अे कमाळ अर भणिया-गुणिया बेटा ! छेहली उमर में आपरी डोकरी मा नै ई कोनी संभाळ सक्या । "फेर दुनिया ई पढी छाई में, खुद री मन ई कियाँ पतोजँ ? सारले महीनँ की दिन इणनँ ताँव-तप आयाँ तो बतावै के आ दो दिन भूगी निरमोज पढी रहो । आडोसी-पाडोसी सगळा इणरँ वास्तँ जीव काडँ पण घर रा धिमघ री होड कियाँ कर सकें ?

डोकरो नै विचार मे पड़ी देख'र उणै कह्यो—मा !

'काई बेटा ?' डोकरी जाणै ऊँडे कुवै सूँ बोली ।

'यूँ इतरी विचार में कियी पडगी !'

'की कोनी यूँ ई रे बेटा ।'

'यूँ सोचती होसी के प्रवीण म्हुने सदीव रे वास्तै गाँव छुड़ाय रहघी है ।'

'ना रे ना । आ बात कोनी ।'

'तो काई बात है मा ?'

'म्है सोचूँ के वखत रे सागँ कितरो बदलाव आय'यो ।'

'कियी अे मा ?'

'कियी काई गाँवड़ा में परम्परा सूँ सगळा कुटुम्ब भेळा रैवता पण अबै इण अर्थतन्त्र रा चवकर मे सगळाई कण-कण रा होय'या । माईत कठैई तो औलाद कठैई । अेक भाई कठैई तो दूजौ कठैई ।

'पै'लो सगळाँ रे खेती रो धन्धो हो मा, इण वास्तै पीढियाँ लग अेकण ठायँ सँ भेळौ रैवता । पण अबै धन्धै वाड़ी अर नौकरियाँ रे कारण अेकण ठायँ भेळौ रैवणी सम्भव कोनी ।'

'आ ई तो म्है कँवूँ रे बेटा के कुटुम्ब रो अपणायत सँ खतम हुयगी । नणद, भोजाई रो मूंडी देखण सारू तरस जावँ अर पोता-पोती, दादा-दादी मूँ असँघा रैय जावँ । कोई अेक दूजै रे सुख-दुख में शरीक नी हुम सकै । कुटुम्ब तो जाणै अंगाई बिखरग्या ।'

... 'अबै इणरो तो काई इलाज होवै मा ? अेकण ठायँ बैठाँ पेट भराई होवै कोनी, इण वास्तै घर मजबूरी में छोडणा ई पड़ै ।'

... 'औपणै गाँव मे तीन सौ घराँ रो वस्ती है । पै'लो सगला ई खेती करता । सारली पीढी वारै जावण लागी । पण परिवार सगळा गाँव में ई रैवता । घर-घर मे गार्या-धेर-याँ रो धपटमो धीणो हो । सगळा परिवार सोरा सुखी हा । ओ तो टावरपण मे थै ई सँ आपरै निजराँ देख्योड़ी है । पछै होळै-होळै लोग कुटुम्ब परिवार सागँ लेयने वारै जावण लाग्या । आज गाँव मे आधाँ घर ताळा लाग्योडा सूना पड्या है, जिणाँ मे कबूतर गटरगूँ करै अर आधाँ में बूढा-ठाडा मिनख वैठा है जिकौ कियी ई करतै उमर रा दिन ओछाँ करै ।'

'बात तो थारी साची है मा ।'

'अर अबै तो सगळा घराँ रो ओ ई हाल है बेटा । जिकौ टावर पढ़ लिखने वो मोटी हुयाँ गाँव छोड़ देवँ । म्हुने तो लागै के गाँव धीरै-धीरै उजड़ जासी अर शहराँ में मानखी कीडियाँ रे ज्यूँ किलबिलावण लाग जासी । जिणाँ मे की बुद्धि, हिम्मत अर कर्णुका है, वे तो गाँव छोड़ नै जाय रह्या है, पछै लारै तो फगत भीगार रैय जासी ।'

... प्रवीणकुमार सोचण लाग्यो के मा सफा अणपढ़ होवती थकाई हरेक बात नै

कितरी गेहराई सँ रोचै-समझै । वास्तव में गाँव आज उजड़ रह्या है अर नकर वस रह्या है । आ जेक विश्वव्यापी समस्या है । इणरें सार्ग मोर्ट दुखरी बात आ के गाँवाँ रो आङ्क अर जम्बो-जमायी ढाँची विखर रह्यो है अर उणरी ठोड़ नुँवें न मुधार रें नाम मार्ये जिकी की आय रह्यो है, वो सँ उधार तिमोड़ो अर अपरोडो मो लखायै । इण हिसाव सँ तो गाँवई संस्कृति रा मूळ तत्व ई खतम हुय जासी । परिवाराँ रो आपसी मेळ-मिळाप अर संप भूतकाळ रो चीज, बण जासी । फगत मियाँ-बीबी अर आपन टावर ई परिवार रो परिभाषा में रैय जासी । इणरी भावी पीढी मार्ये घणो माडी असर पड़सी । या आपरी निजु परम्परा अर संस्कृति सँ सफा अजाण रैय जासी । आपरी जहाँ सँ कट जासी । उणरी आपरी निजु 'आईडेन-टिटी' अंगाँ ई खतम हुय जासी । माईत अठै बसै है तो वेटी न जाणै कठै जाय न डेरा करयो । आज जिकी विश्वव्यापी सांस्कृतिक सवट व्याप्त है, इणरें मूळ में ओ ई कारण है । मा कैवै ज्युँ गाँव अर परिवार दोनुँ बरवाद हुय जासी । ओछी राजनीति अर तथ्याकथित मुधार गाँवहाँ रें परम्परागत ढाँचै न अगाई बिगाड़ नाँवसी तो बिखराव अर व्यक्तिवादी भावना परिवार नाम री चीज नै ई बरवाद कर देसी । आज ई परिस्थिति आ बणगी है के जिकी चीड़ा घणा भावनाशौळ मिनव गाँव में मन सँ रैवणा चावै वारें रैवणी हाथ कोनी अर जिणाँ नै अठै सँ कोई भावनात्मक रागाव कोनी वे अठै मजबूरन वैठा है । वारें वास्तै जाँवी क्यूँ के मोन कोनी आवै वाळी स्थिति है ।

मा वेटी दोनुँ आमी सामी वैठा विचार सागर में गोता लगावै हा । घर में सफा सून बापरचोड़ी ही । छेवट डोकरी मून तोड़ी—प्रवीण म्हारी आँसुवाँ रें इलाज में कितरीक वखत लाग जासी रे वेटा ।

'मा वारें जेक आँव रो मोनियो तो पाकीडो ई है । उणरी तो सुरल आपरेशन हुय जासी ।'

'फिगहाल जेक आँव सँ ई साफ दीखण लाग जावै तो म्हे म्हारें पण्ड री छाटी मोरी काडूँ । एतरो होय जावै तो ई घणो ।'

'राम कृपा सँ सै ठीक हुय जागी मा, सँ चिन्ता ई मत कर ।'

'ना रे वेटा चिन्ता किण बात री । चिन्ता म्हारी साँवरिमो मोर सुगट वंशी घाळी करमी । थै आपणै मकान में रैवण वास्तै विमला मास्टरानी सँ बात तो सावळ कर लो नेटा ?'

'हाँ मा, म्हे कय दिया हँ के म्हानै मकान किराये री जरूरत कोनी । सँ विना किराये मजै सँ रहीजै पण मकान नै अवेर नै सफाई सँ राखजै ।'

'सँ अकेर म्हनै उण सँ मिळाय दे । म्हे उणनै की जरुरी बाताँ रो भ्रामण पान हँ ।'

'बा तो गूद ई कैवै ही के म्हनै मानी सँ मिळणी है । गिहया ताई वा जरूर

आय जासौ ।'

'श्रीधी सैणी छोरी हे वापड़ी । च्यार साल सूं गांव मे रँवै पण कोई रँ आँध में घाली ई कोनी खटकी । इसी सुशील अर भणी-गुणी छोरी नै सुण्यो के उणरँ धणी छोड़ दीयो है ।'

'आजकाल इसा किस्सा घणा ई होवै मा । भोकळी नौभरी-नेसा महिलावाँ का तो विधवावाँ लाधसी अर का छोडघोड़ी ।'

'जमानै रँ काँई लाय लागगी रे बेटा । धणी लुगाई रँ ई आपसरी मे कोनी घणँ, आ ई कोई बात है ? आ तो वापड़ी 'हेर च्यार आखर सीउगीडी हे तो मास्टराणी बाणगी, नी तो गरीब धाय रँ गळै पड़ती ।'

'इण वास्तै इज तो आज छोराँ ज्यूँ छोरियाँ नै ई पढावणी जहरी हुयगी मा । भावै संजोगे जे कोई रा करम फोरा होवै अर कोई कुपात्र सूं पत्नी भेट जावै तो भणी-गुणी हुयाँ लुगाई आपरँ पगाँ माथै ऊभी तो हुय सकै ।'

'बात थारी सही है बेटा ।'

इतराक में बारँ सूं किणँ ई हेनो कियो अर मा बेटा री वन्तळ बीच मे ई सकगी ।

'कुण होसी रे ?' डोकरी कहचौ ।

'आ तो म्है विमला हूं माजी ।'

'आव बेटो आव । उमर तो थारी लांबी । अवार म्है थारीज बात करै हा ।'

'उमर लांबी होसी तो खुरड़ा बेसी खोतरणा पड़सी माजी । आपरँ कनँ 'सिद्ध्या रा आवण री विचार हो पण अवार फुरसत मे ही सो आयगी । आप 'तो काल पघार जासौ ?'

'हाँ काल जावणो ई है । काँई कलँ वाई म्हारो जीव तो इण कुटिया मे ई भमसी पण आँख्याँ री आपरेशन करावणो है अर यूँ ई म्हारी अबै आसंग कोनी सो जावणो ई पड़सी ।'

'आप निश्चित होय नै पघारो । घर बावत आप कोई प्रकार री चिन्ता मत कराई जा ।'

'यनँ घर सूपनै जावूँ पछै चिन्ता किण बात री बेटो ? लोग किरायँ लेवण नै ई त्यार है, पण म्हनै पैसाँ री लोभ कोनी । म्हँ तो कहचौ रे भाई, म्हारो मकान आड़-बुहार नै साफ राखसी अर अवेरसी उणनँ बिना किरायँ ई देय देसूँ । म्हनै किरायँ री जरूरत कोनी ।'

'माजी म्हँ आपरँ मकान नै काच रँ उनमान साफ सुयरो राखसूँ आप नेहचौ राखजी ।'

'म्हनँ थारो विश्वास है बेटो पण यूँ दो-तीन बातों री पूरो ध्यान राखजै ।'

'आप सगळी बातों म्हनै खुलासै वार समजाय दो माजी । म्हँ वारो पूरो ध्यान

राघवसूँ ।'

'तो गुण, पैली बात तो आ हे वेटी के बे देय सामने आळें मे ठाकुरजी महाराज विराज्या है। इण घर मे ठाकुरजी की पूजा पीढ़ियाँ सूँ होवती आई है। इण वास्तू थूँ धूप दीवी नित रोज करती रहीजें। म्हारे ठाकुरजी ने अणपूज्या मत राखजें ।'

'थारें ठाकुरजी ने अणपूज्या नी रागू माजी ।' विमला हँसती थकी बोली।

'दूजी बात : हीं तारलें मकान मे बरसांगूँ नित रोज पनेखाँ ने चुगो नांधूँ। इण वास्तू लीप गुंप ने जमीन त्यार कियोनी है। दिन उगताई मोरिया, बेलडियाँ, सूँवटा, कावरी, चिडियाँ अर टिलोडियाँ इत्याद भात भात रा पनेखाँ रो अठे मेळी मचें। जे प्राणी बरसाँ सूँ अठे हेवा हुयोड़ा है। जेक मोरियो तो अठे आपन नाचण लागे तो नाचती ई जावें। दूजा पनेच चुगता रेंवें अर ओ माटी पाँयाँ, रो छतर वणाय ने घटाँ लग नाचती ई रेंवें। उणरो मन घापें तद पाँघड़ा समेटेर च्यार दाणा चुगले अर उड जावें। वेटी-बहू अर कुटुब परिवार तो सदीव, अळगो रेंवें। म्हारे तो बरसाँ सूँ ओ इज कुटुब परिवार है वेटी। जे इणाँ ने दाणा नी मिळघो तो जे पछीडा निराश होय जातो। इणारी हाय म्हने लागसी। इण वास्तू, थू चुगो नियमित नापती रही जें। अनाज रो प्रबध म्हे करनै जावूँ अर जरूरत मुजब करती रहसूँ। थूँ म्हने कागद नाँप दीजें।

औरें हीं अक जरूरी बात तो भूल ई गी। वो माटी रो कुँडियो पड़घी। इणमे थोडी पाणी घालवो करजें। उहाळें रो मौसम है सो पनेखू पाणी पीय ने धने ई आसीस देमी। जेक सूँवटी पग सूँ खोडो है। वो वापड़ी आघी दिन इण कुँडिये कने ई वैठो रेंवें ।'

प्रोफेसर प्रवीणकुमार कने ई वैठो मा रो बातें ध्यान सूँ सुणें हो। मा रें कुटुब परिवार की बात सुणेर उणरो हिवड़ी भरीज-यो। वो की कँवणी चावती पण कठा-बरोध होय जावण सू की बोल नी सकघी।

डोकरी थोडी ताळ ठैर ने फेरू कँवण लागी।

'देख वेटी आगणें ओ तुळसी रो थाली है। ओ ठेट म्हारे दादी साधू रें हाथ रो है। दादीजी रें पेट मे कोई कन्या नी ही। उणा आगणें तुळसाँजी रो थापना करनै इणारी धूमधाम सागें ब्याव रचायो हो। गाँव रें ठाकुरदारे सूँ ठाकुरजी महाराज ठाटवाट सूँ जान लेयने तुलसाँजी सूँ, हयळेवो जोड़णने पधारया हा। तोरण सूँ लगाय नै चवरी तकात ब्याव रा सगळा नेगचार हुया हा। आखें गाँव नै जीमण रो न्यूती दिरीज्यो हो। बरसाँ लग वस्ती अर चोबळें मे, इण ब्यावरी चरचा रही हो। कई पुराणा लोग आज ई उणरो बातें करे। इण भाँत ओ जेक साधारण पीवो नी है। इणरें सागें इण घर रो इतिहास पीढ़ियाँ सूँ जुड़घोडो है। धने इणारी विस्तार सूँ हाल बतावण रो कारण ओ ई के थू इणरे महत्त्व नै समझेर, इणरी सेवा चाकरी मे

फरक नी आवण देवं । इणने पाणी नितरोज देयबो करजै । मंजरी मूखे ज्यूं उतारबो करजै । कोई डाळी सूख जावै तो अवेर नै भेळी कर लीजै । वा देख गळियारें में सूखी डाळियां री भारी बंधचौड़ी पड़ी, प्रवीण नै म्है कहचौड़ी है सो काठ रें रूप में आ म्हारे आरोगी मे काम आभी । काती महीनै तुळसांजी रें दीवी भरीजै । वो धासूं वण आवै तो करजै नी तो पाणी री तो कमी मत आवण दीजै । जे तुळसी धाळी सूखग्यी तो म्हें ई मूख जासूं अर मरियां ई मुकोतर नी जासूं ।'

डोकरी री भळीवण द्रौपदी रा घोर री गळाई वधघाई जावैही, पण विमला नै पाछी घरौ जावण रो उतावळ ही । वातां-वातां मे गिजघारी अंधारी घिरण लाग्यो अर दीवा वती री वेळा ह्यगी । विमला डोकरी नै धावस देवती रवानै हुर्द तो प्रवीण ई आपरी ठोड सूं उठयो अर दीवा वनी करण लाग्यो ।

गांव आवतो तद व्याळू करनै हथाई माथें जावण री ठेट सूं आदत रही । गांव रा बूहा बडेरां सागै बैठ'र गपशप करण री' उणने अणुंती शोक हो । कई बार तो वो व्याळू कियां पै'लीज उठे पूग जावतो अर लारे डोकरी बैठी वाट जोयबो करतो । घासी रात वीतां घरें आयां वा उणने मीठो ओळमो देवती —व्यालू तो वधतसर कर लिया कर वेटी रा वाप ! आ थारी कोई आदत है ? वातां रा व्याळू सूं तो पेट भरीजै कोनी । प्रवीण लचकाणो पडने कंवतो —मा आज तो वातां वातां में अवेळो होयल्यो; की ठा ई कोनी पडयो । डोकरी कंवती व्याळू कियां पछे हथाई माथें जायबो कर वेटा । पछे मोडो-वेगी आवै तो ई कोई चिंता नी ।

पण आज प्रवीण व्याळू करनै हथाई माथें गयो हो । काले उणने आपरी मा रें सामे शहर जावणो हो । पछे न जाणै पाछो गांव कद आईजै । गांव रा कई पुगता मिनख अदरोग वा, मूळी वा अर मुकनो वा सफा पडक माथें आयोडा बैठा हा । कांई ठा अवकाळ गांव आयां इणारी मेळी होवै के नी । इण वास्तै किरत्यां हळी जितरें प्रवीण हथाई माथें जम्मी रह्यो अर सगळां सूं गप-शप करतो रह्यो ।

११) डोकरी अकली आंगणें छटोलडी माथें सूती पसवाडा फेरें ही । यूं ई उणने ऊंच कम आवै सो आज तो आवतो ई कियां ? दिनुंगे तो घर-गांव छोडने शहर जावणो हो । न जाणै पाछो कद आईजसी ? अर आईजसी के नी आईजसी इणरी ई कांई पतो ? डोकरी रें आंथ्यां आगल उणरो विगत जीवण मिनेमा री रील री गळाई घूमण लाग्यो । आज सूं चौसठ वरसा पै'लो वा नुंवो बीनणी वणने इण घर मे आई तद फगत सोळें वरस री ही । कितरी वखत वीतग्यो ! पण जाणै काल री बात ! नर जाणें दिन जांत है अर दिन जाणें नर जांत ! उण बखत घर मे कितरा मारा मिनख हा । प्रवीण रें दादा दादी सूं लगाय नै हाळी-वाळदी ताई घर में मिनख मावता आय कोनी । पण अक अक करनै सगळा जावता रह्या अर म्है पापणी बैठी रेंग्यो । प्रवीण चंबदे घेरस री हो तद इणरें पापाजी ई जावता रह्या । तोई ओ दुखियारी शरीर नी छूटो । गांव में ई कितरा डोकरी मिनख हा । सगळा देखतां

देवता निजरां आगं मूं चानता रह्या । चोगठ वरसां रो गाळो ई काई कम ती होवै । बीम वरमा मे तो नुंवी पीरी धरतो माथे आय जावै । गांव रा झाडका ई डोकरा होय या । प्रवीण र पापाजी ने झाडथीट मगावण री अणुंती शोक हो । प्रांळ आगनी पीपळी उणी आप र हाथ मूं र्ठ रोपो । उणी'ज वरम प्रवीण री जनम हुयी । आज वा पीपळी घेर घुमेर हांयगी है । उन्हाळी री लाय मे मगळ मोहल्ले रा होर डांगर इणगी ठडी छिया मे बैठा आध्यां मांच'र कानडा देरियां वागोळ रा टोर उडावै । प्रवीण कैयथी करे के पीपळी म्हारी मरीच्यी साईणी बंन है । न्युं बात ई माच्यी । म्है इणने पंटरा जाई र्ठ ज्यु पाळ पोमने बढी करी । 'पण देवट तो ओ ससार असार है । जेक दिन तो सं छोडने जावणी पडमी । मगळी अठई घरपो र्ठे जागी । भलाई अठै र्ठे के वेटा कने शहर मे र्ठे । काई फरक पढे ? फेर औपणो तां जीवण रूपी मूरज आयमण ने आयी । अवे तो सकडाई मसाने पूगा । इण वास्तै रामजी राखे ज्युं र्ठेवणी है अर राखे जटै र्ठेवणी है । आ बात जरूर है के मिनख जटै उमर काढ दे, उण र्ठे हवा होय जावै । आक री आक मे राजी अर नीम री नीम मे । माटीरी मोहर्दे जवरी होवै । वो सहजता सू छूटै कोनी ।

इतगक मे चारण री बिडकी बाजी अर डोकरी री विचार तंद्रा तुटी । वा बोली—'आयन्यी वेटा ! आज तो मांकळी अवेळी कर दिया रे !'

'हां मा किरत्यां ई दळगी । हथाई माथे गांव रा काई पुगता मिनख बैठा हा सो वानां वानां मे वपत बीतग्यी ।'

'कुण-कुण बैठा हा रे ?'

'राठीडां र्ठे अदरीग वा, घांचियां र्ठे मूळो वा अर डोलियां र्ठे मुकनी वा इत्याद निराई जणा हा ।'

मुण'र डोकरी हंसवा लागी ।

'हंसी क्युं आई मा ?' प्रवीणकुमार पूछथी ।

'म्है सामरे आई तद अे मगळा नागा फिरता अर आज अे मगळा गांव रा पुगता मिनख वणग्या ।'

'पण उण बात ने आज कितरा वरस हुयग्या मा ? जुग बीतग्या ।'

'पण म्हने तो जाणे काल री बात लागे खैर' अवे सूय जावो वेटा, दिनुंगे बेगी उठणी है । बस तुरन्त आय जावै उण पै'ली मगळी काम निवेडने त्यार होय जावणी है ।'

'म्है तो त्यार होय जासूं मा, पण धारे तांता घणा है, मूं फुरती राखजे ।'

डोकरी श्रीराम-श्रीराम ! कैवतां पसवाडो फेरियो अर प्रवीण थोडीक देर मे घोर खांचण लाग्यो ।

रात रा घणी ताळ जागती र्ठेवण सू डोकरी ने आधी दळियां मेहरी ऊंच आयगी । पण प्रवीणकुमार घड़ी रात थकां जाग्यो । घट्टियां मेढगी ही । गांव मे

चक्की आयाँ नै मोकळा बरस होयत्या पण हाल कई घराँ में घट्टियाँ छुटी नी ही ।

'मा !' प्रवीणकुमार हाकी कियो 'पी फाटण वाळी है ।'

'हां उठूं वेटा ! अर डोकरी श्रीराम ! श्रीराम ! कंवता विस्तर छोड़चो । सगळी जरूरी काम निवेड़नै पोटळा-पोटळी बांधचा जितरै सूरज किरणाँ काढ दी ही । बस नै हाल थोडी देर ही, पण बखतसर स्टॅण्ड माथे पूगणी जरूरी हो ।'

देखताँ-देखताँ मोहराँ री लुगायाँ अर टावर टीगर डोकरी मा नै सीख देवण ताई भेला होयत्या । आंगणी धवांधव भरीज-यो । डोकरी सगळीं सूँ घर्ण हेत प्रेम सूँ मिळी । सगळीं अेक ई रट लगाय राखी ही—माजी पाछो वेगा आईजी । प्रोफेसर प्रवीण देव्याँ के मा री मांठ्याँ जळजळी अर कण्ठ गळगळी होय-यो हो । गळै मे इजी आय जावण सूँ मूँडे सूँ बोल नीं फूटै ही । पं'लड़ी वार सासरै जावणवाळी कन्या जिशी हालत डोकरी री होयरी ही ।

लुगायाँ पोटका-पोटकी उठायो तो टावर-टीगराँ हूजी समान । डोकरी घर री पेढी लांपी के कोशिश करतै मांडाणी रोक्योई आसुवाँ री प्रवाह ढावा तोड़नै बवण लाग्यो । नी चावताँ थकाई कण्ठ सूँ रोज फूट-यो अर डोकरी कवळा रै माथो टेकनै रोवण लागी तो हचके भरीजरी । प्रवीण डोकरी री हाथ पकडताँ कह्यो—'ओ काई अे मा ?'

पाडोम री लुगायाँ ई रोवण लाग्यो । अंक अजब नजारी ऊभो होययो । प्रवीण नै इणरी अंगाई उम्मीद नी ही । वो अेकर तो हाक वाक होययो पण पछै हिम्मत करनै डोकरी नै जोठ बोली रापी ।

घर री ताळी लगाय नै सगळा रवानै हुया ई हा के विमला मास्टराणी आयगी । डोकरी आसूं पूंछ'र उणरा हाथ पकडती गळगळै कण्ठ सूँ बोली—'थूं आयगी वेटी, म्है धारी'ज वाट जोबै ही । काल थनै अेक यात कंवणी भूलगी—डाळिये वाळी ओरड़ी में काबरकी मिनी ब्यायोडी है । हाल उणरै बछियाँ री मांठ्याँ खुली को नी । दमेक दिन मिन्नीनै म्हारी तरफ सूँ पाव-भाव दूध पायबो करजै । आ तीजी वार इण ठायै ब्याई है, बापड़ी हेवा हुयोड़ी है ।'

'मा बस आयण री टैम हुययो है ।' प्रोफेसर प्रवीणकुमार उतावळ देवतो बोल्तो ।

'हां चाली वेटा !' अर डोकरी घूजते हायाँ घररी कूची विमला रै हायाँ मे सूप दी । डोकरी जावताँ-जावताँ अेकर मुड'र पीपळी कानी देख्यो । पवन वेग सूँ हिलती पीपळी जाणै हाथ हिलाय हिलायनै डोकरी नै विदाई देवै ही ।



## अमूँझता आखर

मीठश निरमोही

ठण्डा लेरकाँ रँ सागँ डील री लोई जमणनँ लाग्यो हो अर पण गरी नीद में गेळीजगा हा । वम गाँव रँ गोरवँ आय पूगी ही । रेहदाँ रँ घसकाँ सूँ म्हारी कमर अदरीजगी ही । केई पेसँजर आळस मरोडण लाया हा अर की डेराँ लेवँ हा तो केई वत्तळ मे लायोडा हा । पण म्हे आपो आप में अळसघोडो हो ।

अचाणचक घसकी सो लाँयो । बस मुडिया मडक सूँ सेरियँ में उतरगी । डले-बर गाड़ी रा गेर वदळघा हा । की कीरँर...कीरँरऽऽ हुई । की जेज हुयाँ वम गाँव रँ नेई जाय दवगी ।

कण्डक्टर दूजा रँ सागँ म्हनँ पण सावचेत करती बोल्यो—‘आपरी टेसण आयग्यो है बाबू साइव !’

म्हँ कैयोड—तरुँ हूँ भाई । जितरेक लारली सीट सूँ की गणमणाट मुणीग्यो, ‘अरे ओ तो फलाणीय री छोरी है...

‘कालँ-पिरसूँ तो नागी फिरती ही ।’

‘सेहर में जाय’र भेज वदळघाँ सूँ बाबू साइव थोडो ई बणीजँ ।’

‘घमेडो री बणग्यो है बाबू साइव, देस री गधी नँ पूरव री बाल ।’

‘बाप नी मारी मीडकी अर वेटी तीरन्दाज ।’

‘इण कण्डक्टरियँ मे ई अंकँ ई अकल कोयनी सो हर कोई नँ बाबू साइव केयदै ।’

आँ दोग्युँ री अकल मायँ कण्डक्टर की बोल्याँ विनाई मुळक’र रँयग्यो अर उणरा आखर अमूँझ’र रँयग्या । नित-हमेस री भारग । बैर बसायाँ सूँ फायदो नी । वो जाँण ही—अेकर अेक कण्डक्टर आँ साम्ही आपरी आडी-डोडी बाँसरी बजायी ही अर अँ लफग उणरा हाइ छोळा कर न्हाकिया हा । घणाँ दिनाँ ताई बापडँ नँ मँदा लकड़ी री लेप करणी पड़ियो ही ।

...म्है इ अटेची लियां उतरग्यो । दूजो की समान-सुमुन कण्डक्टर झिलाय दियो । ...बस हकगी । समान-सुमुन शेल'र म्है कण्डक्टर ने धिनवाद दियो । उणरी निजरां घणी जेज ताई म्हनै बीषती रैयी ।

म्हारें सागें वे दोन्यु अर तीन-चारिक दूजाई लोग उतर-या हा । सगळाई मांय ई मांय अमूझघोडा । म्हा सूं वात को करीनी, पण दीठ सूं दीठ मिळायानी जाणें नी-नी जकी हाल-चाल पूछ-या हा । लाजै ही सगळाई दोन्युं सूं घबरायोडा हा । वे दो-यू हा—अक सिरैपंचा रो भाणजो अर दूजोडो भतीजो ।

बस सूं उतरती वेठा आं दोन्यु री मनस्या म्हां सूं लडण-उलझण री रैयी । की आडी-डोडी वातां ई कर-या हा । पण म्है ऊंडी विचार रीस नै भरमाय बिना माथो लगायीं आपरें गेले पडग्यो । ...धरां पूगगी । आंधी आयगी ही । मूंडें माथे पसरि-योडें परसेवें में बादळ री रंज रळमिळगी अर की चिप-चिपी हुयगी ही । की जेज ताई गुवाडी मे ऊभे नीमडें रा छंवरा सांय-सांय करता रैया हा । आंधी निकळी तो विजळघां पळपळाटा मारण लागगी । इंंदर ई गाज्यो । की जेज ताई घुप्प अंधारो वापरग्यो हो ।

म्है किवाडी खोल आंगणें ताईं पूगी अर देख्यो—साम्ही पडवें रें पसवाडे ढाळियें में टूट्योडो मचली माथे आडी हुयोडी मां घांसी में झिलचोडी ही अर छाती में उणरो दम नी मावें ही ।

मां 55 'म्हारें इण हरफां रें सागें ई मांरी पसळियां फाडती घांसी जाणें कोसां अळगी हुयगी । म्हनै लाग्यो मां खातर हरख री छेह अरपारनी रेह्यो हो । जाणें मां री आंख्यां साम्ही अकण सागें बीसूं सूरज भळकण लाग-या हा । कीं हरफ उघाडियां मां मूंडें नै हवेळियां में झाल'र कित्ताई ह्वाला देय दिया ।

ह्वाला देवती मां केवती गी—“मां बिना थानें आसीग जावें रे ! थारें भाव तो म्है मरग्या वेटा । म्है तो सात-सात नै जणनै ई बांडडी रैयी । कावड में बँटापर जात्रा जरावण आळी सरवणिये री वातां तो इण कळजुग में क्हांणी वणियोडी हे । इसी बोदो टेम आयो है'क थारा भइजो नी हुवैनी तो पांणी री लोटी ई भरनै देवणियो कोई नी । वडोडी तो घणो अठई मरे हे नी, पण छींयां ई को भेटैनी । नित-हमेम ग्वाडो में ऊभा-ऊभा रोवां-झुरी विलखां किणनै कंवां अर कंवां तो सुणें ई कुण ? गांव आळां री ई मिनखपणी छुटग्यो ।

मां ओळमां देवती ईज गी—‘घणां दोरा पेंटर आंटां देय-देय पाळघा-पोस्या अर भणायो-मढायो रें थानें 'अर अबे थारें घाघरियो गनो नेडो हुयग्यो ।

‘नी मां नी, आ बात, कोनी है । पेट तो भरणी ई पडूं । जै अठई सगळा भेळ्या दूजाघां तो पछें 'पण, अे सबद कंवतां-कंवतां नी जाणें कियां म्है रोवणकी हुयग्यो । म्हनै लाग्यो मांरी पोड वाजव है ।

मांबोली—“ नी वेटा दोस थां टावरां री नी टेम री है, फकत टेमरो । टेम

नै नगस्कार ई । म किणी नै ई को छोड़ नी । राजा हरीचन्द्र नैई आ टंग को छोड़्या नी । किता फोडा भुगत-ग हा व ! हां वेटा, धारा टावर-टूवर तो सार्क तुमी है ?”

“मजै में है । इगियो की मांदी रैयो हो । थारी बीनणी थारं पगं लागणा रैग है ।”

मां नै धांमी पाछी उपडगी । “हैं मारं में हाथ फेरण ना-यो । लागी मां नै ताव आय-यो ही ।

मां बोली—‘इनियो’ अरु तो हावळ है वेटा ! अर बो-न्यां रै पछं मां ना मीक्यो हो ।

“म्हनै तो ताव आय-यो वेटा ! दिन भरतो आडग रेह्यो अर अब ओ हरामों ताव शेल ली । न्हनै ठाड लाग रैयी है वेटा । की राली-पुली ओडाय दे ।”

में उणनं अक राली ओडाय दी अर जेव सूं गोळी काडर पाणी रै सारुं देय दी । “ओ ताव-तूव किता क दिनां सूं है मां ?”

“पूरी पखवाडो हुयग्यो है वेटा । .. डोकरा आगं लारं फिर-धिरं । अं नी हुवं गो तो मोली मूंघा हुय जावं । अर अब आंरी ई सरघा कठै है । .. लारला करिया-करिया भुगतां हां वेटा । किणी रै हिर्यं मे दया-माया कोय नी । ...” गोळी आपरो असर जतायी ।

‘जीसा मिज गया हे ?’

‘काग गिजना निकळचीडा है वेटा । पीसणी पीसावाने ‘हेकाव’ गयोडा है । दोपारां ताई आवण रो कैयगा हा । हाल पाछा को आया नी । रात बस्तोजी रं वठं रकण रो केवता हा । .. छांटा हुय-या है । मारग मे भोज-भाजगा तो वा है ।’

‘क्यूं अठै चक्की पाछी बन्द हुयगी काई ?’

‘चक्की तो चालै है पण ...’

‘पण . ?’

‘काई घनाऊं देटा, धां लोगों रा ई पाधरियोडा कांटां है ।’

‘सार्ग सिरं पचरी .. मूंज बळी पण हाल बट को गयो नी । हाल बी रं भोज मे तू भरियोडी है । अर धे कागद देवां क राजीपी करलां । आं हरामियां सूं राजी पो !’

‘होळी वील वेटा । ताव मे आवणी घोषी घात नी । आपां रै की ई नी करणो । पैलां कियोडा तो हाल भुगतां हां है । धे तो थारं सुगाई-टावरं नै लेयंर सेहरां में भिळ-या । गांव मे म्हानै ई रेवणी है । विखो तो म्है ई भुगतां हां । धे तो राई रो परबत बणायगा । अर गहा लोगों रो जीवणी हराम हुयग्यो । म्है राम परवारं मूण्डो नुकावता जीवां हां वेटा ! कुण करं गार-संभाळ । कोई रै हिर्यं में थोड़ी-पणी ई दया परम कोनी । रोयां-कियां ई ई रावसां ने दया को आवं नी । ...’ घर रं घूघ नै

कूण पतळी कँव वेटा ! पण इन मोटोडे नै नी तो हरम रेहयी अर नी ई लाज । नागांरी नव पोती है । आखी ई पाखी ई पीगी है । अरयूं किणरी चोजी रँयी है सो अँ लाज — हरम करै । '...अर धारै जी नै तो पूरा छव महीणां हुयग्या है गाँव री हधाई पग धारियां नै । काँई हाल हुय रँया है आँरा 'अँ माँय ई माँय होमीज'र रँय जावै । '... आज आँराकाँई अँ दिन है' क कोस-दोय'तीनेक जाय'र पीसणी पीसावै ?... सिरै पंचांरी सिकायत पछै भुकदमँवाजी । नात-जात मे पूरा बदनाम हुयोडा हाँ वेटा । जावाँ जठी नै ई अँई सागीडा तीर चुमता बोल — प.लाणँ जी नै गाँव वारँ कर दिया । वारा हुक्का पाणी बन्द है । कोई गेहराई में को जावणी चावै नी । मूँडे आयी नी नी जाँणी सतरँ बातँ । काठा काया हुय'र कठैई आँवणी-जाँवणी ई छोड दिया । अरे वेटा, इतोई नी, चौपँ सूँ गायँ नै वारँ फाड दीग के फाटकाँ मे नीलाम हुयगी । अर पीवण नै पीचकँ री पाणी नी, जिण पीचकँ खातिर कदैई जोडा अर कड़ला अडाणँ मेल'र उगायाँ भरी ही ।'

'पाँणी भरण नै तो आपाँ री कूवाँ है माँ !'

गळगळी हुयोडी माँ बोली — 'है तो म्है दोयी धेळा हुय'र देमदाँ धेंग ? थारो बाप कुणमीचँ पाँणी, किणरी मरधा है । गितर-विचतर नैडा थारा बाप अर सितर-पिचतर हाथ नैडी ऊँडी आ धेड़ । सीच सकँ थारा बाप ? थूँ ई जाँणँ है वेटा, बुडे बळदाँ सूँ खेत नी खड़ी जँ ।

'मोटोडा भाई तो '... ।'

'भर कयूँ को मकँनीं । पण नाजोगँ सूँ ओई हुवँ कठै । '... पोरको साल उण दिन जद उण माथँ खाँघो पड़ियो ही दब मरजावती तो रँय'र रँय जावती ।'

'अवँ सीज गया है वे ?'

'... थारो भाभी नै लावण गयोडी है । राण्ड रँ आगँ लारै—फिरती-घिरती रँवँ । दुःखी कर न्हाकिया है । कठैई गिया घर री पालँ पड़ी है । पण उणरो ई काँई दोम, जद बेटोई नाजोगी निवड़ जावँ । कठैई ई पेट आयी मरभ्यो हुवती तो निहाल हुय जावती । '... माँ ओ कँवती कँवती गलगली हुयगी ही ।

म्है अकास कानी देख्यो । बादळघाँ विघरगी ही । अर माँ कानी जोयो तो लखायो माँ रँ मन में अँकण माथँ केई बादळघाँ उमड़ण लागगी ही । '...माँ आपरँ ओरणँ रँ पत्तेँ सूँ आँव्याँ मसळर रँयगी ।

किवाडी री चूँ चरड़ वाजी । दोठ किवाडी ताँई जा पूगी । जी आय.या हा । गेढी री सहारो लियाँ वे किवाडी खोली ही । माथँ पर दस पनरे किलारी आटरी गाँठी । वारा आगँ पड़ता पावंडा पाछा पड़ता जा रँया हा । तोई वँ अंगणाई ताँई आ पूग्या हा ।

म्है नाम्ही पूग'र गाँठडी लेवण लाग्यो । वे म्हारँ माया पर हाथ फेर'र लाड-करता बोल्या—'नी वेटा नी । थारा बाळ विघर जायी । '...कद आयो वेटा !'

'म्हें जी केरातों'क आयोइज हूं यां रै ना-ना करताईं गाडी उठावती ।  
वै बोल्या -- 'टावर-टुवर ती मजें में है ?'

'सै ठीक है ।'

'अर धारी मां ?'

'अवै हाकळ है । आयो जणा ताव मे ही । गोळी दिमां अबै ताव उत्तरयो है ।'

'धानै वलती रैवै वेटा । अवै इण री सिरधा फोनी । म्हारें हापां मे जावै परे  
तो चोखी बात है । नीतर वेटा हाल भूंडा वृचैला ।'

'नो जी, इसी बात कियों मोचो हो थै ?'

'इण कळजग मे जेडीईं बातों सोचीजें वेटा ।' इती केयां, म्हारी मां ने पूछ  
बैठा -- 'काईं मांचा मांय ई पड़घा रैवों'क पाणी ऊनी करोला ?'

'कहें हूं सा । अर आं सबदां रै सागें ही मां मचली सू उतर'र दाळियें' मे चूल्ही  
जगावण लागगी । म्है भगोली भर'र ले आयो । चूल्ही जगघां की जेज में ई पाणी  
घणखणायगी ।

भगोली नोचै उतार ठण्डो पाणी भेळ जीसा सिलाडो मापें बैठ आपरा पण  
रांखोळ तिया ।

बोल्या -- 'धाकेनो उतर जायो वेटा ।'

म्है केयो -- 'हां मा ।'

सिजना हुयगी ही । अंधारी पसरती जाय रैयो ही । मदिरां मेंआलरा, टकोरा  
अर नंगडा वाजण ला या हा । कठेंईं सख ई पूरीजें हा । डोर डांगरां री जे-वै-जे-वै  
ल-योडो ही । देखताईं देखता दो-ध्यार रेवड ई निसर-या हा ।

जीसा माळा फेरण बैठग्या हा अर म्हें आगड साम्ही बैठाग्यो ही । चूल्हे मे  
बळीतो घणठ-घणठ बळ रैयो ही । मां दोय-तीनेक सोगरा उतार दिया हा । मां ने  
सोगरा घडनां-पडतां देख घणी लुगायां धूयका न्हाका करतीं ही । पण म्हें  
देख रैयो ही आ मां रै हापां घडिया सोगडा आडा-वांका हा । केईं बार सोगरां री  
कोरां केलडीं सू वारें ई रैयगी । सोगरें ने थाल देती वखत खुरचणी केलडीं रै इसारें  
पर हाजें हो । बापियें सू सोगरां सोकती वपत केईं वार धेपडियां थाल दिरीजगी  
अर सोगरां लाग-लाग'र आपरी वायना विनेरें ला-या हा । सुभट लखावें हो मां री  
दोठ अेकदम बोदी हुयगी ही ।

म्हें केयो -- 'म्हें उतारद्यूं मां जे सोगरा ?'

'नो वेटा, नो हालती सुझें है, हां कोकमसूक्षण लाग्यी है । काईं करै वेटा, पूरव  
लें जलम रा कियोडा भुगता हां ।' निमासां न्हावती थकी बोली, 'सात-सात वेटा अर  
बहुवां ! पण सुख लिधयोडो हुवें तो मिळें । म्हारें बिचें तो वा रकमणी वामणी ई घोपी  
जिनो नीपूनी है । जिणी री आय ती को राणै नी । मांग-मूंग'र पेट भर लें ।'  
जायें हे वेटा, अबै-भूयो-तिस्मो ई गरणो पढ़गी ।' बातें रै बिबाळें सोगरो की लागगी ।

मैं उण नै केलडी सूं उतार खीरा माथे सेकण ला यो । मां बोली— 'आज थूं सेक-लेसी । काल कुण सेकसी ? म्हारी मांथी तो म्हने ई उडावणी है वेटा । ला, चीपियो दे, कठई हायनी बळज्या धारो । चीपियो तपोयोड़ी है ।' मां अकसोगरी फेहं घडियो अर केलडी माथे न्हाक की डोका-डोकी चूल्है मे दिया की चरड़-चरड़'रस हुय'र तूगिया उछळया । म्है लारं सिरकती केयो— 'मैं पाछो आयी हो मां ।

मां बोलती उणसूं ई पैला जी सा माळा-फेरता-फेरताई बोल्था 'पिसाब करण नै जावं है काई वेटा !'

'हां सा ।'

'तो यूं करे वेटा—खूण में उकळ मे गेडी रो गोचो ऊभो है, हाथ मे ले जावं, हो ।'

'कुण खावं है सा ?'

'आपरो जापतो चोखी वेटा । सिरं पंच हाल घात नै गांठ करियोड़ा है । भरोसी नी ।' 'अर थारं आवणरा घावरई तो वीरं ताई कदैई पूगगा हुवेला ।'

मैं नीं घावतो ई गेडी रो गोचो लेय'र बाड़े ताई आयग्यो । बाड़े रो पळी खोल छोड़ी में सूं मांय जांवण ई हुयो हो'क की खुड़को हुयो । माळा फेरणी छोड़'र जीसा ई म्हारं लारं लारं बाड़े रो बाड कने आय ऊभगा । जठा ताई म्है नीं आयी वं कदैई म्हारं कानी तो कदैई गुवाड़ी रं फिळ कानी तो कदैई म्हारं कानी देखता रया ।

'आप लारं क्यूं आया सा ?'

'थूं कोनी जाण वेटा, सांप किणी रो सगो नी हुवं । मैं जाणां हां । थे तो तूगिया बिखेरगा अर म्है वीं सूं लगी लायरी लपटां में झुळस रया हां ।'

म्है आगड़ ताई पूग-याहा । मां सोगरा सेक लिया हा । पण चूल्है सूं अणगीणत चिणगियां चड़-चड़'र करती उछलती जाय रयी ही । म्है आं चिणगियां में उतर'र मून धार लीवी ही । पण जीसा रं आं सबदां—'आव आपां रोटी जीमला ।' रं म्हारं आपरं चेतं दूक्यो ।

मां घाळी परोस दीवी ही अर म्है दोयू बाप-वेटा जीमें हा । जीसा जाणकारी दीवी ही—'मैं आज 'हेकाव' मे सुणियो है—

छापां मे अेड़ी खबर छपी है ।

मां बोली—'कैड़ी ?'

'कैड़ी काई ! म्हारी देखणी अर सुणनी मे तो आ पैली वार ई हुयो है । 'गूड़े' गांव में अेक सात टाबरां रो बाप आपरी वेटी रं सागै ई काळो मूण्डी कररयो ।'

'हैं !'

'हैं काई, सांच बात है ।'

'राम-राम कैड़ी कुळजुग है !'

'जणैई तो घ्यारूं मेर विणास ई विणास है । सगळै ई काळ वापरियोड़ी है ।

पापरो पडो तर-तर भरतो जा रैयो हे । भरपा तो फूट ई ।

'कैवनी'क ऊभा ऊंट ई कदे पिलाणीज, पण देखी-कंडां पोरो समे आयो हे ।  
ऊभा ऊंट ई पिलाणीजण ला या हे । राम · राम···राम 555···!

'धरम री तो हाण हुयगो । ग्रन्था में ई फीपीजयो हे —जद-जद धरम ही हाण  
दुबेला, काळ छावैला अर विणारा हुबेला !'

'वातां पण आयगो हे मा', मां वोल'र रैयगी अर में विचाळई बीस्यो···'अर जो  
ज धरम रैय जावतो ती काई हुय जावतो ?'

'हुवतो काई वेटा, धरम रैवतो नी तो उणरं सारं सत चालतो । सत चानती  
तो जेडो-वेडो वातां सामही नी आवतां अर भे पीदिया रं इण गांव में हुक्का-पाणो  
सूं नी जावता । कदेई सोचूं'क मूज गी उगाळी ई थारी माने लेय'र पीदियां रं इण  
वासी नै छोडद्यूं अर अणदीठी अर्सदी ठोड़ वास्तं व्हीर हुयजायूं । पण, जलममोम  
सोरें साथ थोडी ई छूटे वेटा ।'

मां बोली · 'देव वेटा, थूं मोकं सर आय यी हे । गांव में समूहूं री मोत हुयोडो  
हे । गांव भळी हुबेली । राजीपो करणी चोगी । वस्तियो नाई छाने-छाने बतापगो  
ही आपां गुनागारी भरीं अर कचेडी में बयान बदळदां तो राजीपो हुय मकं हे ।'

में बोऱ्यो : नी मां ओ क्रियां कर सकां हां आपां, जे आपां हांकरगा नी, आपां  
तो जिवी भुगतो हां, भुगतो ई हां । गांव आळा नैई भुगतणी पडैला । राजपे री कठई  
दरकार कोनी । आज जद राजा-महाराजा रा ई राज-याट नी रया हे अर ओतो  
बापड़ी मिरें पंच हे । आपां रं जिकी भी बात हे आपां कोरट में ई सळट सां ।

'म्हने तो को जचैने वेटा, भाखर ई कदेई मिरकाइज हे । थूड़ वाळी आगी ।  
गांव राम हे । हुयो जिको हुयो । जद दूजां रं किणी रं पोड़ को पाकी नी पछे आपां रं  
कठे खाज ? राजीपो करणी हकरो हे वेटा ।'

'नी जी, थोडो तो सेठो रैणो पडसी । नीतर आज तांई रं बरिमोडां मायं पाणो  
फिर जासी । आ ई तो बडैरा केंयो हे : दिन आया तो देवळ डीगें हे ।

'पण वेटा,

'पण काई जी ?

'देव वेटा, आगां री कुण । अेम० अेल० अे०, अेस० डी० ओ०, बी० डी० ओ०  
प्रधान-प्रमुख, पटवारी, मन्त्री अर सन्तरी तांई सगळाई मिरंपचां गुलाम हे । कैवनी  
वेटा, खावें मूण्डी नै लाजें आंध्या । मूण्डे-मूण्डे हराम लागोडो हे वेटा ।

'मी जीसा जठे तांई आं हरामियां···।'

'होळें बोल वेटा, भीतां रं ई कान हुया करे हे । हाल आखी रात काढ़णी हे ।  
भे काई-काई नी भुगतो हां । फकत ऊभण नै आंगणो'क नीमई ई, छिया'क नीमई  
रं ओळें सोळें की परकमा हे वेटा, दूजी ठोड़ कठे ई जाग्या को हे नी ।'—

'देखी जी, जद ऊवळ में मायी देय ई दिमो हे तो धमकें सूं डरण री कठे जहत

है। कानून नै कम मत समझी आप। कानून तो कानून ई है। देस रै राष्ट्रपति अर प्रधान मन्त्री नै ई को छोड़ै नो कानून। राज रै घरां देर है, पण अँघेर कोनी। सजा तो आँनै मिळैला ई। आज नीं तो बाल।'

'महै घोळा लिया है बेटा, बिना डीडियां रै होळी नी रमीजै। इण कोरट-कचेडियां री फेटो घणी अबखी है। अँ मारै थोड़ा पण घीसै घणा। कोरट-कचेडियां किणरी, जिणरी अण्टी में दमड़ी हुवै। जठँ साँच झूठ में अर झूठ साँच में वदळ जावँ। नी जाणँ अँक ई दिन मे कितरी बात भगवान तँ टूँपी देयर मारै। भला सूँ भला मिनख हाथ में गीता अर कुराण लेय'र झूठी-झूठी सोगनां खाय तेवँ।'' अर यूँ सही बात कैवणियो कुण है गाँव में। 'नागां सूँ तो बेटा, राम ई डरै है बापड़ो।'' 'कुण वेर मोल लेवँ। सगला ई जाणँ है इण डाकी रै दाँतां शिःया ती पछँ वचणी नी है।

'पण आप आ ती जाणी ई हौ'क वोर तो काँटाँळी झाड़ी रै ई लागँ है।'

'आ बात ती सोळँ आनां साँची है बेटा, पण, गाँव मे रेवाँ हाँ खेत री आँट-माँठ ती आवणी-जावणी ई पड़ै। म्हारी ती हात ओई केवणी है बेटा'क हाल वेटी बापरी है बेटा। मौकी आयोडी नी गभावणी चाहजै। वडेरां रा ई कायदा-कानून है। थूँ जाँग ई है बेटा, दो लड़ै बाँ में सूँ अँक ती पड़ै ई। मानलाँ'क आपा हारःया हाँ।

'बाँध्यां कठँ आवणी है जोरा। अठँ बात न्याव-अन्याव री है। अत्याचार करण आळां सूँ सेवण आळो घणो दोखी हुवँ। आ बात ई ती वडेरा ई कैयी है। चिन्त्या मत ना करो, कानून री पोटी पड़ियो हे बाँ धूड़ लेय'र उठसी।'

'धूँ भणियो-पणियो है, कैवँ ती म्हँ मान लूँ बेटा पण म्हारा ती अणभव है। अभागां री इण दुनिया मे कोई भीडू को हुवँनी। खँर इत्ता दिन काया नै भाड़ी देय'र ज्यूँ-त्यूँ काढ लिया। फेरँ पतियारी करलियां थारी कोरट-कचेडियां री। वही-वही साम्ही आ जायी। ते पैलँ रोज तक री ई ती बात है—केस रै फैसलँ री तारीख है।'

'भरोसी राखी जीसा, फैसली आपाँ रै हक मे हुमी। अबँ तोत रा थोड़ा तो चाल सकँ नी।'

'चोखी बात है बेटा, चालणा ई नी चाहजँ।'

'हरगिज आपाँ रा थोड़ा है...असली थोड़ा है कैवताँ कैवताँ नी जाणँ कद म्हारी आँदयाँ मिळगी। अर महै खुराटी नोद ली ह्यो। अर म्हारा जी आखी रात आँदया मे काडी हो।

तीजो दिन हो। महै कचेड़ी में हा। सिरँ पंच हा। बाँरा लठैत हा। जज रै साम्ही दा काळा कोट बापा-बूय हुयाँ आप-आपरी लड़ाई लड़ै हा।''की जेज हुयाँ जज फैसली मुणाय दियो। सिरँ पच हाक-न्हाक बरो हुपःया हा।



सगळीं री आंश्यां म्हा दोन्युं बाप-बेटां नें खावण सांगणी ही । अर म्हे जे-  
दूज री मोट मिलायां हायां रें बटका भरें हा । वाडें ती लोहो कोनीं ही ।

जीसा इती ईं बोलिया हा — 'म्हें कॅयो नी बेटा ।' अरें गांव में पग घरणो ईं  
परबस है ।'

अर म्हारो हें-हें ऊभो हुयस्यो हो । म्हें जीसा नें इतीई 'कॅयो : 'बिन्ता-फिर  
ना करी जीसा । हान अेक नी तीन-तीन कारली कोरटां है । बठें आतां री  
सुणवाई हुसी । दोधो नें जहर दण्ड मिळ सी ।'

जीसा घोडी जेज ताईं जज री कुरसी रें मारें टंगोडी गांधी जो री कोटू नें अेक  
टके भाळता रैया अर पछे नी जाणें कठें सूं हिम्मत बटोर'र आ केवता-केवता'क—  
'जहर लडस्यां बेटा, आ केम जहर लडस्यां'... 'जे आपरें हाप में मोत्योईं घुगिरीं  
स्हारें कोरट सूं बारें टुरग्या ।

## मौत री जड़ता

रामनिवास शर्मा

“आखी जिन्दगाणी भूख मिटावण मांय ही गँवाय दी पण भूख हाल ताई मिटी कोनी । सगळी मिनचा जूण भूख मिटावण मांय लाय्योडी हे पण आ कदैई नी तो गिटं उरती दिन रात चौगुणी बढती जावे । म्हारं घर आळा पच-पच नै मरव्या पण नी तो वारी भूख मिटी अर नी परवार री । आज हूँ वेबस हूय नै पड़ी हूँ । कोई मन दोन्गू बगत रोटी देखे । रोटी तो मिलै पण बगत टाळनै । शक-शक करने । रोटी खावणू अर धूड़ खावणू बरोवर हे । खावणी रोटी ही पड़ी हे । माजनु मारनै रोटी ही खावणी पड़े । भूख सू आंतडचा मरवा लाग ज्यावे, होटा माय फेफर्था आवा लाग ज्यावे जणा थाळी आवै । पथराईज्योड़ी आध्यां कांसो देख नै हरी हूय ज्यावे । मूण्डे मांय पाणी आय ज्यावे । रोटी खाळं पण बी मांय नी तो सुआद हुवे अर नी अपणायत । नै कदास आ वात हूँ आडोमी पाडोसी नै कहूँ तो फेर पछे ई रा ही लाला पड़ ज्यावे । सगळी जुआनी आ वेटा री सार-सभाळ मांय गुजरणी । वूढापे मांय आरी दया माथे मनै पड़ियो रैवणू पड़सी, आ हूँ कदैई नी सोची ही । जै कदास हूँ टूपो खाय नै...।’

‘दादी ! रोटी लै’ ओरै मांय बढतो पोतो बोल्यो ।

‘ल्या । वेटा’ मांये माथे बैठती डोकरी बोली—‘आज तो बोळो मोडो कर दियो ।’

‘सदाळो ही बगत हे ।’

‘तावडो तो बोळो चढम्पो दीखे हे ।’ वारणे सून आख्यां फाडती डोकरी बोली ।

फाटघोडे डोल सी आवाज कानां रै पड़दे सून टकरायी । ‘आखो दिन खावणनै भरे । रोटी राख दे । पाणी रो लोटो ले ज्या । घर मांय कित्तो कोरसो हे ओ दीखे ही कोनी । काम कौ जके नै ठा पड़े । लारलै दोय दिना सून डोल भारी हे । आ तो

को पूछी नी ऊँ बीनणी ! तवियत कियां है । ऊपर सूं रोटी भोड़ी ल्यायो । काँ है मर ज्यासूं जणा सगळी नै ठा पड़ ज्यासी ।'

छोरो चुपचाप थाळी राख नै पाणी रो लोटो राख नै आयो गयो ।

डोकरी रो आऱ्यां रो सोजी थोड़ी ही । कान ऊँचो मुणता हा । पण हिर्प सूं साची ही । डांग सा वचन कानां सूं बार-बार टकरायीजै हा । पाणी कोमा माथे फिरवा लाग्यो हो । थाळी नै टँटोलतो हाथ पाछो हूय-यो हो । भूय सगळी मिटगी ही । रोटी नै निगस्कार करनै डोकरी थाळी पसवाडै राखी । माँके माथे बँठ नै डोकरी आपरें विचारै माँय उजूझवा लाग गी ।

जै कदास आज म्हारो काळजो भरियो हूवतो तो म्हारी इसी हालत नी हूवती । बहू-बेटा आगै-लारें धूमता । टँल-चाकरी करता । बी बगत लोग घर्षा ही समझायी के लोगां सूं लँवणू-देवणू मत बतार्ड ज्यै । टूम-छरलो है जके नै कर्नै राखी ज्यै । पण म्हारी रांड रो अकल निकळगी ही । काळजो घोल नै सगळों रें मारै राख दियो । खाली हूय नै बँठगी । अबे मनं कृण पूछै ? म्हारें कर्नै के है !' भगोती सोच ही । सोचणू ही भगोती रो जीवण है । आदत है । सारलें वोळा बरमा सूं है ।

सियाळै रा दिन हा । गियाळा रा दिन छोटा हूवें । रात बडी । भगोती सार रात अर दिन दोन्यु एक समान ही है । दिन-रात गोवणू ।

घर माँय बडती लुगार्ई हेळो पाडियो — 'जिठानी जी । सोय न्या काई ?'

पर्गा लागती बीनणी बोली — 'आओ ! पधारो ।' सारै ही छोरे नै हेलो पाडियो — 'किमनू ! देव'रें दादी जी सोय न्या काई ?'

आज भगोती रो की सूं ही बात करण रो मन नी हो । पण आ देराणी ! साव-साव कँवण आळी है । मूण्डै रो फूडी है । जै कदास ई रें सारै माड़ी बात हूय ज्यासी तौ सगळें गाँव माँय डको पीट सी ।

किमनू ओरे रें मोड़ कर्नै आय नै दादी नै हेलो पाडियो ।

'आऊँ बेटा' डोकरी बोली ।

अण-मणै मन सूं डोकरी उठनै पाणी पोयो । लकड़ी रो सारो लँय नै ठावा-ठावा पग राखती चौक माँय आयने बँठी ।

'आज तो सूं वोळा दिना सूं आयो ।

पर्गा लगती देवराणी बोली — छोटक्यै पोते नै भाव बिसरग्यो । ई कारण आवणू हूयो कोनी । दो दिनां पै'ला बी नै मूंग रो दाळ रो पानी दियो जणा आज ठाकुरजी रो कडाई करी । परमाद दैवण छातर आयो हूँ ।' बाटको देवती धोनी — 'स्यो ! परसाद रो बाटको ।'

डोकरी परमाद लँवती हेनो पाडियो — 'छगनेरो बहू ! परसाद राखने कटोरो पाछो खाली कर'रनै देओ ।'

रमोई माँय मू बोली— 'अवार आयी । काकीसा । चाय छाणनै त्याऊ ।'

'अरे बीनणी अवार किम्बे दगत चाय बनाथी है । अवार ही छाणू छायेन आयी हूँ' काकी जी बोल्या ।

छगनै रो बीनणी चाय छाणनै तीन गिलासां चाय रा लैय नै चारं आयी । बोली— 'काकीसा ! दिन गैसू थोड़ो मायो भारी हों । म्हारै खातर कुण चाय रो तसिमो करतो । आप पधार या जणा मीको सक्ष मो । थोड़ी ताल घात भी हूय गयासी अर चाय भी पीची ज्यासी ।'

'बीनणी ! आज माथो क्यां सूँ बूखवा लाग यो' डोकरी बोली ।

'काल ठण्ड माँय वोळा कपड़ा धोया जकै सूँ ठण्ड लागगी हूसी' बीनणी पड़ूतर दियो ।

'सियाळै माँय थोड़ो ध्यान राख्या करा'

'धारी बोचला करण रो ब्राण हाल ताई गयी कोनी ।' चाय पीवती काकीसा बोल्या - 'बीनणी कोई गीगली थोड़ी है ।'

छगनैरो बहू रा कोया फिरवा लागया । मन माँय सैकती बोली 'आँ रो आ आदत सदा रो है ।'

'माँयताँ रो मन सदा ही काचो हूवै' डोकरी बोली । चाय पीव नै गिलास रायती काकी सा बोल्या— 'सामू नै चछाइ जै किसीक वर्णा है' आ कैवती पाछी चली गयी ।

'आँ जरर ।'

छगनै रो बहू नै तरांटो आयो । अवार खाणू छायेन बैठो है । एक गिलास चाय गटगायगो । आ ही नी बोली— 'बीनणी अवार ही खाणू छाये है । चाय नी पीऊँली । धोगो उकळै । आखो दिन चाय चाहिजै । मरै नै माचो छोड़ै ।'

डोकरी रो चाय जै ग हूयगी । डोकरी सकपकायगी । उल्टी करनै पाछी काढीजै तो कोनी । डोकरी बोली— 'बीनणी ! तू मनै दी अर हूँ पीयगी । माँगी तो कौनी ही ।'

'हूँ जाणै ही । जकै सूँ पैली बणाय नै जायी ही । थाराँ किसा हिमा फूटघोड़ा हा, पैली कँय देवती के बीनणी हू चाय नी पीऊँला । मने पत्तो हो' थै चाय खातर मरै हो ।

डोकरी रा ऊपर दाँत ऊपर अर नीचला दाँत नीचै रैयया । बरुँ सूँ उठणू मुस्कत हूययो । देवराणी आयी अर घर माँय राइ पालगो । थोड़ी ताल डोकरी सँग-बँग हूयोड़ी बठे ही बैठो रो । पछै बडी मुस्कत सूँ उठनै आपरै ओरे माँय गयी भर सिरक ओढने माँय रो माँय रोवा लागली ।

'हू कताक काळा चाब्या है । जकाँ रो बदलो चुकीज्यै है । वे पुण्यात्मा हा जकाँ आपरी जावै नै सञ्जटाय नै चरया गया । माँदा पड़िया जणा मने समझायी कै

हाथ काठो राखी जै । ओ बहू बेटी को काम रा कोनी है । बगन री रोटी ही के  
 घालेला । आवण आठो जमानू धराब है । हाथ नै हाथ घावण सार त्यार रैवतो ।  
 पण म्हारी रांड री अकल बहू-बेटा मिलनै काडली । वा री बात नी मानी, ईं काल  
 तकलीफ उठाऊ । मनै के ठा ही के म्हारी औलाद ही म्हारै सार्ग आ करली ।  
 भगोती सौबे ही — 'छोरो तो घाघरै री चूह । म्हारो ईं घर सून इतो के मोह के  
 जके घर माय हूँ बीनणी बण नै आयी बी घर माय ही पग पसारु । उभी आयी बर  
 आडी हूय नै जाऊँ । कास हूँ ईं मोह सून मुक्त हूवती ...।'

## गुरु-परसादी

शिवराज छंगाणी

प्रोफेसर रामशरणजी बोल घीरे सभाव रा हा । तीन विसैरा ग्याता — संस्कृत हिन्दी अर अंग्रेजी रा घुरंधर पण्डित । कॉलेज में सगळा सू बधी' क ग्यान राखण आळा । डोल सू पतळा घोच सिरखा । रंग गोरो गट्ट । पोसाक घोळी खादी री घेत अर घोळो ई कुरतो । पगां में गोरखपुरी पगरची । आंध्यां आग तसमो पतळी डांडी री । दूर सू आवता इस्मा लागता जाग हड्यां री डांनि माथे घोळी चमडी ओढा घोडी हुबै । मूंडे माथे मुळक बंध्योड़ी रेवती । साईणां प्रोफेसर घणां कीमती कपडा पेरता । पण बांरी सादगी रे सामे सगळा पाणी भरता ।

कॉलेज में आवता जद आप आळी पुराणी सायकिल जिकी सगळें रस्ते मांय चररंडावू करती बांरी बस्ती करावती रेवती । छोरा-छोरी वाने घणो आंदर संस्कार देवता दिरावता ।

बडी कॉलेज में छोरा-छोरी उछाछळायी करता । कदेई प्रिंसीपल सामे मंडता तो कदेई पुस्तकालयाध्यक्ष सू भक्तेडो लेवता । कदेई आपसपरी मांय राड मचावता तो कदेई बारे सू बक्तेडो खडी कर लेवता कदेई चुणाव री चरचा लेय'र हुडदंग मचावता ।

पण जद कदेई प्रो० रामशरणजी आवता तो सगळा छोरा-छोरी माथो झुकाये'र खडा हुय जावता । सगळो बक्तेडो कैय सू ई नई सळटतो जद प्रो० सा' व दोनू पाटियां नै बुलायने राजीपो करावता । फेले कॉलेज में सांयती हुय जावती ।

प्रो० सा'व टावरां सू घणो सनेव राखता । खुद कदेई किलास कोनी छोडता । बांरी किलास मांय पढ़ण नै छोरा तरसता । बांरो ग्यान सैमदर री गैराई री तरै हुवतो । हंरेक विसें माथे वारो पुरो दूधकार ।

बांरी खूबी आ ही कै ब छोरां नै पढावता अर बा नै मोकळी पोघ्यां पढ़ण

सार पुस्तकालय सँ दिरावना । खुद आज रे प्रोफेसरों री तरें ना तो चुन-बुला हा आ ना वॉ नै ट्यूशन-टासन रो लोभ । कौरो लोभ ई बात रो हो कं बाँरा पढ़ायोडा छोरा-छोरी खूब ग्यानी हुवै अर चोग्या नन्वर लावै ।

खुद रे घरें प्रो० सा'ब घणघरो बयन पोख्या पढण अर बी सँ नोट्ग बणावण मारु बीलावता । पढ़ावण रो वॉ नै सोय ई हो । प्रो० सा'ब रे घर मांय लुगायी घणी पत्नी-लिखी कोनी ही, पण खुद रे टावरों नै पढ़ावण सारु मेंनत करती । घर गिरस्ती री काम-काज ई मोकळो हुवै पण पढ़ाई लिखाई रो महत्व वा आछी तरियाँ जाणती ।

प्रो० सा'ब रे जेक छोरो अर ५ क छोरी ही । दोनू ई पढण मांय हुसियार । प्रो सा'ब रात री बेळा मे वानै पढ़ावता रैवता । दोनू ई छोरा-छोरी फस्ट डिबीजन सँ पास हुवता ।

कॉलेज रे चैला मंडली रा बोट सा छोरा जगै-जगै अधिकारी बणऱ्या । बाँरो सरघा प्रो सा'ब सारु घणी रैवती । प्रो सा'ब वानै कॉलेज मांय घणै सनेव सँ बतळावता । बाँ री दुःख दरद पूछता । जिका कमजोर समाज सँ आवता बाँरो फीस माफ करावता अर पुस्तकालय सँ बाँ नै पोख्या दिरावता । समै-समै पढ़ायी लिखायी रे मुजब निर्गदास्ती करता रैवता । कई-कई छोराँ री भोळावण दुजै प्रोफेसरों नै ई दिरावण सारु प्रयास करता ।

सभाव रा उदार अर हिरदे सँ कंवळा हुयण रे कारण दो-तीन छोराँ वॉ रे मूंडे लागऱ्या । जेक छोराँ रमाकान्त तो बोट ई चँट अर चालवाज । दस-बीस छोरा वॉरे सागे नित-हमेस मूंड वणायोडा सा रैवता । रमाकान्त रे कंवणे सँ वानै पुस्तकालय सँ पोख्या प्रो० रामशरणजी दिरावता । वो कदेई-कदेई तो कई छोरा रे वास्तै प्रो० सा'ब सँ खपिया ई मांग लेजावतो । कदेई पूठे लोटावता अर कदेई कोनी देवता । इसै ई सभाव री ही प्रो० सा'ब री घरवाली कमला । नांव जिसोई रूप अर गुण । हिरद सँ उदार अर भोळी-भाळी अर अनुभव सँ गुणीज्योड़ी । प्रो० सा'ब रे सभाव नै वा आछी तरिया जाणती अर वॉ रे मुजब ई चालती

दियाळी-होळी जद कदेई कॉलेज रे छोराँ रो झूंड घर वानी आवतो तो कमला वानै मिठाई खवायै विना पाछी कोनी जावण देवती । आछे सभाव रा छोरा प्रो० सा'ब अर वॉरी लुगायी री मोकळी बड़ाई करता । वॉ रो आदर अर सरघा सँ नांव लैवता ।

रमाकान्त कमला रे ही मूंडे लागऱ्यो । भईनै में दस-बीस दफे, तो वॉरे आवतो ई ज ।

प्रो० सा'ब नै चारनै विश्वविद्यालय सारु भाषण माळा री नूती मिळतो; जद रमाकान्त वॉ नै टेसन पुगावतो अर घर रा दी-च्यार काम-काज ई सळटाय देवतो ।

प्रोफेसर सा'ब री घरवाळी अक दिन रमाकान्त नै पूछयो— 'रमाकान्त तूं कुणसी कित्तास में पढै है?' वो बोयो— 'माता जी, हूं सोलहवीं में पढूं।'

'धा रे काई विसै लियोडो है?'

'म्हारै हिन्दी लियोटी है'

'तूं आगे काई पढ़ेला?'

'है पी. एच. डी. करणो चावूं।'

'कै रै अण्डर में करेला?'

'जठै प्रो. सा'ब वतासी।'

'प्रो. सा'ब खुद कोनी करा सकै?'

'क्यूं नई, यां री म्हारै माथै मरवाना ही।'

'तूं चावै तो म्है धारी भोळावण दे दूं।'

'माताजी, नेकी अर पूछ-पूछ'र।'

'तो ठीक, अवार तो तूं घरै जाय'र आराम कर ले।'

'जावूं माताजी, आप री आ या। म्हारै जोग कोनी काम-काज हुयै— भोळाया अवस।'

आ कैय'र रमाकान्त घर मूं वारै जावै। कॉलेज रै गजीक बी रो घर। भायलां री मण्डळी यीनै उडी कै। अक भायलो वो:यो, 'आय-यो रमाकान्त, अर सगळां बी नै घेर लियो। सगळा आपस परी मे हथायां करै। कदेई पढणरी वात्यां अर कदेई सिनेमा री फिल्मां री।

धी माय सूं अक जणै कैयो— 'रमाकान्त। मनै हिन्दी रै पांचवै पेपर री पोव्यां कोनी मिळी। प्रो. सा'ब नै म्हारी सिपारिश कर दैवै तो पोव्यां मिल जावै।'

वो पडूत्तर दैवै— 'क्यूं नई, प्रो सा'ब नै आवण दे। जरूर दिरा सूं। छोरां वास्ती वै आधी रात रा त्यार रैवै।'

आ कैय'र पाछी दूजी-गप्पशप्प-लगावणी सरू कर दै। केई प्रो. सा'ब रै गुणां माथै, केई वां रै ध्यान माथै अर केई वांरी उदारता री आछी बखाण करै। केई कैवै कै इस्या दैवता कम ई मिळै जिकां छोरां नै घणै हेत सूं पढावै। खुद री जेव सूं वांरी फीस भरै। पोव्यां दिरावे। अर जद छोरा घरै मिलण नै जावै तो चाय-ना-तो करिया बिना पाछा कोनी जावण दे। रमाकान्त कैवै— भई गुरुजी सगळां नै आपरै टांबरदाई समझै। छोरां रो लाइकोड करै। प्रेम अर सनैब सूं वांरो चरित्र घणावै।

इयां हथायां करतां घणो बखत वीतगो। सगळा छोरां आप-आपरै घरै करेती कानी बहीर हुया।

प्रोफेसर रामशरण जी केई दिनां पाछै वारै सूं आया। सगळा री खेम कुसळ पूछी। फेरूं कॉलेज रै बखत बठै पूगन्या। पढावणो अर लिखावणो प्रो. सा'ब री रोज री फरज। घणा खरा छोरां वारै हेठै पी. एच. डी. कर'र निसरग्या।



छेवट रमाकान्त रो नंबर ई वारी जोड़ापत रै कंवर्ण सूं आपग्यो । वोरै सौठवी करतई रजिस्ट्रेशन हुयग्यो । तीन साल मांय विण आप री डिगरी गुरु किरपा सूं लीवी । रमाकान्त डिग्री लेवण रै पाछै गुरुजी अर वारी जोड़ापत री आशीप लेवण साग आयो अर फेहें आपरै गांव रवानै हुयग्यो ।

थोडा दिनां पाछै वो भी कॉलेज माय नोकर लागग्यो । प्रो. सा'ब आ खबर सुणी जद बानि वडो आणद आयो ।

प्रोफेसर सा'ब री रिटायरमेंट तजीक । थोड़ाई मईना बाकी हा । वै आपरी पेंशन रा कागदा त्यार करवाय रैया हा । सोव्यो रिटायरमेंट रै पाछै मोकळो समै पढण लिखण मांय बीतसी । पद्दतो-टक्को ई ठीक-ठाक मिल जासी । घर रा छोरा-छोरी सै भण गृणय्या अर वी रै नोकर्या ई लागगी । छेवट पेंशन रै रूपिया सूं दोप जीवा री बाछो पेट भरीजतो रैसी । जीवणो जितोई सीवणो । लारला सै सुखी रै सी । ना ऊधो री लेणो अर ना माघो री देणो ।

आ सोच'र प्रो. सा'ब खुद र कागजां नै ठीक-ठाक करण सारू लाग जावै ।

वै अचाणचक पुस्तकालय मांय जावै । पुस्तकालयाध्यक्ष वी नै पोव्या री लिस्ट पकड़ाय देवै अर कौवे — प्रो. सा'ब लिस्ट देखै अर खुद री चस्मो ऊंचो नीचो करै । वी पोव्या मोकळा छोरौ नै दिरायो । पण कौण ई पाछी कोनी जमा करायो । अवै प्रो. सा'ब सोच मे पड़या । वी रमाकान्त ने याद करयो । वी नै अके कागद लिख्यो जिक मांय पोव्या री पडो लिख मेळ्यो । उचळो पाछो आयो कोनी । रिटायरमेंट री सागी दिन आयग्यो पण पोव्या पाछी कोनी मिळ सकी । पोव्या री लागत कीमत दस हजार रूपिया रै अट्टे-गडे ही । प्रो. सा'ब जिका-जिका छोरौ ने जाणता हा वी नै कागद पतर लिख्या पण किणी रो उचलो नई मिळ्यो । छेवट डॉ. रमाकान्त री कागद प्रो. सा'ब खनै आया । विण लिख्यो — गुरुजी मोकळा वरस बीतम्हा । छोरौ पुस्तकालया मांय पोव्या जमा कोनी करायो आ सुण'र मनै घणो दु:ख हुयो । अवै म्ह तो कौई छोरौ री पता-ठिकाणी जाण ई कोनी । किया पतो लाग सकै ? पण आप म्हारौ जीवण वणावण सारू जिको सनैव दियो-दिरायो वीनै कदेई नई भुलाय सकै । दस हजार री कीमत वीत ज्यादा हुवै । आपरी गुर-परसादी सूं छोरा आपनै कदेई कोनी भूल सकै । हूं अवार-काम-काज मांय ब्यस्त रैवूं । समै मिळतापाण ई आपरी सेवा सारू हाजर हुय जासूं । म्हारै जोग सेवा हुवै लिघासो । कागद री उचळी दिरासो । प्रो. सा'ब ओ कागद पड'र मन-मांय सोचै कौ छोरौ छेवट गुरु परसादी हाफेई ले लीवी ।

प्रो. सा'ब री ग्रेच्यूटी अर पेंशन मांय सूं दस हजार रूपिया काटीज'र राज रै खजाने मे जमा हुय जावै अर छोरौ रै गुर परसादी हाथ लाग जावै ।

प्रो. सा'ब घरवाळी खनै पूगै अर सगळी कथा बतळावै फेहें उदास हुय जावै । घरवाळी गममदार हुवै । वा थ्यावस दिरावती रैवै — चिन्ता-फिकर री घणी बात कोनी, ये जाणो कौ अकर टावर नै ऊंची शिक्षा दिरावण री घर सूं ई खरब लायग्यो । फेहें दोनूं आपरै काम-काज मांय जुट जावै ।

० ०

## फँसलो

मीठालाल उत्री

हफ्तें भर सूं बाईं म्हारें लारें लागोडी है । म्हारें इस्कूल सूं घरें आया पछै वा अेक ई बाल री रट लगवती मन पूछै — थै काई तय करियो, मीना ?

मे हाल ताईं बाईं नै ह्रीं-ना रों पडूतर कोनी दियो । पण एण तरें कितरा दिनां ताईं बाईं नै पडूतर नी देवूला ? अेकर तो कँवणो ई पडैला । पण बाईं रें मगज में आ घात बयूं नी आवती कै जिका पैली साव नट-या हा; टीवी-फ्रिज री मांग करता हा; अबे उणी नै साव फोकट मे म्हारें सूं व्याव करण री ऊंधी काईं सूझी ? हफ्तें पैली जोधपुर सूं उणी रों कागद बाईं माथें आयो । बाईं रें हरख रों की पार ई कोनी, जाणें आंधेनै आँख्यां मिळगी ! पण बाईं वात समझी बयूं नी कै हाथी रें दोव तरें रा दांत हुया करे । जिकां दांत वारें दोख रैया है, वंडा रा वंडा दांत माय घोंडा ई है ? ऊपर सूं आदमी कितरो ई टीम-टाम फिरें, सेवट उण रें घट री तो ऊपरवाळो ई जाणें । मनै तो अबम्भो हुवें कै जिका पहती टीवी-फ्रिज तकात री बान करता हा, अबे साव कूँ-कूँ-रुन्या रों घात माथें आयें र कीकर ऊभर्या है ?

आज मनीवार है । काले अदोतवार ताईं बाईं नै पडूतर देवणो ई पडैला । माथें माथें मूती, म्हारें दिमाग में था ईज वात रैम-रैम नै आवै ही कै बाईं नै काईं कँवूं ? बापा बैठा हा, नद ताईं तो वां लोगां री इच्छा म्हारें सूं रिस्तो करण री नी ही ! वै साव ई नट-क्यूं न्या हा — छोरो कँवणें मे कोनी ! तो ई बापा जोधपुर रा दो-तीन आंटा भार्या तो वात टीवी-फ्रिज माथें आयनै काँच ज्यूं टूटगी । बापा रों मन जाणें टूटघोड़ो काँच हा, बिगडर थो । म्हारें सगपण साह बापा घणी उठक-बैठक करी, वां री तो कमर टूटगी । ख़बत म्हारें सगपण री वात मन में लियां ई जाता रैया । आखी ऊमर टावरी नै भणावना, की नी कर सख्या । अेक प्योट मोल लेव राख्यो हो । उण पर तीन चार कमरिया बणावण साह सरकार सूं लोन भी लेवता, पण वां

नै तो म्हारी चिन्ता ले डूयी । म्यात वाई रै भाग में अब गुहाग लिहघोडो नी हो ।

बापा काई गया, वाई री अर म्हारी गगळी इच्छावा पर पाणी दुःखयो । बापा रै पेसन केम छातर में दपतर रा केई वार आटा मारघा तो सालभर रै माय-माय बापा री पेसन नेम-गुजव वाई नै मिलणी मुन हई । जे म्हारी ठोट कोई छोरो हुवता तो बाबूलोग नी लिपा विना केम पूरा करण रो नाव ई नी लेवता । आ तो में छोरी हो के नूँवै-नूँवै बाबुवा मूं यात करनी तो ये घणा खुम हुवता । कदी-कदास म्हारी माडी रो प लो बाबू री मेज माथे नैरका लेवतो तो कदैई म्हारी आंख्यां बाबू री आं. यां सूं गिल जायती तो वो घणो खुम नजर आवतो । उण वेळा में की मुठक जावती । बाबू समझतो छोरी गजव री है ! काम पूरो हुवण रो मने पूरो विमवाम हुय जावतो । कदी-कदास वै म्हारे सूं मगघरी ई कर लेवता तो में ऊँचो नी लेवती । क्यूँ के में आछी तरै जाणूं के इण तरै री बातें हुवण मूं फरक तो की पडै कोनी ।

इण पेसन-केस री वजै सूं केई बाबू-लोगां सूं म्हारी औळघाण हुयगी । वै रस्तै चालना मने देखे र मुठकता तो में ई मुठक लेवती । बी. अ. तो करघोड़ी ही । बी. जेड मा फारम भर दियो । भगवान अर बाबू लोगां री दया सूं पास हुवत ई म्हारे कखे री इस्कूल मे ई नौकरी लागगी । आज म्हारा बापा हुवता तो वै हरष सूं मैला हुय जावता ।

मने नौकरी करवां धारै महीना ई पूरा नी हुया के वो ही शरस, जिको पैली बापा नै गाय नटयो हो, आज म्हारे घरे वाई ऊपर कागद लिखे है के म्हे सीता मूं गिस्तो जोड़णनै त्धार हूं । म्हाने की कोनी चाईजै, वाई चोधी चाईजै । मुण हुवैला तो संग हुय जावैला ! म्हे कूँ-कूँ-कन्या मूं ई राजी हूं ।

वाई रै कने ई माँचे माथे सूती में आ यात समझ नी सकूं के अबे उण लोगां नै म्हामे काई दीख-यो ? पैली काई नी हो ? में तो जिकी पैली ही, वा री वा आज हूं । की फरक कोनी । माचाणी की फरक कोनी ? आज में अक मास्टरणी हूं ! दूजती गाय हूं ! दूजती गाय री अवेर कुण नी राखे ? में आछी तरां जाणूं के आदर-मत्कार गाय रो कोनी हुवै, ओ आदर-मत्कार हुवै उण रै दूध रो ! दूध सूख्यां पछै बापडी गाय री काई गत हुवै, आ किणी सूं छानी कोनी । बापडी सीमाई मे पडी-पडी पोतारै दुख-दरद री कथा केवती रोवै !

आज में नौकरी माथे हूं । कमावू छोरी हूं । अबे वां नै दाय आयगी हूं । पैली म्हेमे मुण नी हा । मास्टरणी बणतां ई जाणै सगळा मुण म्हां मे भेळा हुयग्या है ! जद इज तो उणां वाई माथे कागद लिख्यो है । पण पैली म्हारे बापा जीवतां में मरप्या हा काई ? सगळा अजगर ज्यूं मूंडो फाड्या बैठा है .. जिको ई आवे सो हजम ! डकार तक नी ! वाह रे भरदी ! वाह ! धां रै खुद रै पगीं में गाढ कोनी काई ? धां नै ठा कोनी के परायी आस सदा निरास हुवै ? छेवट पोता रै पगीं माथे

ऊर्ध्वा ई पार पड़ै ! दूजै रो मूंडो देखर'र जाळ टपकायाँ काँई हुवैला ?

बाई म्हारै कनै ई सोयोड़ी है । दिनूगै उठताँ ई मै उण नै कँच देवूला कँ तू जोधपुरआळाँ नै 'ना' लिखा दे । भला ई ऊमर भर कुंवारी रैऊँ, पण उठै, जठे मिनख रो मोन दोवन मूँ आँकीजै, मै हरगिज नी जावूँला ! पडसो ई उणाँ री मान-मरजादा है । पडमै साँ वै पोतारी इज्जन-आवरू नै ई अशानी राख सकै । पछै उणाँ रै घरँ म्हारी सुरक्षा री गारण्टी काँई हुय सकै है ?

मै अँडा-अँडा लोग-वाग देव्या है, जिका पोतारै वेटै ने अेक बार नी, दोय-दोय-दोय तीन-तीन बार परणावै । आखिर किण ग्रातर ? माया मारू ई तो ओ सारो खेल रचावै । पहलजी लुगाई नै किणी तरै मार'नै डायजो हजम कर लेवणो उणाँ रो धरम है । आयै दिन अघवाराँ मे छापीजै कँ पलाणी छोरी किणी रै सागै भागगी ! वापडी काँई करती ? डायजो चावणियै लोगाँ सूं तो लारो छूटो ! '...रोज रो महाभारत तो बन्द हुयो ! कदैई स्टोव फाटण सूं छोरी बळ'र मर जावै है तो कदैई कूवै-वावड़ी मे गठो चेष' नै आतमघात करण री खवराँ अखवाराँ में आवती रैवै है । फलाणी छोरी पेट दरद सूं मरगी...'फलाणी छोरी धणी सूं लट'र भागगी ! जै सव काँई है ? मगळा पडगाँ रा साँग है । कोई जीव मरणो कौनी चावै ! मरतो जीव ई जीवण री आम राखै । मारणवाळे मूं तारणवाळो बन्दो ! नूँको परण्योडी छोरी री मौन रै लागै की लेण-देण रो ई मामलो है, मामकर नै डायजै रो मामलो !

छेवट मै कितरै दिनाँ ताँई नी परणीजूला ? एकर तो परणीजणो ई हुवैला ! बाई तो आज है । अँ क घड़ी री ई किणी नै ठा कोनी । पण बाई रो साथ एण तरै को छूटैला नी । मै परणीज'र सासरै जाऊँ परी नै बाई खुद रै भाग-भरोसै वैठी रैवै ! ओ म्हारै सूं कोनी हुवैला । मगळी छोर्वा बाई नै छोड़'र सामरै जावती हुवैला, पण मै नी जावूँला '...हरगिज नी जाऊँला । लोग-वाग की ई कँवता रैवैला । मै कोई उणाँ रै मूँडे आड़ा हाथ देवण बाळी तो हूं नी ! मूँडो उणाँ रो है, गन पड़ै सो कँवै !

पण हाँ, बाई रो काळजो असम बळतो हुवैला ! म्है सूं अेक छोरी नै ई को परणाईजी नी । जेटी परायो धन हुवै, परायै घरँ मयाँ ई पार पडैला । पण बाई ओ क्यूँ भूल री है कँ डोकरपण मे उणरो सहारो कुण हुवैला ? मै तो परायै घरँ परी जाऊँला, बाई रो कुछ हुवैला, जिको उण री दवा-दारू करावैला ? बाई हुवतो तो फिर नी रैवती । बाई रै वास्तै तो मै ई वेदो हूँ । उण रै डोकरपण री लाठी हूँ ।

पण बाई म्हारी बात नी मानैला । बा म्हारै ब्याव सारू ई बळवतो देवैला । छेवट मा रो हियो है । मनेँ ब्याव तो करणो ई हुवैला । पण जोधपुर घातर तो ना ई है । क्यूँ कँ यँ पडसो ग लोभो है उणाँ नै भै सूं येमी म्हारी नौकरै दाघ आयी है । मै बाँ रै घरँ नी जावूँला ।

दिनगै सूरज उगता ई मैं बाई रँ सवाल रो पट्टर ई देय देवूला अर कँवूला  
 के बाई, ग्हारै ब्याव रो तो स्वयंवर रचणो पड़ैला । इण स्वयंवर छातर किणी नै  
 शिबजी रो धनुष कोनी तोड़णो पड़ै । इण स्वयंवर में दो बार्ता याम रँवैला । अक  
 आ के जिको मिनख ग्हारो नौकरी नी बिनपुल ई परवाह नी करतो थको ग्हारो  
 भर-भार साँभण रो हिम्मत राखै, अर दूजी बात आ के ब्याव रँ पछै बाई नै ग्हारै  
 सागँ राखणो महन कर सकै; उण रँ गळै में ई सीता नी बरमाछा सोभैला ! ग्हारी  
 बाई रो रेखा ग्हारै सामू-मुसरै रँ अरोबर रो ई हुवैला । नीतर की बात कोनी । पेट  
 रो भूखतां मिट ई रो है ! आहीज पहली भूख है । दूजी सगळी भूखां पेट रो भूख  
 रँ मौमी भोछी है ।

० ०

## टैक्सो स्टैण्ड

पुष्पलता कश्यप

अनिरुद्ध आपरो विगड़यो स्कूटर मैकेनिक सूँ सावळ कराव रँयो है।

की ताळ पछे अक थी-व्हीलर वठे आयने दवेँ। लारली सीट मार्ये दोय जणाँ बैठया है। ड्राइवर मैकेनिक नै बुलाय नै लेय जावेँ। अक जणो खाथी-खाथी, उतावळें मुर में बोलतो रँवेँ। दूजोड्डे री आवाज ई विचाळें गुणीजें। दोनूँ रँ मंदे में मोकळी दारु पड़ी लखावेँ। स्यात उवार रो मामलो हे। मैकेनिक अळवत नरमार्दे सूँ बोलें। बँगो चुरारो करण री बात कैवेँ। वो मिनख बोलें - 'म्हने आज ई जोइजें। बल्कि अवार देन दे।'... 'देवट मैकेनिक कैवेँ'... 'टोक है, सिझपा ताई बसोवस्त कर देवूला। खायने मरें तो कोनी। लारले दिनाँ मांदो रँयगो। गैरज ई बन्द हो, नीतर कुणसी मोटी रकम है।' पछे टैक्सो गयी परी।

मैकेनिक रँ बावड्याँ बी रो साथी वूजें—'निसारियो काई कैवतो हो?'

'अरे यार, इण सूँ दोय सौ रिपिया लिया हा। म्है कैयो, दोय-अक दिनाँ में देय देवूला। पण कैवेँ हो, पइया अवार-रा-अवार काड! दारु मे टच हो साञ्जी।'

'बोञ्जी घनासेठ वण रँयो है!'

'अठी कोई नूँवो चालू मामलो है काई?' अनिरुद्ध उण सूँ यूँ ई वूझ लेवेँ।

'घणी ई है बाबूसाब।' वो अक सूगली मुळक सागै कैवेँ।

'स्कूल रँ पाखती गळी मे जिकी दोय है— वारो तो म्हने बेरो है। रावणाँ जात सूँ है। वाँ रँ अलावा ई कोई है काई?'

मैकेनिक अर वी रो वेली अक-दूजें कांनी भेदभरी मुळक सागै जोवेँ।

'हाँ, अठी अक नूँवो ठिकाणो भळें वणघो है। पच्चीसेक बरसाँ री। दोय साल हुया मरद चालतो रँयो। सुणाँ, कनेक्टरी मे बाबू हो।' मैकेनिक सावचेती सूँ

अठी-उठी जोयने भांपतो सो कैवै ।

'रोटी रे सांगे जिस्म रे तलव ई लागे । इण रे वास्तै दोनूं रो सवाल सामी हे । उमर रो तक, जो ई हुवै वावूजी !' मैकेनिक रो संगी कैवै ।

अनिहद्ध नै जिकी जाणकारी भिळ्ळ अर ठिकाने रो ठा पडै, उण सूं वी रो घडकणी अचाणचक वचती जावै । वो कंडे गतागम में पज जावै । वी नै विचार में पडवा लखनै मैकेनिक रो संगी आपरी सांगी रहप्रमर्था मुळक निषां होळै सोंक बोलयो—'काई वावू ? इरादो वण रैयो हे !'

'अज, भई देख लेवांल, इणनै ई ! नूंवी-नूंवी धन्धे मार्ये वैंठी हे, मामलो की सांतरो ई हुवैला, क्यू ?'

'अवै, म्हें तो किया-काई कैवां ! वो निसारियो ई दलाती करे ।' मैकेनिक कैयो ।

'अवै वावूजी, घर में मामलो चाले । सैक्यूं लुकै-छिपै, भीत सावचेती सूं ई करणो पडै । आवरु-शराफत ओढनै ई ।' मैकेनिक रो वैंली स्थिति समझाई ।

'वो कठै लघैला !'

'कुण ! निगारियो ? अठी सामी दार रे अड्डे मार्ये । साळी दल्लो ! मोटो सेठ वणवां घूमै हे ।' मैकेनिक आपरी आंठ काडी ।

'थै अठे ई आय जाया वावू ! शिक्षजा रा अठी टेम्पू स्ट्रेंड मार्ये ई लाधै ।'

अनिहद्ध नै पुरो-गुरो शक हुय रैयो हे, कठैई जा वी रे वी रि.तेदार रो घर-वाळी ई नी हे । दोय साल पैलां वां रो अचाणचक मोत हुयगी ही । हार्टफेल हुयो हो । सरकार नीकरी मार्ये हा । आपरै लारै जवान-जहान लुगाई अर दोंय नान्हा-नान्हा अबोध टावरिया छोड़गा । मकान सरकार लोन सूं हाल ई में बणायो हो । थोड़ी ई किस्तौ दीरीजी ही । नीकरी सूं जिको पइसो मिलणो हो उण सूं मकान-कुण रो बटाती हुयां पछे नाम मात्र रो राशि देय ही । विधवा मामी आधी जिन्दगानी पडो ही अर टापरों रो जिम्मेदारी ही सो न्यारी ।

गरकारी कायदे मुजब कुटुम्ब रे किणी अक सदस्य नै नीकरी मिळ सकै ही । वा भणी-गुणी आथ कोनी । महज पांचवी पास है । पीहरो गांध मे है । वां रे अठे टावरियां नै पढावण रो जन्म नी गमसिजे, अर नी इणरो रिवाज—जिको हाथ रोच नै लेय जासां, मतैई गितामसां ! वां रो निर्ग मे लुगाई जात मारु घर-गृहस्थी अर टावरों रो ई ज गमार है । वारै रो दुनिया भरवां रो हे ।

मोगर अर पूजा करमकाठी रो वात आई । भणियां-गुणियां प्रगतिशील ओंग विरोध फियो-जेड़ी कानी भीच मे जो रो नी हुबेणो जोडजे । इणो कौमी मे जिको पइसो घरघ हुवैला, वो इणां रे आडे बगत रो महारो-सबल वण सकै !...पण तर्कार रा फकीर दकिवानूसों लोग आपरों जिद मार्ये कायम हा, अंगाई नी मानी ।

स्याणा-समझदार लोग बिधवा नै नौकरी कर लेवण री सलाह दीवी—खाखी उमर मुंडै आगै है, अर जिम्मेदारियाँ रो सवाल सामी है। कोई जेक दिन री तो वात आय कोनी। सगळै मिट्टी रा चूहा है। आज रै स्वारथजुगं मे घर सूँ घर नी चात्या करे, आगौ कीकर विकसी ! नौकरी मिळ रैयी है, पछै हाथ आये अवसर नै गंवाय नै की रै ई आसरे गुजर करण री क्यूँ सोचणी। क्यूँ नी खुद रै पाण इज्जत री बसर बोधी जावै ? पण, अठै ई पोगापथी-पुरातनपथी आड़े आयगा—“आ कदैई घर सूँ वारै नी निकळी। आदमी कठैई आण-जाण नी दीवी। अन्न मरदाँ बीचाळै आ चपरासीगीरी किय्या करैली ? म्हारै अठै आज ताई जेडो कदैई नी हुयो ! देवर-जेठ, अर पीहरै में सै है, गुजारो हुय जासी।”

आज स्वारथ है, तो रिश्ता है। कोई किणी रो नी हुवै तो काई स्थिति अठै ताई पूगगी ? अनिरुद्ध घणी ऊँनी बान बिचारण लागो।

सिक्का रा बो गैरज जावै परो। मिस्त्री रो सहायक बी नै निसार सूँ मिळवाय देवै—“आँ नै रस सूँ रामी चाहिजै !” अर बो दाँत फाडनै लागै।

“अर धन र रस सूँ रम, क्यूँ !” जेक तगडो धौल उणरो भगराँ माथे जमावतो निसारियो कीयाँ ई हँसै लागै। पछै अनिरुद्ध सूँ बोल-बतलावण हुवै।

निसार मिस्त्री रै सहायक नै दान पायनै राजी करै। जब्बार भाई, जब्बार भाई ! कँवतो बी रै बाँध्याँ घाल्याँ, झूलतो सो वाँताँ करवो करै।

जब्बार टँकसी मे घी रै पसवाई बँठे। निसार झाइवर रै सागै आगै बँठे।

अनिरुद्ध नै जिण वात रो डर हो वा ई ज वात हुवै। टँकसी आणका वाळै मकान रै बाँरण जायनै ऊँनी हुवै। पछै ई अनिरुद्ध तयारो साहू वूझ लेवै—“कुण सो मकान ?”

जब्बार बतावै—“ओ ई ज है !”

अनिरुद्ध नै आस ही, म्यात अेन बगत ई मकान बढळ जावै। पण, जेडो की नी हुयो। ई-वर अर ‘काश’ उणरी अगाई मदद नीं कीवी।

अनिरुद्ध निसार नै टँकसी सूँ उतरतै नै बरजताँ कँवै—“ओ तो उण रो मकान है ! जाणघो ! !”

निसार कँवै—“थै इण रै रातर ई नी कँयो हो काई ?”

जब्बार बिचाळै बोल पडै—“बाबूजी नै स्यात किसी री उम्मीद हुयला !” अर बिद्रूपता सूँ दाँत काँई लागै।

अनिरुद्ध निसार नै रिपिया सूपताँ झाइवर सूँ कँवै—“टँकसी पाछी स्टैण्ड माथे लेयले !”



## पारखी

महावीरप्रसाद पेंवार

आज भंवरो घणो उणमणो हो । मुंडे काळमस छायोडी ही अर थेकेलो इस्यो चढघो के उठणे री ही आसग ही नी । आ वात नी ही के उणरी जिनगानी मे कणाई कोई सकट नी आयो, वण तो ज. म ही सकटा मे अर तकलीफां मे लियो हो । इतणे वरसां री जिनगानी मे फोडा घणां नै, मुग्र का छिण कम ही आया हा पण आज री दाई उण रं मुंडे काळमस कणाई नी छाई । उण हिम्मत कदेई नी हारी ही । सर्दा अलमस्त रंयो, आत्मवि. वास सूं भरचो पण रंयो हो ।

पण आज जद तीजी वार पंचायत समिति भवन रो उद्घाटन टळथ्यो उण रा पडपाता सा वैड्या हा । न्यू लखायो जाणे उण रो अपमान करण खातर ही ज उद्घाटन टळघो गयो हो । दो वार उद्घाटन टळयो जद ताणी तो बो सोचतो रंयो के जोग सजोग नी बैठ्या हा पण हमके उणने दाळ मे काळो निजर आवै लायौ । लोग नी चावै के उण रं कार्यकाळ मे इण भवन रो उद्घाटन हुवे अर सगमरमर रं पत्थर मार्य उणरो नाव पण आवै ।

दो सोचण ला यो के हे भंवरिया तूं कित्ती दौड-धूप करी के उद्घाटन टैम सर हो जावै । समिति रो एक काम नक्की हो जावै । कर्मचारियां री परेशानी खतम हूज्य, अर मनान भाडो नी लागे । समिति ने आर्थिक फायदो हूज्या पण सोची किण री हुवे ? विचारां मे उल्लेख गयो भंवरो । आज ताई वो 'काम' नै घणो महत्व देतो, मान-गम्मान रो कम ध्यान पण राखतो । पण जद सूं तीजी वार उद्घाटण टळथ्यो उणने ला यो के प्रधानी अर राजनीतिक भविष्य दोनू सकट में आग्या । प्रधानी तो खैर है ई कित्तीक दो मीनां और घटे उण रं कार्यकाल रा । स्यात् लोग दो मीनां और टळणो चावै इण काम नै । उण नै लारलै कई दिनां मूं इयां लखावै हो पण बो इण नै आपरं मन रो धैम मानतो रंयो । छेकड़ उण लग्गां री गोदयां ही फिट बँठी नै

भँवरे रै हाथ सूँ डोर निकळगी नै चरबी पकड़ेड़ी रेयगी ।

वो सोचण ताभ्यो मिनिस्टर इतणो भरोसो दिरायो हो पण आज किण री ज्वान पर साँच ठेरयो है ? वण मिनिस्टर नै साफ कैय दियो हो के दो बार किणी कारणों सूँ सजाँग नीं बैठयो है, हमकें आपरै हाथों ओ भलो काम अजाम माँगै । मिनिस्टर हँसताँ थकाँ कैवण लाया हा—जात पाँत अर ऊँच नीच री पार्टी में कोई जग्या नी है । कार्य री महत्ता देविज । ये निरभं रो, हूँ सागी टेम पूग जास्युं । भँवरे नै पक्को निमनै होय्यो केँ हमकें 'पचायन सगिति भवन' रो उद्घाटन थरपाँज्योड़ी तारोख मुजब ही हुज्या लो । इणी आशा रै साथे चहरै पर मुळक लियाँ वण गाँव अर लोगाँ नै खबर मुणाई ही । उण रँ आवणै रँ लगो-लग सातवे दिन मिनिस्टर सब रँ 'प्रोग्राम' कैसिल रो टेलिग्राम आ यो हो । आ किसीक हुई ? भँवरे पर तो घड़ाँ-घड़ाँ पाणी पड़ यो । अब परतख नै परमाण री जरूरत नी रँयगी ही । कोनी कणिया में सूँ कटगी ही । उणरँ हाड-हाड जचगी केँ लोग लारं पड़योडा है ।

जिनगानी री घटनावाँ अक-अक कर उण रँ सामेँ धूमण लागगी । लारं लागण रो सिलसिलो तो उण रँ ज' मरै साथे ई सुरु हु थो हो । बापू कैवता—“कै लाडी भँवरा ! तूँ ज'भ्यो उण रँ ला रहारी माळ साळ ऊपराँ चढे थाळी बजावती ही केँ उणी बेला ठाकर मुमानसिंह जी उर्न की मुजरत हा तो थाळी रो खुडकी मुण'र रीसाण हु या । अर ठमता-सा दकाल मारी ही — अे रडार क्यूँ रोळो करै किस्यो ना'र जाम लियो !” माँ ठाकरा नै नाराज नी करणाँ चावती ही सो चुपकेँ सीक हेठे उतर परी खुड्डी भाँय बडगाँ । का तो घर में रापा-रोळो माचरयो हो अर का स्यापो सो पडयो । आ तो ही घर में सुणी-सुणाई बात पण जदसै भँवरो समझ पकडी ही उणरँ याद ही केँ अकरस्याँ जद वो चोथी में भणघा करतो हो जद हडमान बामण रो वेठो राजियो दिनगै-दिनगै रोई में गाय घाल'र आवती वेळा उण रँ घर रुक जावतो, पटाई-लिखाई री बातों करतो वो सुनेख री घणी बडाई करतो । कनै उठताँ-वेठताँ भापला-चाकरी चढगी तो हूँ भी उणरँ घरे आवण-जावण लागयो । अकरस्याँ उणरो बाप हडमान पूछ लियो केँ छोरा तूँ किण रो है रे ? बापू रो नाव सुणताई उण री आँध्याँ लाल पण हुगी म्हानै दकालतो थकाँ कैयो— राजूडें रँ साथे घरो किण नै पूछ'र आयो । हूँ सँग-बैग हुग्यो । राजूडो तो रोज म्हारें घरें जावें हूँ तो आज हींज इणरें कैवण रँ कारण आयो हूँ । तो इण में इती नाराजगी कीकर ?

दूजै दिन नी राजूडो गाय घाल'र आवती बेला घरे ठभ्यो और नी ही म्हारें हूँ स्कूल में ज्यादा बात करी । ठाँ नी अक दकाल में ही कठे चली गई मगळी भापला-चारो । राजू म्हारेंसूँ दूर-दूर छिर-छिर करण लागयो हो । उण रँ मन में जात-पाँत रो अजगर फुंकारा मारण लागयो अर छोटा-मोटा सपळोटिया म्हारें भी मन में कुचमाद करणी शुरु कर दी । म्हानै उण दिन सै सूँ पैतो लखायो केँ आपाँ किणी

नीची जात रा बजा । हेच्या सून नीची साळ अर खुड्डी ताई नीची जात रा बजा । निवळा नै हीण बजा अछून बजा ।

भंवरे नै अनरी जवानो रा वै दिन भी याद आवण लाव्या जद देश मे आजावो खानर बापू जोर मे कोशिश कर रैया हा । च्याहें मेर 'अत्रेजो भारत छोडो' री गूज हो । उणो दिना कई उत्साही साव्या रै कौबण स्पू अक प्याऊ गांव रै मार कर रात-दिन बँवत गेल ऊपरो लगार् हींग जी पर पाणी प्याण नै लिछिये मंगी नै वैठावो होतो गांव मे ई'नी अस-पास के सँग गांवा मांय रोळो माच यो हो । लोग उणा'नै पूछण हुक्या के थान 'प्याऊ लगार म्हारो धर्म भ्रष्ट करण रो काई अधिकार है ? जणा हूँ अकही उतर दीन्यो हो सगळी जाना रा लोग आपर आगत जल्म रो गेलो भुवार तो म्हे ई क्यु नी म्हारो धर्मकरा ? लिछिये भगी रै हाथ सून पाणी पियाकिणी रो धर्म बिगई तो पाणी पीवो मतों । पाणी पीवां लिछिये भगी अर प्याऊ लगवण वाळी रो धर्म तो बडे, यो आपरो धर्म बडाण नै पाणी प्यावे थारो धर्म घटावण नै नी । उण नै याद है लोग रात नै मटकी फोड ज्याता, घडा जुडा ज्याता । अकरस्या तो प्याऊ रै ई तूळी लगव्या । पण उण दिना हवा मै गांधी री गूज ही अर ही म्हा मै जोश रो धधकती जवाला । अपमान री आग । जिण रै सेयोग सून भे लिनी इण सामाजिक बुराइया सून टक्कर ।

उण दिन री घटना तो याद आवता ही सगटा खड्या हूज्यावे । जणा ऊंट चढर ज्यावता वेळा गाव निकलता तीम च्यार जणा म्हारै वारकी फिरग्या अर ऊंट री सगाम पकड परा रोक लियो हो अर लाठ्या सून कूटणो शुक कर दीन्यो हो । जे मगळो वास्पात अर अमरोजाट नी आवता तो भँवरिया उण दिन खेल खतमही हो । पण विधना नै मंजूर आ ही ही के आज हूँ इती वडी तहसील री पंचायत समिति मे प्रधान वणू । वा रै किस्तत ? क्यु तो प्रधान रो जिला प्रमुख मे जीतणो हुवे अर क्यु म्हारै हाथ पडे आ प्रधानगिरी ?

भंवरो सगळी हकीकत समझयो हो के उण नै इती राजनीति नी आवे के बो इणतरा आपरो गोटी फिट कर परो प्रधान वण ज्यावतो । आ रोल तो आ चतुर विधना ही रच्यो हो के लारली साल एक पच रै चुनाव मे हारण वाळो गिनध अबके चुनाव जीते अर जीत तो ही ज्यावे अर जिता प्रमुख तक वण ज्यावे अर उण री जग्या म्हा उप प्रधान नै मिले प्रधानगिरी । है घण करोक जोग संजोग पण लोग समझे राजनीत रो 'पारखी' ।

विचारों रै भँवर मे फँस्योडो भँवरो मौजूदा संकट रो निपटारी सोचण लाव्यो । किणस्पू करावे उद्धाटन कीकर देवे जान पातरै समर्थकानेमात ? कीकर राखे पारखी री साज ? है कोई तेलो राजनीति में ? कीकर राखे बापू रै आदर्शा नै जावता ? विचारारै समन्दर मे गोता लगववनो ठेठ बेदा रै तळ ताई जा प्रम्यो । पूछण लाव्यो के बेदा रा रचयिना बेदा री घरपणा इणी'ज उद्देश्य सून करी ही के के लोग छुआछुन

करैला । समाज अर राष्ट्र को समय अर धन व्ययं करैला । उल्लाखैला नित नूँवा  
जाळ । धकलेला देश नै लारै और लारै । झुटलावैला आदर्शो नै । आपरै  
अहम् री तुष्टी खातर, माडै-मोटे स्वार्थ खातर । छेकड़ सोचण लाग्यो, लड़सूँ  
अर लडतो रिस्यूं म्हारी हिम्मत सारु इण बुराइयाँ सूँ । छेकड़ वो तेवड़ली अर करड़ी  
तेवडली आगले मारह दिनाँ मे उद्घाटन करवावण री अर उठ यो किणी उद्घाटन  
कर्ना गूँ वान करणनै । दूड ति चै रै मार्यै । गोनो अँकर फेरुं चढग्यो पारस  
मायै ।

.. ° °

# जैसलमेर की हवा

गौरीशंकर व्यास

मार'साब भोकाराम एकदम सीधा आदमी, नाँव जिसा बुण, भोळा हिया रा, पेटे पाप नी, मिनखों री सेवा करता अर आपरे काम धँधा मे मस्त रँवता, न तो किण री हरी मे अर न ही किणीरी भरी मे । नौकरी करता-करता तीस बरस पूरा करधा पण मायो घालण नँ चावरी कोनी अर पँसा-टका तो घर मे भूआजी फिरघोडा । लावे अर खावँ, महीन । म बीस तारीख माथे तो जेव एकदम छाती ।

इतरो होवता थक भी मार'साब रे मन मे जोश । एकण तो फुटवाल रो मँच खेलता एक पग रे खोड आयगी अर हुमेश रँ खालर हाथ मे लकडी रो सहारी लेवणो जरूरी हँ गियो । शरीर सँ एक पसळी रा पण क्रोध तो परमुराम सू ई घणो, दिन-रात घरे अर स्कूल मे चिडता इ रँ बै ।

मार'साब रँ सेवा-निवृत्ति रा दिन नेडा आय गिया । इण सँ विचार करघो कँ इतरा दिन तो किराया रा मकान माँय निकालघा पण अबँ कठँ रँवोला । इण सार काचो-पाको मकान तो बणावणो जरूरी है । उणो रँ गाँव मायने एक छोटो प्लॉट आमोडो सो विचार करयो — जीवड़ा गाँव मायने इज रे'वण मे सार है । उणा आपरो ट्रासफर गाँव माँयने करावण री सोची, अर आगे कार्यवाही करी । सरकार रा नियम कँ सेवा-निवृत्ति रँ दो बरस पैला कर्मचारी ने आपरी प्रसन्ध रे ठिकाने लगावणो सो नियम रे कारण मार'साब रो ट्रासफर उणा रे गाँव माँयने होय ग्यो ।

मार'साब जौ.पी एक अर स्टेट इन्सुरेन्स रा पईसा मकान माथे लगावण रो विचार करघो अर आपरो प्लॉट जिण माँय मिनखों कब्जों कर लियो, खाली करावण री सोची । कब्जा करण आळा सँ बात करी अर हँ हा गाँव रा ठाकुर रामसिंहजी । मार'साब कहघो तो बोल्याजा रँ अठा सँ— आयो है कब्जो मायण

आजो, थाने-जिसा तो कई फिर, घणो करघो तो हाथ-पग तोड देमूं। मार'साव देख्यो-नकटा मू आगा भला। अपारै तो कानूनी कार्यवाही कर प्लांट रो कब्जो करण मे सार है। दूजें दिन इ सरपंच मूं बात करी पण सरपंच पक्को दारु खोर, चौईम घण्टा दारु मायने फिट होयोड़ो रें वै।

मार'साव सूं कयो—मार'साव नौकरी करणी भारी पड़ जासी, वो दिन आवतो हो या अर प्लांट मायें कब्जो करण री हुम्मत कर रह्या हो। मार'साव बोल्या—साहब मैं तो इण गांव रो इज हूं, तीस वरस नौकरी करता बिताया अब मैं म्हारै गांव मे रेंवणो चावू। प्लांट म्हारै बडेरा रो है। सरपंच बोल्या—थे चुपचाप जावो परा क्यू कुता री मौत मर रह्या हो, अठै तो कोई फटक कोनी पडै पण थारै खावण रो फाका पड़मी। आ जमीन पचायत ठाकुर रामसिंहजी ने बेची है जिण रो पट्टो अठै मौजूद है।

मार'साव सोच्यो—जीबडा म्हारो प्लांट अर पचायत बेच दियो आ बात किकण हो सकै। घरे आयने घरवाळी सूं बात करी वा बोली थे गैला हूं गिया कोई सरपंच सू टक्कर लेवो, सरपंच रें उपर भी तो बैठा है, कोशिश करो, जीत हु वेला।

मार'साव कह्यो—मगळा रा पेट पापी है, उपर वाळा तो बाको फाडनै बैठा है पइमा बिना बात इ कुण करे।

मार'साव सरपंच रें खिलाफ लिखा-पढी करी तो सरपंच नाराज है गियो अर एम.एल.ए मूं कह्यो कै इण मास्टर नै अठा सू हटाओ।

नेता लोगी रे कान है पण शान नी, सो कह्यो—ठीक है सात दिन माय ओडेर हो जामी।

एक दिन मार'साव स्कूल सूं आय ने बैठा इज, जितरा में तो पोस्टमेन आयो। मार'साव उणरे हाथ मे खाकी लिफाफो देख्यो तो डबका चढ्यो, प्रेपक री मोहर देखी तो सचिवालय, जयपुर, मार'साव रा हाथ धूजण लागा, लिफाफो खोत्यो तो शिकायत मायें ट्रांसफर अर व्ही भी जैमलमेर।

मार'साव री आंग्र रें आगै अंधारी आयगी अर अचेत होयने धडाम सूं फर्श माथे पड्या। धडाम री आवाज होवता उणोरी घरवाळी दौडती थकी आई अर बोली—कई चै गियो।

ठण्डो पाणी छोट्यो तो अखा खोली, बोल्या—जैसलमेर रो आडेर आवे है। वा बोली क्यू। सरपंच नाराज होवण सूं उणरी घरवाळी कह्यो थे तो केवता कै दो साल पैला आपरै गांव मायने लगावण रो नियम है अर थाने तो लगायो वाद हटाया है।

मार'साव कह्यो—पण किकण ने केवू, कुण सुणे।

कोशिश करो अर लिखापढी करो, यू अचेत होवण सूं तो कई होसी।

मार'माव बोल्या—मूँ नो ओ दज दिश्व के जैमलमेर री हवा बुलाप  
माय खावणी पडगी ।

उणो री घरवाळी कह्यो—घारे मन मे है तो आ भी देख लो अर नरो  
जैमलमेर री लैयागी ।

दूजे दिन ई मार'माव बोरी-विम्तर बांध अर जैमलमेर धीर :है गिया ।

गाँव रा मिनग्य विचार करण लागे के आ कार्ट चान । आषा अर बेग जावत  
इ दिखधा ।

००

## लघु कथावाँ

उदयदीर शर्मा

[ 1 ]

दिवलो आपरें पूरें जोग मूं जगमगाहट करे हो अर पतगा आय र थी री तो मे पड़े हा, बळे हा, जीवण होमै हा । दिवले रै भावै ही कोनी कँ कुण पड़े हँ अर कुण बळे है । इणो-इणी जगमगै । जणा एक नुई पैमनियो पतंगा नै कयो, पतगो, दिवलो तो आपरो अस्तित्व राखण ताई बळे पण थै धारै अस्तित्व नै केटण ताणी कयूं बळो ? यो कोई प्रेम होयो ?”

पतगाँ माँय सूं एक स्याणो पतंगो पडूत्तर दियो, “वा म्हारें बड़काँ री बतायोड़ी सीख है । बड़काँ री रीत पाळोँ हा । रीत सूं टळणो जीवत मरणो है ।”

या सुणताँ ई वो नुई फँमानयो बोल्यो, “भाया, गैलो है तू । इब सँ आजाद है । तन्नै देरो कोनी कोई ? बड़का री पुराणी रिवाजाँ छोड़ो । इब मरणे री दरकार कोनी ।”

[ 2 ]

हरसनाथ भँलँ रा दरसन करण ताई प्हाड पै चढता जा रघा हा । साथ में पुजारीजी भी हा । मारग मे सडक रै नेड्डे टेढा-मेढा रच्योड़ा भाठा रा घर कूँडिया बण्योड़ा पडघा हा । वा नै देखर मन मे विचार आवणा सरु होया । पूछणै पै पुजारी जी बो त्या, “आणिया-जाणिया जातरी आगले जलम मे घणा सीवणा फूटरा अर ओपता घर पावण री अभिलाखा मे ये घर बणार जावै । भगवान वाँ री आस पूरै लो । यो भगतताँ रो बिमवाम है ।”

मेरँ भी बात जँचगी । लोभ जा-यायो । मै भी दूर जा र एक टेकडी पै चोखो अर मांतरो घर बणावण लाभ्यो । साँचल मोदरा हिलोर मन में आवँ लाग़ा ।



भविष्य की कल्पना में गोता लागे गागा । आँध्याँ रँ सामी हरय नाचै लागो । घोड़ी देर में आँध्याँ सामी अचाणक रँचण होयो अर द्र तक मकान घणा र गयोड़ा जात्रियाँ री आतमावाँ मेरँ सामी ऊनी होयगी । मैं घबरायो ।

वै आतमावाँ एकर साथै बोली, "अरँ भोळा काँई अळगो मकान चिण रँ । तेरँ स्पारसा घणा ही मकान चिण चिण आगे कया गया है । बाँ री काँई गन दुई, कुण बतारै । तू तो सुगरथ कर । धरती पँ चान । आपरी भुजावाँ री आम रात्र । काँई पडयो है, झूठा-भाठा भेळा करण मे । म्हे ई पिसनावाँ हौ । म्हागे करणी पँ ।"

एक झटो मोँ लाग्यो अर च्यानणो हटगो । मेरँ नेई पुजारीजी ऊभा हा ।

### [ 3 ]

मन्दिर में भगवान की भुगत कै सामी भगत बैठयो । दिक्को दीप । दिक्को री जेत में भगवान रो रूप घणो ओपै, गैणा भळाहै, पोसाक परकाम में घणी झिन्-मिलाट करै । भगत भगवान में ध्यान धरना धिर भाव मुँ विराजमान ।

घोड़ी देर पाछै भगत रो ध्यान टूटयो । चालै मेरँ अँधेर भुष । दिक्को विसराम करै, पुजारी आप रँ और धरँ लागरयो । भगत नै अंधकार में भी भगवान री भूरत घणी भळभळानी दीमी । भगत री आतमा धिलगी, भगती रम में गोता खाँवतो भगत आतम विभोर होययो । परमातमा आतमा रँ नेई आयगो । इमरत री बरपा होवै लागी ।

दूजी छिण भगत री भौतिक भावना जागी तो बो ई अंधेर भुष, भगवान री भूरत भी अंधकार में लोप होयगी । भगत घबरायो, पंगीना आयगा, बठा सँ भाग्यो अर सीधो गुह चरणाँ में आय बैठयो ।

गुरजी भगत नै हुयँ दरमाव री मारी कथा सुणर बो-या, "भगत, शुद्ध आतमा नै साँचै देव रा दरमण हुवँ अर साँसारिक नेतना जाम्या फेर अन्धकार ई पालै पडै । तू साधना राख मफलता मिलगी ।"

### [ 4 ]

रोही में सेठाँ री गायँ चरती-चरती दोपारी री लाय मुँ बचर्ण ताणी आप आप री मोज में आर हपाँ तळीँ बैठी उगाळै । बाँ रो गुवाळ भी एक जाळ रँ झुरमुट में बैठयो मोद मनायै, दोपारी टाळै ।

और गुवाळिया भी मेलता कूदना बठी नै आ निकळघा । एक गेरो रमझोळ हुययो ।

अथाई करता-करता एक गुवाळ एक गाय कानी देखकर पूछ बैठघो, "गाय

माता, तू मोटी ताजा हुयरी है, तन्ने चोखो खाणो-दाणो मिले फेर भी आँखइली आँसुवाँ सूँ तर क्यूँ ?”

गाय बोली, “मैं तो दुनिया रँ ओछंपण नै देखकर रोज़े । या सुवारथी दुनिया कइया चालसी । इण नै आप आपरो ई दीखँ । काळ सँ नै खारघो है । ढाँडा मरघा जारघा है । फेर भी दुनिया आपरो पेट मोटो करणँ में लागरी है । चील-काबळा घापगा पण मिनख को घाप्योनी ।”

## नेह रा द्वीपां री खोज

### उपा किरण जैन

14 अप्रैल 88: घणां दिनां सूं लिखणूं चाह कर भी नीं लिख सकी । मनइो टूट्यो टूट्यो अर बिखर्यो बिखर्यो सो लाग रियो है । सौचूं हूं सबदां रा माध्यम सूं मन री टूटण नै उतार द्यूं कागद पर । लेखनी री डोर सूं सबदां नै बांधू पण नी जाणै काई बात है कै लेखनी अर सबद दोन्यु ही भिसणता चल्या जावै है ।

15 अप्रैल 88 जीवण री धारा रो प्रवाह अवारतक जिण द्वीपा रै नैडा सू गुजर्यो है जाणै क्यू वं सारा रा सारा द्वीप दु ख पीड़ा अर तपण रा ही रह्या है । कदे कदै जीवण री धारा मे औ अतरा घणा हो गया कै सारा विश्वास डगमगावा लाग गिया, सारी आस्था झकोळा खाण लागी । मन विचलण रा भंवर में गोता खाण लाग्यो फेर भी आसा रो दामण नी छोड्यो अर लगातार खोज रैया हूं विश्वास, आस्था, नेह अर आत्मीयता रा द्वीप ।

21 अप्रैल 88 : आपणां समाज में आये दिन नारी रो शोषण, पीड़ा अर सन्नास री याता मुणवां नै मिळै ,अर आं सबळी याता वास्ते पुरप वर्ग नै जिम्मेवार ठहरायो जावै है पण म्हारी मानता है कै नारी ई नारी रो शोषण करै । आ मानता काल और घणी पक्की हुयगी जद बेरो चाल्यो कै कम दायजा रै कारण बांकी सामू ही वीनै जळार मार दीनी ।

25 अप्रैल 88 : काले इस्कूल मे पढ़ाती बघत अचाणचक अतीत रा कई मामिक चितराम सामे आणल म्या अर में अस्माने बघत अर वातावरण री परिधि सूं दूर वां में डूबण लागी । जाणै कदै म्हाने के होण लागे हैं को बँट्या बँट्या कोई भी काम करतां बघत अचाणचक अतीत में डूबण लाग जावूं । म्हाने लागे है कै अतीत रा अे चितराम म्हाकी सोच नै सकड़ा दायरा में बैठा कर दैवै है ।      ० ०

ब्रह्मात्र



## छन्द राव जैतसी रो

□ चन्द्रदान चारण

राजस्थानी में वीर-काव्य ग घणा ग्रन्थ है। आ गौरव ग्रन्थों में एक बीठू सूजा रो 'छन्द राव जैतसी रो' है जको राजस्थानी की एक महताऊ रचना है। यूँ तो इयें नाव की एक अणजाण कवि की रचना भी मिले है पण दोन्यां रो विषय अर घण-करो वरणन समान है। आं दांन्यां में ज्यादा महताऊ बीठू सूजा की पोथी मानीजे।

इयें ग्रन्थ की रचना संवत् 1591-1598 ई वीच कोई टेम होयी, आ मानीजे। इयें में कुल 401 छन्द है जका में 385 पाषंडी, 11 गाहा, 4 दूहा अर 1 कळस है। ग्रन्थ रो नाव 'छन्द राव जैतसी रो' है पण इयें में बीकानेर रा नरैस जैतसी रो ही एकलां रो वरणन कोनी। कवि जैतसी ई वरणन मूं पैली उणा रा बडेरा—चूंडो, रणमल, जोधो, बीको अर लूणकरण रो भी वरणन कर्यो है। डिगळ ई वीर काव्या में एक पद्धति आ रैयी है कें काव्य ई चरित-नायक मूं पैली उण ई बडेरां रो भी बखाण कर्यो जावै। चूंडे मूं लूणकरण ताई रो वरणन तो थोड़े में ही है पण ओ उणां रो वीर चरित्र पुरो उजागर करै। पोथी रो नाव 'छन्द राव जैतसी रो' इयें वास्तै राखीज्यो है कें इयें की खास घटना राव जैतसी अर मुगल बादस्या बाबर ई छोटै बेटे कामरां की लड़ाई अर जैतसी ई हार्थी कामरां की हार है।

काव्य की कथा राव चूंडे मूं सुरू होवै। चूंडो, रणमल, जोधो, बीको अर लूण-करण कियौ लड़ितां लड़तां आप रो राज बढायो अर मोको आर्यां साबै राजपूत दाई राजी राजी लड़ाई में ज्यान दे दी। इयें रो बखाण करणै ई बाद कामरा ई हमलै रो जिकर है। बाबर ई मरणै ई बाद कामरां ने लाहौर अर कनै रो इलाको मिल्यो। बीकानेर रो सुततर राज कामरां की आँख्यां में कौटै दाई चुभण लाग्यो। बी फौज ले' ई पैली बीकानेर राज ई भटनेर ई गड पर हमलो कर्यो। मुगला की

फौज भोत बड़ी अर ताफतवर ही । कवि इयै चासती फौज रो वरणन इयै भीत  
कर्यो हे :—

किय हूकळ बंचल कलल, गय त्रावक गडवक ।  
दरस्यो सरि मुरिताण दस, चल चल ध्यारे चयक ॥

दस मुरिताण जाण डूंगरि दव,  
कंपी घरा हूइ प्रज सवप्रव ।  
अह मुरिताण आवियो अवयरि,  
करन तणा ऊठिय गज केसरि ॥

भटनेर रो किलेदार सेतभी काधत हो । वो मुकनबलो कर्यो पण इत्तो बड़ी  
मुगल फौज नै कियो रोकतो । वो जव किले नै तहस-नहम होता देख्यो तां गळें मे  
तुलसी रो माळा लै 'र हाथ मे तरवार ले' र वो बैर्यां पर टूट पड़्यो अर लड़तो  
लड़तो धोरगत पायो :—

चड़िया नीसंरणी घड़ीचोट, काबिली कटके भेळि कोट ।  
सनान करे साऊ सकार, हीडोलिय तुलसी कंठि हार ॥  
मुरिताण तणा सेलार सवख, लखमूलइ ऊगरि लूंबि सवख ।  
छेलियो नेतसी रगग छोहि, लसकरी लाख ऊपरं लोहि ॥  
पड़ियो रिणि खंतल पिसण पाड़ि, मालहरि चाड़ि धज मारवाड़ि ।  
काघाल किदाह वसो करेय, लोपियो मीर भटनेर लेय ॥

भटनेर जीत 'र मुगलांरी फौज वीकानेर कानी चाली । कामरां राव जंतसी नै  
सन्देसो भेज्यो कं एक किरौड़ कपिया अर एक बीनणी ले' र म्हारै आगै हाजर हो ।  
आ वात मुण 'र जंतसीरी अखियां लाल होगी । वो कामरां नै हराण रो संकल्प कर'  
र लड़ाई रै मैदान मे मिलण रो जवाब भेज्यो । जव मुगल फौज वीकानेर नगर रै  
कने पूगी सो रण-चातर जंतसी किस्सो छोड़ दियो । इत्ती सोरी जीत पर मुगल  
फूलग्या । बडीनै जंतसी चोखो मोको देख 'र' 109 घुड़सवारां रै साथे आधी रात  
नै मुगलां पर छापो मार्यो । दोन्यां पखां मे गभसाण मवायो । आखर मे मुगल  
हार' र लाहौर कानी भागग्या । इयै तरीके सूं जंतसी मरुधरा नै मुगलां सूं आजाद  
करायी अर कामरां रो जीत री हूस, धन रो लोभ अर कमीणपणै नै आपरी तर-  
वार री धार सू मिटा दियो ।

काव्य रै सरू मे मंगलाचरण हे । सस्कृत कवि काळिदास रै 'रघुवंस' दाई इयै  
में राजपूत जाति रै एक ही कुळ रै कई राजावां रो बघाण हे । प्रधान रस वीर  
हे । इयै मे नगर, पहाड़, सूरज, चाँद, रात, सुबै—साँस आद रो वरणन हे, पण  
आ रचना महाकाव्य कोनी । इयै मे खास तीर सूं जंतसी रै जीवण रो एक सब सूं  
महताऊ घटना रो बघाण हे । इयै वास्तै आ रचना एक खण्डकाव्य ही हे । इयै में  
कोई सक कोनी कं खण्डकाव्य री निजर सूं आ डिगण रो पैलै दरज री पोधी हे ।

बीठू सूजा आपरो पोयो में मुगलाँ रें घमण्ड अर जीत री तूण्णा रो बखान करतँ राजपूतँ री बादरी जलमभोम रो प्रेम, स्वाभिमान, जाति-भौरव अर बलिदान रा फूठरा चितराम उकेरया है। लडाई रो वरणन भोत ही फटवतो, सजीव अर यथार्थ है। ओ कायरँ में भी जोस पैदा करे। रणभेरी री आवाज, सिपायँ रो रोळो, बादराँ रो आपस में वार, रंड भुंडँ रो धरती पर गिरणों, लडाई रो मैदान खून सूँ लाल हो ज्याणे, कामराँ रो भागणो आद चितराम पाठकाँ रें सामी साकार हो ज्यावै :—

ताणिय कंमाण कनाठ तूंग, वाणाडलि अडिय लोहि वूंग ।  
जइरँम जपिय हीडूँ जणेहि, घातिया ताँम घोड़ा धणेहि ॥  
राठडाँडि रोलि रेवंत रघ, बिछूट जाँणि संकली वध ।  
पतिसाह सेन हुवतइ पगेहि, मायँ असि चाडिय मारवेहि ॥  
खाफराँ जइत चाहई खडग, यासदे जाँणि बने विलग ।  
ऊतरा सेनि जइतउ अवीह, सीघरे पईठऊ जाँणि सीह ॥  
धडहई डोल धूजईँ धरति, पड़िया लगि वरसइ सेइपति ।  
वीकाहर राजा ईद बगि खाफराँ सिरें खिविया खडगि ॥  
रडवइईँ रूँड खाँडे विखंड, ताजियाँ तूंड पड़िया प्रचंड ।  
सँ धणी भोमि वाहरू सीत, देवताँ राव पाइइ दईत ॥

कया नै रोवक वणाणँ धानर कवि लडायाँ रें बखान रें अलावा बीकानेर नगर रा सोवणा अर मनमोवणा चितराम उकेरया है, "जागाँ-जागाँ कोयल सी मीठी बोलणहारी लाजवंती गोरइयाँ रा झुंड दीसे। अठे रा बादर बाँका है। नगर रा बाजार घन-घन सूँ भरघोड़ा है। तालाब पाणी सूँ लबालब है :—

तारुणी सऊजल सेत दंत, वाँणी सुवाणि नै लाजवंत ।  
सोहिली भोमि वाँका सुभट्ट, झुझार दियँ करिमाल झट्ट ॥  
लाखीक मिले माँडही लोक, चउहट हाट माँणिक चौक ।  
अंतरी गवख ऊजला ओप, अंमली कोट खाई आलोप ॥  
नेहलीं नीर भरिया नयड्ड, वाँकी दुरंग पाखी बिहड्ड ।  
सारीख जइत सुगितीण साज, रामावतार राठउउ राज ॥

कठे कठेइ कवि रो बखान सीव सूँ धारें तागै। वो जैतसी नै सहदेव रें समान बुद्धिमान बताने अर उण रें राज रें अमन-चैन अर धनरी तारीफ करतँ उवें नै राम राज रें समान माने। इतो ही नीं, वो कामराँ सूँ मरुधरा री मुगती नै राबण रें हाथाँ सूँ सीता री भुगती कैवै। बीठू सूजा राव जैतसी रो दरवारी कवि है इयँ वास्तै आप रें राजा रो सरूप क्यूँ बढा-चढा' र दिखायो है।

काव्य रें हिसाब सूँ 'छन्द राव जैतसी रो' एक बड़ो महताऊ अर सरावण जोग ग्रन्थ है। इयँ में युद्ध वीर रें सार्यँ दानवीर अर दयावीर रा रूप भी दीखै। वीर-



भावना रो इस्यो उदात्त रूप राजस्थानी काव्य में दूजी ठीड़ भोत कम मिलै । कामराँ अर राव जैतसी रो लडाई रो चितराम तो सनिमा दाई पढणै वाळी रो आँख्याँ आगै घूम ज्यावै । इयै रो भासा डिगल है अर संस्कृत रै तत्सम सबदाँ रो इयै में पैली रो रचनावाँ सूं ज्यादा प्रयोग मिलै । जरूरत रै मुताबिक कवि अरवी, फारसी रै सबदाँ नै भी काम मे लिया है । अलंकाराँ में कवि उत्प्रेक्षाँ, उपमा अर रूपक रो सब सूं ज्यादा प्रयोग करघो है । दूजाँ अलंकाराँ में अत्युक्ति, धमक, अन्वय आद गिणावण जोग है ।

'छन्द राव जैतमी रो 'चरित्र-प्रधान कोनी, ओ तो घटना-प्रधान काव्य है । इयै मे तरह-तरह रा वरणन है । लडाई रै अलावा घोड़ाँ अर मुसळमानाँ रो कई जातियाँ रो मरूप अर सुभाव रो वरणन कविरो घास जाणकारी सिद्ध करै । जे आँ वरणनाँ नै ज्यादा महत्त्व न दियो जातो तो काव्य रै नायक रो चरित्र ज्यादा उजागर होतो ।

इयै रचना सूं उण टेम रो कई बाताँ मालूम होवै । राजपूत आपरो आण खातर ज्याँन देवण नै त्यार रैता । वै लडाई मे गरणो मंगळ मानता । राजपूत बादर तो हा पण आपस रो फूट अर कनह रै कारण वै एको करबाबर रो मुकाबलो कोनी कर सख्या । राजपूत राजा बीर होणै रै साथै दानी अर घरमात्मा भी हा । काळ पड़चो जद लूणकरण आपरो जनता नै धन वाँटचो अर गरीवाँ नै खाणो खुवायो ।

"छन्द राव जैतसी रो' इतिहास रो निजर सू भी घणो मोल है । मुसळमान इतिहास लिखारा जैतसी रै हायाँ कामराँ रो हार रो जिकर कठई कोनी करघो । पण "जैतसी रासो" नैणसी अर दयालदास रो ध्यात अर सिलालेखाँ सूं इयै घटना रो साच चौडे आ ज्यावै । आ लडाई संवत् 1591 मिगसर वदी 4, सनिवार नै होई । कविरो आ रचना इयै रै करीब एक बरस बाद लिखी जी, इयै वास्तै इयै में लिखयोड़ी घणकरी बाताँ साची है । डा० गौरीसंकर हीराचन्द ओझा, डा० दसरथ शरमा अर डा० रघुवीरसिंह इयै नै बीकानेर रै इतिहास रो निजर सूं एक महताऊ रचना मानी है ।

००

## आपां रै गांवा रौ हस्त-शिल्प

□ नानूराम संस्कृती

गांवांरो शिल्प हाचां रो हुनर, जको हस्त कळा नांवे घणो उधो-मानीतो है। आपणें अठे राजस्थान रै गांवां मे पुराणें जुग सू हादां रै हुनर रो बणियोड़ी चीजां-वस्तां; मोकळें मोरख-गुमान सू धिलायत तांई पीची है। उणां रै जरियें सूं अठे अनेकूं उद्योग—घघा अर हस्त-कळा कौशल बध्या-पनप्या है। सैग वरतारां नगर-कस्बा रा दक्ष जमारा आप री हाथ कारीगरी सू चोखी चीजां बणावण रै चाव उपाव में देश प्रसिद्ध हुया है।

. हाचां रै कामां रो इतिहास डाढो जूनो है। द्रयें कौशल रो जलम मिनखाचारें सूं पूरो जुडियोड़ी है। आ : कळा आदमी री संसारी चेतणा अर आदू सम्यता री ऊजली उपज कही जावें। पैलपोत-बंदो जिनावर जूणी रो बाण सूं ऊपर उठर आत्म च्यानणें कानी झांको, उवें रै हिडदें में हाथ रै सुकारजां री नूवी जोत जागी। जद आदमी घास-फूम अर भाठा-दगडां मे माथो मारतो घको अणवकियें बटावू दांई संस्कृति रै मारग नै बिकसावू बिचारों सू बुहारतो बघ्यो। आगे सूं आगे उपयोग अर अनुभव रो आधार लियां होलें-सुस्तें आपरी चीजां रो फुटरापो बघारतो रयो। उवें निर्माण धंधां रै गैलें, काल, क्रम री दीठ-जोत हाथ शिल्प रो बिकसाव प्रतख झळक्यो-पळक्यो। पाषाण, गाभा, लोह-लकड़, लाय-संघिया, हाथी दांत, माल-माटी, खाल-खुर अर मोग-भींग आद वस्तुवां रा सम्य-सळघा उद्योग पनपणें लाग्या जद उणा चतर कारीगरां प्रगति पगोठां सू सोनो चांदी ही नही-बधिया गैणा मे रतनां री जडाई री बडाई कारीगरी दिखाली अर आदू वस्तुवां री सैग कळावां सोजी-सरजी। उवांरो कुशल चतराई उपयोगी कळा अथवा हस्त-कळा कैवाणें लागी। बाकी लारें काव्य कळा, संगीत कळा, चित्रकळा, मूर्तिकळा अर वास्तुकळा इत्याद नांवेरी आधी सुभाखी सुहणें सजण रै उण्यां रै ललित कळा रै नांवे

गिथीजी। राजस्याम हस्त कळायां रो रुडो रतनागर, उर्वरा गांव सम्पता अर संस्कृति रा नाळा-व्हाळां चालें। संसारी स्याणन-मोजापें में अगुवा मालें अर मिनघापें री जरूरतां सारु सकड सधे-वधे। अन्न-जळ मिनघारो-जीवण हवें, जकां वेगी वासण मोडा हरवपत हाजर रावणा पडें। वें: आया गांवांरें पुराणें हस्त कौशल्य में वधका ठांव घणा मिलें। लायो घोरो, काळीबंगा अर रंग-महल जैदा स्थानां री पुदाई में आपणें अठें माटी री कारीगरी रा पुराणा वासण साध्या— वें: मानवी सम्पता रा नमूना मान्या गया है। उणांरी भात-भंतीळी डिजाइना में आछी शिल्प रो काम ऊपडें। आज हो सँग गांवां मे माटी रा शिल्पकार माटा कुम्हार घडा-माटकी, हांडी-विलोवणा, चुकलिया-चाडिया, लोट्टी-कूजिया, दीवट-घुडला अर परात-मखाणियां घडी चतर कळा-कारीगरी सू रंग भरो कोरणी रा वासण वणावें। म्हारलें गांवां री माटकी अर गोहर रा प्यालिमा-वटोरदान माटी री उपयोगी कळा शिल्प मारु आपां रें अठें सरय जागां चालें चडें। पण वेळासर री माटकी अर पाणो घाल्यां फाटगी' री कंवत ही कूडी नी है। 'कुलालेभ्यो नमो।'

गांवां मे दूजी किसव-कळा, मूत-ऊन रें गाभांरी गुण गरिमा घणी मिही किसत उपलब्ध हवें। मिनघाचारें में वरतारें सारु गाभा पेंरणें री हुस्कारी एक उपयोगी शिल्प रो सम्भ तरीको है। आडू माणस हंघारें पानकां पछें; अकर घालडें रा गाभा धारघा—पेंरघा ! हळवा-फळवा कारजां सू आर्ग कड' र मूत-ऊन रा तार वणावणा सीक्या अर कचरो-चरखें सू मूत ऊन कातण रो धंधो पळायो। उवें समें समाज निरमाण रें कामां मे घर-परवार रो स्याम-घणो ऊंचो हो। निरमाण विद्या ही समेंरो शिल्प ही। हम्में उवें वातां नही रही, पण आपां रें गांवां मे सरबजाण चतर लुगायां-घाबला, लोवडी अर चूनडी जैडी चीजां हायां काठें-चांधें अर आपरो सिणगार सजें। टावरां वेगी घुंडी-काकरिया अर तागडी गुंधें। झुगलियां-बुगतारघां माथें ऊंटिया टोळी नें रंगीलें डोरें-कोरें काडे है। आपरी कसीदाकारी कळां सू घाबळा-लोवड्यां अर कांचळी-फतुयां मे कांच, भीगां रा डोडा अर चिरमी लालां चौभें तथा मिणिया-मोती लगाव नें भळकावें। इयें कामां गांवां री वूडी माता बंनावां तो केई डाडी चतर हवें। चीठां पोवें अर गजरा गुंधें ! उवें बांटियां सू हायां लुंकार रंग लेवें अर घरां नें पोते सेंवारें। चरखो कातण रा कार ही गांवां रें मोकळा घरां में हवें। इयें उपयोगी धंधें नें गांवरी महिलावां हरगज भून नीं सकें। उवें कातती धकी गावें—

चाल रे चरखला, हाल रे चरखला

ताकू तेरो सोहणो, लाल गुलाबी माल

शरकूं-मरकूं फिरें घेरणी, मघरो-मघरो चाल

चाल रे चरखला चाल हाल रे चरखला हाल

चरखें रो सरजाम-ताकळो, माल, घेरणी, गुडली, घमरख, दमकडो, ताडी,

कुकड़ियो, पूणी, तार इत्याद अनेऊं शब्दांग है। चरखो चलाणें सूं पैल्या ऊन-सूत सळघा हवें। ऊन नै विचूरणी पड़े। पछे चूंखा करे, कातें ज्यूं कूकड़िया वणें; उवें अटेरणें सूं अटेरघा जावें, आटी वणें। आटी तोलीज परी' र वेजगा रै खनै पीचें। जद उवो चतर शिल्पकार भाणस; कामळ, लुंकारिया, खेसला, भाखला, दोवड़ दोवटी, गमछिया, पटुड़ा, चरड़ी जैडो घणी भांतरा गाभा थोड़े मणतानै सूं वण देवें। उवें मोटा गाभारी वणत में सूरज-चांद, मोरिया-ढेलड़ी अर काँघसिया ही घणा पण कोर देवें। गाँवां रा पुराणा वेजगारा गाभा वणें जद उणां माथे धान रै आटें रो पाण लगावें—इयें वास्ते अँ वसतर धोया दिना लोग पै'रै नही। धोवें खीलें अर फळवा गूंयें तथा पछें पै'रै ! इण तरां गाँवां में हस्तकौशल रा काम आछा चालें।

जियां लुगायां घरा में चरखां रा काम चलावें वयां ही मोटियार धूमता-फिरता ढेरिया कातें भुंवावें। चरखां सूं ऊन-सूत कतें अर ढेरिया भूं ऊँटां-बकरां रा बाळ तथा सिरकेश कात्या जावें; जकी डोरघां सोढ के.लावें। ढेरियां माथे आकां, खीपोळघां अर सिणियां रै अंकारां रा तार कतें जकां रै गिठां सूं जेवड़ा, तणार, वेड़, सिरिया-चौबंधी जिसा रस्ता बंटीजें। अँ:संग काज बटियां रै बळ बटारा सारें। गाँवां में छाटी-बोरा, दरी- सतरंगी, पीडा-पिलंग जैडो जिनसां ढेरियां कती डोरी सूं वणाई जावें। इयें सुहणी डोरी सूं मांचा री वणत में फूल-चोपड़, वावड़ी, पिणहारघां भळें राखीजें। मांचा नीसखिया, वारें संखिया, गरडबेज, घूंढघांळा अर जीव बारा इत्याद केई रकम रा वणीजें। मांचा रा कारीगर मिनख वणता थका डोरी में साँघ जोड़ लगावें थर सुगन दिनभान बतावें'—

पै' सी साँघ पगाँधिये, दूजी पासो पख

: जे दिनडो संवळो हवें तो, माँचो वण नर देख ॥

ढेरियां कात्योड़े अंकारळें, सूत अर जट रा पा:वरी-पा:वरा, बटुआ, न्योळी नाळिया ऊँटां रा म्होरा बेलचा, नकतोरण अर गौरबंध ही घणा गूंघीजें है।

गाँवां मे चमड़ेरी चीजां रा कार ही खोखा चालें। गायीं रो घन, मिनख जमारें रो आधार-उवारें गोवडां री चीजां अठ, रै भाणसां रै डाडी आडी आवें। 'चरमकारेभ्यो नमो'—चरमकार चमार; जको चमड़े री घणी चीजां री मनोहारी कारीगरी जाणें।

पगरख्यां-भोजड़ी, तरवार रा बह्दा, वेग, कमरपेटा, कूवें रा कोस, पछाल, दीवड़ी, पलाण रा थडा तथा ऊँटां रा अडोळ-घासिया, तंग, गानी-घुघरघा नाफी—पेटो, बाँसिया, खलीता अर बटयां जिसी चीजां चमड़े री शिल्प हवें। चमड़े होकां मे, चाँदी रै तारां रो कसीदो काड़णो जावें। गाँवां री अँड़ी यस्तुवां माथे कसीदो काड़ण री दस्तकारी देखवा जोगी हवें। भैर्यां रै खाल री साव— मोरण बटीजें तथा पी तेल पालण घातर ऊँटां रै चमड़े रा कुप्पी-कुप्पा घणा वणाया जावें। ऊँटां

रै चमड़े री सळू तार सूं ढोकां रा धारिया छाला, पालै भीरै रा ठाँव वणाया जावै । जेई चीसंगी द्यारै सळुवां सूं ही वंघै । भँस रै खुरा अर सीगां सूं काँघसी- काँघ-सिया वणायीजै । यो किसय दूसरी विरादरी रा हरिजण करै । हिरण री चाम नै अठै मृगछाला कवै; जका पूजा पाठ, जोग साधण आद जागांवां मे आसण रो काम देवै ।

आपां रै गांवां मे खेती-पाती, धीणै-बोपार अर घर परवार रै घणखरा कामां मे तोहै सूं वण्योड़ी धस्तुवां ही डाढ़ी काम आवै । सूवै-चोपड़ी सूं लेय'र कस्सी, फावड़ा, कुवाड़ा, गंडासी, गँती-दाँतो, बट्ठाळिया, तवातगारी, कडालिया, कुड़छी, चूलडी-चीपिया, वावळी-बसुला-हथोड़ा, करीती, छूरिया-मिरिया, पाछणा-कतरणी, ताकड़ी-टोकरा, बबिया-मेटी तरवारिया-वंदूकिया, कूड-धूमरा, न्योळ-पँघटा इत्याद काम आवणवाळी अणगिणत चीजां हर समे आपां रै गांवां रा शिल्पी लुहार वणावै । वै:लोह तपावै-ब्रधावै, घण मारै जद भारी जोर आवै । हर वखत वास्तं (भाग) अर धूवै कनै डील नै काळो टीट वणा लेवै । पण सोनै-चाँदी रै गँणा रा कळात्मक कार गांवां रा सुनार करै है । अं: भोत्यां अर जड़ाव रो काम ही ज्ञालै । सुनार छोटै हथोड़ै सूं गैणा घड़े, खुट-खुट वाजै; लुहार लोह कूटै धम्मोड़ बोलावै ! जद कँवत चालै—“ सौ सुनार री एक लुहार री ।”

आपणै गांवां मे थाली-तोटा, गितास-गवणिया, टाली-गूघरा, कूंड-टोकणा ही हायां सूं घड़ीजै । पीतल रा पागड़ा, घिलीणा, केतली-छागळा, गांवां रा कारीगर ढालै-मँडै ।

अठै लकड़ी रो शिल्प विगमावू विरासत जुड़घो जूनो करतव है । लकड़ी माथे खुदाई नक्काशी रो शिल्प, सदीनी मुन्दरता वाजै । पागा-पालणा, पोढ़ा-सांगवा, क्याड़ी-किवाड़, काठी-पलाण, अर गाढी इत्याद मोटी चीजा गांवां रा खाती-सुघार वणावै । इया मे पीतल ताम्बे री जड़ाई रो काम बड़ी जुगती सू करै । पत्यर री खुदाई रो काम, देवी-देवतावां री पुराणी देवज्यां जोयां साथै । लाखरी कारीगरी लखारा, गामांरी रंगत बंधाई रंगारा अर तेलो री घाणो रो काम ही हस्त कौशल में घणी नामूनदारी सूं चालै है ।

छेकड़ कयो जा सकै के आज रै समे री शिल्प साथै आपांरी आद-जुगादी शिल्प कळा नै जोड़ मिलान री जाँच जोख जोई जावै तां असली गुण-दोखां रो ठा सारां तथा मजबूती अर मृदुळता में गांवां री पुराणी शिल्प—मेमा बत्ती प्रगट हवै । पण कळा दीठ सू नूँवो पुराणो होणो; शिल्प री कसौटी नही । श्री काळीदास जो रै शब्दां मे—

पुराणमित्येव न साधु सर्वम्  
न चापि सर्वं नवमित्यवयं,

## म्हें क्यूँ लिखूँ

□ सांवर दइया

आ बात कुणसै ग्रंथ में लिख्योड़ी है के लिखै जिको आदमी हर अक नै आ बतावतो फिर के वो क्यूँ लिखै है। जे किणी ग्रंथ में आ लिख्योड़ी भी हुवै तो काई हुयो ? ग्रंथां में लिख्योड़ी बीसूं ही बातां थे-म्है कोनी मानां । पछै आ बात क्यूँ मानां ?

केई गुंगा मनै ई ओ सवाल पछै—थे क्यूँ लिखो ?

भाई, पैली तो थे आ बतावो के थे आ बात क्यूँ जाणनी चावो ?

ई जाणकारी र अभाव में थारो कुण सो काम रुक्योड़ो है ? आ जाण्यां बिना थानै रोटी कोनी भावै का पछै थानै नीद सावळ कोनी आवै ? ई जाणकारी बिना थारो कुण सो अेडो अटकै ?

थे कदैई आ तो कोनी पूछी के में मास्टर क्यूँ बण्यो । साची उतावूं ? मनै कोई सावळ सो दूजो घंघो कोनी मिल्यो इण खातर में मास्टर बण्यो । थी जमानै में दसवी पास कर ट्रेनिंग कर परे आराम सूं मास्टर बण सकतो, इण खातर बण्यो । अवार दाई प्री० बी० एड० रा क्षमेला कोनी हा । प्री० एस० टी० सी० शुरु हुवण में ई घणो जेज कोनी बतावै । पण बी जमानै में जिको बीजो की नी बण सकतो, वो मास्टर बण जावतो । में ई बण्यो ।

पण थारो सवाल तो ओ है नी—में क्यूँ लिखूं ?

में लिखूं, कारण मनै लिखणो आवै अर लिख्यां जी सोरो हुवै ।

(दूजा भलाई ना मानो । में कुण सो दूजा नै मानूं हूं अर मनाऊं हूं ?) म्है लिखूं, कारण म्हारे कने दूजो घंघो कोनी । इयां समझो नी, दुनिया में बीसूं घंघां है, पण में उणरै जोगो कोनी । पण इण रो ओ अर्थ काढ़ण री स्थाणत ना करघा के नाजोगा लोग लिखै । लिखै तो जोगा ही जिका इणरै जोगा हुवै ?

मैं लिखूँ, कारण के शब्दों से अर सोदा से सामाजिक बदलाव आवे। अर्थात् घरेलू बात केवल—महारे लिखप्रोडे से महारे घर आळी में नूवे पइसे भरई बदलाव कोनी आवे। दूजारी तो केवल कुण से मूंडे से ! मैं खुदने दार्शनिक दूरदर्शी अर श्रौतिकारी समझूँ। पण याने अके छाने राखी बात बतावूँ—घर-गली आळा मनै गुंगो समझै। किणी बात में जोड़ायत नै राय देवूँ जणा (वियाँ तो महारी राय री लणने जरूरत पड़े ई कोनी) बा सीधी खळकार्य—थे चुप रैवो ! याने ठा तो आय कोनी। टाबरां नै पढ़ावतां-पढ़ावतां थारी बुद्धि टाबरां जिसी ह्यगी। अं घर-गृहस्थी आळै रा काम है। समाज मे नाक ऊँची राखणी है ! मैं करसूँ जियाँ ई हुसी। थे तो खाती थारै देखवो करो। पण थे अठे ऊभा ई की काम रा कोनी। फालतू टांग अड़ासो। इयाँ करो, थे थारै कमरे मे जावो अर लिखो। कागद काळा करो। चाय-कॉफी चाइजे तो हेलो पाइ लिया। अठे ना भाया फालतू...।

मैं सामें से नई हटूँ जिते बीरो भापण चालतो ई रैवै। (भाई सलीम जावेद, दबाछंट डायलॉग लिखण री कला सीखणी हुवे तो महारे घरां पघारो कदैई !)

मैं लिखूँ—की दो पइसाँ रो जुगाड़ करण खातर। अं दो पइसा आकाशवाणी का किणी सरकारी पत्रिका से बापरै। बाकी पत्रिकावाँ पारिधमिक देवण रो हीणो काम कोनी करे। प्रकाशकाँ कने रायल्टी माँगण री इच्छा ई कोनी हुवे। वँ तो बापडा जद मिले, रोवता ई मिले—पोथ्याँ बिके कोनी। सीजन भौत ई माड़ो है। दूजी बात, प्रकाशक तो खुद अंडे लेवकाँ नै सोघता फिरै जिका पइसा देयर आपरी पोथ्याँ छपाणी चावै। अवे बतावो, डाकण बेटा लेवै का देवै ?

मैं लिखूँ, कारण के म्हेनै किणी संस्था रूपी पेड़ माथे इनाम रा अंगूर लटकता दीसै। मैं लूँकड़ी दाई उछलूँ-कूदूँ। पड़ूँ पण हिम्मत कोनी हालै। लूँकड़ी गुंगी ही जिको अंगूरानै खाटा कैय र (बापड़ी रै मूंडे मे पाणी भरघोड़ो हो तोई) दुर बहीर हुई। पण मैं देश नै इक्कीसवी सदी मे लेय जावण रा चमकता घोरा दिखावणियाँ रो भायलो हूँ। अंगूरानै रो गुच्छो खायी पछेई जपूँ !

याने भेदरी, बात (लिखण रो अकेदम असली कारण) बतावूँ—म्हेनै तो अं पुरस्कारानै सँई प्रेरणा मिलै। जठे जित्ता-जित्ता पुरस्कार घरती माथे है, वँ संग म्हेनै ई मिलणा चाइजे। अं पुरस्कार लाख-हजार-नैकडा से लेय र किलो आधा किलो आलू-कांदा-टमाटर-मूली-गाजर ताई की भी हो सकै। मैं साथे कोनी जिको नोबल पुरस्कार नै आलू रो बोरो कैय र ठोकरे माळै। मैं तो सी ग्राम हरी मिर्च (अवे किणी रै मिर्चा लागै तो लागो भलाई) ई पुरस्कार रूप कबूल करण नै तैयार हूँ। कोई देवै तो सरी भाई रो लाल !

मैं लिखूँ—कारण के साथे काम करणियाँ नै डरा सकूँ। मैं बाँ (बदमाश) सरीकाँ रो गळो कोनी हाल सकूँ। थारै ब्यार जूत कोनी मार सकूँ। वाने दो

चुभती बातों कोनी सुणा सकूं। बाने आ कैय र घमकावूं—लिख परो बदनाम कर देवूंला ।

आ तो म्हें सोचूं । वै काई सोचें, बतावूं ? लो सुणो । वै कैवै—ई स्या निये नै कविता-कहाणी-लेख मे उलझघो रैवण दो । नीतर ट्युणनां खातर लाळी नाँखतो डोचळघो मारतो फिरसी । मरतें भायलें नै दो-च्यार ट्युणनां दिरावणी पडसी । वो घाटो आपणोई हुसी । पडघो मरण दो ई नै । कागद काळा करण दो\* ।

म्हें लिगूं, कारण कै म्हें वेगडो हूं । म्हें कैवू की ओर... लिखूं की ओर... कर्हें की ओर ! आदमी-लुगाई बिच्चै खुल्लै घातां री बातों करहें, पण घर आळी नै सात तालां में बंद राखूं । सरकारी पुरस्कारां री खिलाफत करहें, पण बाने हासिल करण खातर नाक रगडतो फिरूं । म्हें हिंसा री विरोधी हूं, पण पडतल नै पछाडण सूं धूकूं कोनी । आ तो याई सुणी हुवेली—ठाकरां, शूरमा किसाक ? कै पडतल री तो बैरी' ज पडघो हूं !

म्हें लिखूं, कारण कै म्हारो लिखयोडो छप सकें । बीसूं भायला आपरी पत्रिकावां में छाप अर अंक भेजें । वो अक घर आळी खातर मस्टी परपज हुवें । वा सिगडी जगावें । टाबरां नै रमण खातर पत्रिका देवें । टावर पानां फाड़ें । वै हवाई जहाज-नाव-चक्कू वणावें । आखातीज री दिनां मे पाठल किन्ना वणावें अर उडावें । सीयाळी मे टाबरां री वैवती नाक पूंछण खातर ई वै पाना काम आवें । अरे, ओर तो ओर, म्हारी रचना माथे (अबै घाने कुणसें मूंडे सूं कैवूं कै रचना सागै छप्योडी फोटू माथे) छव महीनां आळी लाडेसर नै 'सूड सूड' करावें ! जे बीने टोकण री मूर्खता करहें तो वा कादर घान आळी स्टाइल मे डायलॉग बोले—काई घन बिगाड दियो जिको रोळा करो । हा तो रांड रा कागदरा टुकडा ई ! अकूरडी माथे नाँखो तो कुत्ता ई कोनी सूंधें । म्हें तो इयां ई करसूं । कर लिया काई करो जिको !

म्हें चुप रैवूं । म्हें जाणू—रावळा घोडा अर बावळा असवार किणी री कोनी सुणे ।

म्हें क्यूं लिखूं—इण री पहलो अर छेहलो कारण सुणो—संसार में लाखूं बातों रो अेक ई कारण हुवै कै वां बातों री कोई कारण कोनी हुवै !

साँची कैया, काई अबै ई थारी समझ मे कोनी आयो कै म्हें क्यूं लिखूं ?

००



## धिन है एड़ा वीरां नै

□ विष्णु दत्त सरमा

मौत अर मेह मांग्योडा नी मिले । करमा री मिलकत पाणी माथे । सावण, भादवो वीत ग्या, अर आसोज चाले, पण पाणी री एक बूंद ई कठे ? जाणे इण बरस भगवान क्रिया पाछो फिरग्यो । भगवान नैई इरसूया व्हेला । करसां रा मुंडा उतरने फूटोड़ी कुलकी जिसा वंग्या अर उणरा भोळा-भाळा पशूड़ा तो वादळा देखताई घुस हो जांवता जाणे, तीनू ई लोक रो राज मिलग्यो व्हे । वा इज तो ही उणरी सगळी माल-मिलकत ।

वायरो चाले, जाणे घाव माथे लूण जिसो । टावरां रा पेट भरणाईं मुसकिल व्हे, उण जग पशूड़ा रो काई हाल । भूख अर प्यास में आपरी जीवन-लीला खतम करे । शायद ऐड़ा हा उणरा करम । विधाता ऐज लेख लिखंचा व्हेला ।

मातर भौम छोड़णी घारी जैर लागे, पण मरतो काई नी करे । गांव रा केई लोग आपरा ठोर ठाकर लेयर दुजोड़े मुलक भगवान अर करम रे भरोसे ग्या, तो केई करकड़ी घायर उठैहोज रेवे ।

आसोज री पूनम । रात रो ठंडो पडियोडो चांद आपरो अमरत बरसावे । पण आज करसां नै आज रो अमरत जैर सूं भी घारो, आँख्यां रो अडीठ जेडो लागतो । लोग बादळां कानी देखता जिको लुका-छुपी रो खेल खेलता हा ।

गांव रा सगळा लोग रात रा चार पौर वास्ते सोयग्या । उण दिन तीन चोर चोरी करण खातर हाथ में बन्दूकां रा खाली खोखा लेयर गांव में घुसिया । चोर में छतीस कलावां व्हे । दोय जणा बाणियारे घर मायने घुसिया अर एक उणरो पोरेदार । पण कँवे आगल बुधी बाणियो अर पाछल बुधी लोक । धन ऐडी जागा हो के उणने खोजण मे कांचा चणा चवावणा पडे । खड-खड रो आवाज पाडोसी शंकर रे काना मे पडे । वो झडप घायर उभो व्हे । हाथ में लांबी गेडी लेयर सेठ रे घर

में कूद पड़्यो। जाणें आज उण रें चोरां नें लूटण नें आयो छै। आज उण रें असतर आगें सिरोंई री तलवार शक मारें।

चोर नव दौऊ अग्यारें हुया पण केवता गया—कै 'म्हें. धारो एक दिन काळ बणोला।' शंकर उण खुशी में कद् सुणतो। शंकर री गांव में घणी पूछ ही। क्यूं के वो लेंगोट रो पक्को, हाथ रो नेक अर जबान रो साचो हो। आज शंकर गांव वास्तें द्रोपदी रो फ्रिसन बणनै गांवरो नाक बचायो हो।

नवी बात नव दिन, ताण-खीच'र तेरे दिन। वरस माथे वरस ब्रैतियां ज सति लोगा रें दिमाग सूं दिन में चांद रें ज्यूं अलोप व्हेगी। शंकर एक दिन सतिरें चाल पड़्यो। रवाने होवता ई मेरणा माथे ठोकर खाई, मारगें में धिबरी आपरी अमल सूं खारी ने भाटा सूं भारी जबान में बोली। शंकर ने इण अग्नेविश्वास में विश्वास नी हो।

गांव सु दोय कोस रास्तो तय कियो कै झाड़ी में खार-फसर सुण में बोल्यो, "कुण होरे कुतरो! कुण है? चोरां रो मुखियो बोल्यो जवाब न शंकर बोल्यो ओ तो म्हें हू धारो बाप शंकर। इतरें में ईज चोरां उणनै घेर लिया। उणनै देखताई शंकर रो पारो 108 डीगरी चढ्यो। हाथ में हड्डमान री गदा रें ज्यू राब्योडो धारिये एक जणें नें रामपुर री टिकट काटर जमलोक पुगतो करघो। इतरें में पळाक करती आभे री बीजळी रें ज्यूं तलवार नागण री भात शंकर रे गळे लागो। नकटो लारे सूं धार... केवतै केवतै उणरो माथो मतीरें रे ज्यूं गुडग्यो। लोही री गंगा-जमना शरीर पवितर कर आगें ध्हेगी। शंकर री बलिदान उण आप वास्ते नी हो गांव वास्ते हो। आज तक गांव उणने याद करै। लुगाया गीतों में उणरा बोल गावै। धिन है ऐडा वीरा नें अर सूरों नें।

## घुड़लौ घूमैला जी घूमैला

श्रीमाली श्रीवल्लभ घोष

आए बरस चैत रै म्हीनै मे मारवाड़ रै गाँव-गाँव मे तीजणियाँ घुड़लौ लैय नै घर घर गीत गावती तीज मनाया करै । ओ तिवार घूमघाम सँ घणै हरख सँ मनाईजै । अधरम मायँ धरम री जीत री ओ तिवार आज सँ कोई चार-पाँच सौ बरसों सँ चालु ब्हीयो नै आज ताई मनाईजतों जा रैयो है । इण तिवार री काँणो ई भाँत है—

अजमेर री सूबेदार मल्लूखाँ हो । बी री फौज मे मीर घुड़ले खाँ नाँव री एक नाँमी ने वादर सिरदार हो । बी दिनाँ मेइता माथै राव जोधाजी राँ वेटा राव सातळ जी रा भाई राव बरसिध जी राज करता । अजमेर रै आधीन साँभर री सिरदार मेइता रै परगणा में आय नै लूटपाट सरू कर बी । तद रीसाँ बळता बरसिधजी साँभर माथै हमलो करने साँभर लूट ली । साँभर री मुसलमान सरदार अजमेर भाजनै मल्लू खाँ कन्नै अरडायो । मल्लू खाँ मारवाड़ रै रणबंका राठीड़ो री ताकत आछी तरह सँ जाँणली हो । मन री मनै डरती ई हो । बी आपरा आदमी भेजनै बरसिध जी नै अजमेर आवण रो न्यूतो दियो । सन्धी करण री बात कैवापी । बरसिध जी बीननै धोळी-धोळो दूध जाँण नै बी माथै विसवास कर लियो । आपरा की सरदाराँ नै सागँ लेयनै अजमेर जा पूगा । बठै मल्लू खाँ दगौ करनै बरसिधजी नै कैद कर लिया । इण बात री ठा जद जोधपुर नै बीकानेर पडो तद राव बीकाजी राव डूदाजी नै राव सातळ जी आप आप री लूँठी फौजाँ लैय नै अजमेर कानी ब्हीर ब्होया । जद मल्लू खाँ नै इण बात रा समाचार पूगा कै राठीड़ों री बौत बड़ी फौज अजमेर कानी आ रैयी है तो बी मन म्हीँ डरियो नै बरसिध जी नै छोड़ दिया । बरसिधजी सँ बदली लेवण री उण रै मन री मन मे ई ज रैयी । बी मन में गाँठ तो बाँध ई ज ली हो । राठीड़ों री फौजाँ आप आप रै ठाँण पूगी ।

थोड़ा दिना पछै उणनै समाचार मिलिया के बरसिधजी मेडता में नो है । व जोधपुर गयोड़ा है । तारै मेडता में कोई सातरो सिरदार नो है । तद मल्लू खाँ आपरी फौज लैपनै मेडता मार्भ हमलो बोल दियो । आ घटना संवत 1548 री है । आछी तरै मेडतो लूट नै बो जोधणै कांनी व्हीर व्हीयो । इण बात री खबर जद जोधपुर पूगो जरै जोधपुर सूँ राव सातळ जी, दूदाजी नै, बरसिध जी मिलनै मल्लू खाँ री फौज रो सामनी करण सार्ले उतावळा होयनै घोड़ा दड़-बढाया । राठीडाँ री फौज रै पूगण रै पैली ई ज मल्लू खाँ री फौज पीपाड कोसाणो लूट लियो हो । वठै गवर पूजती तीजणियाँ नै मार-कूट नै एकवाडै मे कैद कर राखी ही । इण तीजणियाँ री देख-रेख मीर घुड़ले खाँ करतो ही ।

राव सातळजी नै ठा पड़ी केँ मल्लू खाँ रै आदमीयाँ ऐ तीजणियाँ नै रोड़ राखी है तो बीया रो हाथ मूछाँ माथै पडियो । राठीडी रगत में उफाण आयो । अबै तो पाँपो पीवणो ई हराम है जद ताई तीजणियाँ नै नो छुडायलाँ । आ कैय नै वे तो रातो रात हमलो करण रो तेवड़ लियो । राव दूदाजी नै बरसिधजी ऐ ई उणोरी मंछा पूरी करणो चावी । रातो रात हर हर महादेव ने जै चामुण्डा माताँ री लूँठी आवाज सूँ आभो गूँजण लागो । घमासाँण जुद्ध व्हीयो । मल्लू खाँ तो डर परो नै भाग छूटी आपरो जीव लेयनै । पण मीर घुड़ले खाँ राठीडाँ री फौज सूँ बादरी सूँ लडतो रैयो ।

चाँद रै चाँदणै में खटाखट भवानी वाजती री ने लोयाँ माथै लोयाँ रा ढिंगळाँ लागता रीया । राव सातळ जी पाधरा घुड़लैखाँ सूँ भिड़िया । दोई जणाँ अपर बली नै लड़ाकूँ हा । पण सातळजी री मार घुड़लै खाँ सँ नी सकियो । उणरो सरीर खेरणी रै ठीडाँ ज्यूँ जगाँ-जगाँ सूँ धावाँ सूँ भरोज गयो । सेवट वो हार मान हेटै पडियो । राव सातळजी री जीत व्ही, पण बै ई घणा घायल हुयग्या हा । तीजणियाँ-कैद सूँ छूटी, नै गवरल माता रा गीत गाती अणूती हरख मनावती, राठीडाँ री जै जै कार करती आपरै घराँ पूगी । वो बखत राव सातळजी घुड़लैखाँ री बादरी सूँ घणाँ ई राजी व्हीया । आगँ धरमजुद्ध होवता नै बादर बैरियाँ री बादरी रा बखाँण ई करता । राव सातळजी जद मीर घुड़लै खाँ रो बखाँण करियो जद वो कँयो केँ मल्लू बौत खुसी नै हरख है केँ म्हे एक बीर रै हायाँ बीर री मौत मर रियो हूँ पण इण बात रो अणूतो रंज ई है केँ म्हे एक कायर री इतरा बरस चाकरी करी जकाँ खुद भाज नै मैदान छोड दियो । तद सातळजी कहयो धूँ पिछतावो मती ना कर थारी बादरी नै याद राखसाँ । राव सातळजी वो बगत आपरै सिरदारों नै कहयो केँ आज सूँ आये बरस घुड़लै खाँ री याद में घुड़लै रो तिवार मनायो जावँ । तद सूँ आज ताई तीजणियाँ घुड़लै रा गीत गावती घुड़लै री तिवार मनावती आ री है । घुड़लै खाँ रो मायो धोची सारंगजी री तलवार सूँ बादयो गयो । घुड़लै खाँ नै पाखती ई ज गाँव बासणी में दफनायो गयो । घुड़लै खाँ री याद नै अमर करणियाँ सातळजी

ई एक बरस पछे सरगवासी व्हेगा । तद सून आज ताई तीजणियां अेक काचें घडें  
रें मोकळा ई तीणा करे, बी मे एक दीवो राख घर-घर घुडलें रा गीत गावती फिरें ।  
पछे तीज रें दिन बी घडें नै फोड न्हाखें । 'घुडली घूमेला जी घूमैला' ओ गीत राव  
सातळजी नै मोर घुडलें खां री याद नै अमर राखै है । गीत इण भांत है—

घुडलें रें बांधी सूत, घुडली घूमेला जी घूमैला ।  
सवागण जायो पूत, घुडली घूमेला जी घूमैला ।  
ओ पूत बड़ी सपूत, घुडली घूमेला जी घूमैला ।  
ओ मूते सारी रात, घुडली घूमेला जी घूमैला ।  
आ रेल गयी गुजरात, घुडली घूमेला जी घूमैला ।  
महाराजा पूछे बात, घुडली घूमेला जी घूमैला ।  
आ किसान घरां री रेल, घुडली घूमेला जी घूमैला ।  
आ बड़ा घरां री रेल, घुडली घूमेला जी घूमैला ॥

० ०

## पुरस्कार : तबादली

जेठनाथ गोस्वामी

रात आंधी सू बेसी दळगी ही । आभो वादळां सू घटाटोप हुयोड़ी । अर इस्योई अमुंझतो मन उणरो ई हौ । नीद जाणै अळगी जाय लुकगी ही । मन रो घोड़ी बड़ग-ड़ायां अंतस में तारला सतरें बरसा री जिनगणी वायोस्कोप ज्यू घूमगी । अबखी अर अळगी भाय आयोड़ा नैनासीक गांवड़ा । माध्यमिक स्कूला में गणित विषय रै अध्यापक री नौकरी । संस्कारा में शिक्षक पणै री सौरम घुळियोड़ी । चढ़ती ऊमर मे विद्यार्थिया नै ई आपरी अनमोल संपत्ति जाणी अर हरहमेस सौ फीसदी परिणाम दियी । दिनां री चकरी चालती रयी अर दळती ऊमर आवतां गृहस्थी री बोझ जतायो । घरवाळी लिछमी रो अवतार । घणी वेळा नमई आळी ठोड़ तबादली करावण री बात चलाई । पण उणरै हिये आदर्श अध्यापकी री कळी इसी खरी कियोड़ी कै मोटी होवती कन्यावा रै खरच जुगाड़ री तप ई उण कळी नै पिघाळ नी सकयो ।

अर यो दिन उणरै साह किंतरो गुमेज भरियो जद कळक्टर उणने सम्मानित कर्यो । जिण स्कूल में उण हैडमास्टरी करी उणी स्कूल रा दो । लड़कां मेरिट मे नाम कमायो । गांव आया मानीता भिनखां उण री दूणी सनमान कर्यो । गाव कानो सू अभिनदन करीज्यो । ऋषि मुनियां री परंपरा में आदर्श गुरु री ओपमावा दिरीजी । कमजोर तबका रा बालचरां नै भारत दरशण अर स्कूल इमारत में हजारों कपियां सू करायोड़ी भौतिक विकास । इसी सरावणा सुण यो भाभां मे नो मायो ।

इसी ई एक रात जद वो घर री लिछमी सू वतळ करी तो आवतै दिनां री गृहस्थी रा सुभीता साह ट्रासफर री दरध्वास्त देय दी । उणरा दिन घिरे कै कन्यावा री किस्मत ! हैडमास्टरी सू टिप्टी इंसपेक्टरी मिळगी । आव जाव र सुभीता री चोखो कस्वो । जाता पाण अध्यापका री अबखी मेटण री ध्येय अगेज्यो ।

अर थोड़ा ई दिनां में शिक्षा महकम में शिक्षक हिताळू अफसर री तारीफ पाई ।

पण स्यात् इसी सुभीता री ठोड़ उण जिस्या कर्मयोगी सारु कोनी ही । सवा महीनै में ई उणनै फेरुं बदळ दियो गयी । जिणरी ठोड़ वो आयी थो अफसर पूरौ तिकमबाज घाट घाट री चाट खायोड़ी । मिनकी सो भोळी चेहरी ! पण मांय सूं पूरौ चात्रग अर चाटक । लांबी पूजतो डील'धोळा वाळां नीचें दोय मीचरकी आंथ्यां चलाती गोळ फ्रेम सूं इसी झाकें जाणें घूधूं । मिनट-मिनट में भोळप विखेरता मोटा होठ । जाणें मंथरा री ई जायो । आदमी पूरौ कांइयो । कमीशन रा कवा खुदई खावणा नै पाटियां नै ई खिलावणा । अर ई पाटियां पूछ हिलावता कुतिया ज्यू अबके काम आई । चण्डाळ चौकड़ी री चकरी इण भात अत्तर करगी । कर्मयोगी नै मजदूर होय छुट्टी लेवणी पड़ी ।

उणरी मोटी मिलकियत फकत उणरो काम । पण भलाई रा दिन जाणें लदम्या । सगळा माया री चकाचौध मे जाणें निजर पितळम्या । जन नेतावा इण बदळाव नै मजूर नी कर्यो । आशवासनां रा थावस दिराय दिराय उणनै तीन महीना छुट्टी पर बैठ्यो राख्यो । कैई ज्ञापन दिरीज्या तो कैई शिष्ट मण्डलां मंत्रीजी सूं मुलाकारां करी । पण दीवा नीचें अधारो ई । माया री मुळक, बणता काम नै लापो देय जाती । कैसर ज्यू वापरयोड़ी रिश्वत खोरी । जिणरै नीचे दबभ्यो आदर्श शिक्षक री नाम अर काम । खावें मूडो, लाजें आंख । कुत्ता नै खुवायोड़ा लाडू उणरा बणता काम रै आडा आय जावता । कुण देखें काम, नै । क्यू करै कोई, निष्ठा भरी सेवा ? काई पड्यो है इण वफादारी में । खुद खावो नै थोरा नै ही खुवा थो कूबें भाग पडगी है । जितरी बार वो आपरी अरदास लेय अफसरा करनै गयी—हाँ, हो जासी !” सूं बेसी नी सुणीज्यो, सुणीज्या तो एलकारां रा ऐ जीवण मोती ई ! समय नै पिछाणी गुरुजी ! सतजुग री बातां नै सीख देवो !

छुट्टिया वधती ई गयी । अर वधती गयी मन री कळाप ! घर गृहस्थी री खरच अर बन्द होय चुकी तणखा । कैई बार मन कियो—काई पड्यो है जिद में । आपणी दाळ रोटी मिलें उठे ई घर । पण नेतावा री नाक ई घणी लांठी । सोरा साम नीची नी होवण देवणी । अर इण भात तीन महीना मे वो शरीर सूं पइसां सूं अर मन सूट्टग्यो । कठै गई वा आदर्श अध्यापकी ? काई मददगार रया वें प्रशस्ति पत्र ? महज नाटक ई लखायो ! कर्मयोगी नै पुरस्कार मे मिली अळगी भाय रै अळगें मारग री कर्मशाला । संतोषी सदा सुखी री मन मे थावस, पण मन री मावस तो उणी भात अधारी । बुझया मन मे पुरस्कार रा तमगा तो तिकड़मिया रै धकें रुकता फिरें सतरें बीसी ।

# गम खावो गम

अमोलकचन्द जांगिड़

गम खावो गम ! वाह साय ! कयनी अर करनी रो कितरो करड़ो काम ! गम खावणो कोई मोतीचूर रा लाड़ू नी है सो सपदे गटक जावै । जिरो काळजो डेड विलाद रो चोड़ो है, जिरो मन घरू-तारै ज्युं पिर है वोहीज गम खा सकै है । जो चिनेक ताव सूं उफण लाग जावै, जो जरा सै जाड़ै में धूजण लाग जावै, वो सदरो-गलो होवै । वी सूं क्युं नी हो सकै । वो फकत बेसी बात बणा सकै है अर गप्प रा गोळा गुड़ा सकै है ।

गम खावणिये मिनख रो मन समदर ज्युं घणो ऊंडो होवे । वो चारुमेर आगली-पाछली सोच'र आगलो पैड धरै । वो आपरी मरजादा नी छोड़ै । जिया समदर में अेक रै ऊपरघा अेक लैराँ औवती जावती रै वो करै, बैया'ई गम राखती वो मिनख छोटी-मोटी आफताँ नै धारै न छूतरो । वो तो आपरै काम सूं काम अर घन्धे सूं घन्धों लाग्यो रैयसी । क्युंक गम रो गड़ फर्त करणो बाँवै हाथ रो खेल कोनी ।

गम री कसौटी रो औसर जद आवै तद मिनख रै सामी जीवण-मरण रो सवाल आवै । घरं खोटै रो तो ओड़ी रै वखत'ई वेरो पड़ै । गम खावणियो मिनख हिमाळै ज्युं पिर होवै । वो सूर कुहावै अर ससार में आपरो नाँव सुवरण आखरतँ मे लिखावै ।

मानसिध चौमासै रै दिनाँ काबल सर करण वास्तै चढ़ाई करी । अटक मे बाढ आयोड़ी ही । बिना पुळ रै पार जावणो कतरो ओखो हो, पण मानसिध जैड़ै सूरवीर रो काळजो काँप्यो कोनी अर सैना नै अटक पार करण रो हुकम दे दीन्यो—

सबै भूमि गोपाल की, मामें अटक कहा ।

जाके मन में अटक है सोई अटक रहा ॥



महाराणा परनापसो नै बरमां ताणी बियाबाण जंगमां री चाक छाननी पड़ी अर बिरं बिरं री बिपदा अर दुय झेलणा पड़्या । पण थो मावड़ भूम रो माचो रापूत हो, आपरं बिचारीं में अटल हो अर हों गम रो गौरववान औदार ।

जियां उलझपोड़ी छोर रो नाको नी लार्ध, बियां ई मिनख नै बिपतकाळ में गेलो नी लार्ध । पण गम खावणियो बीर तो आपन्यां री राय मे मंज'र घणो ऊजळो होजावै । मोरां नै जैर रो बाटको हाथ में झला दियो । बा गट गट पीयगा । स्वामी दयानन्द नै दूध में जैर दियो बँ हांगता हांगता पीयगा । मुकरात घूमनो घूमतो विख पीययो अर आपरं चेलां नै घणं चाव सूँ उपदेश भी देखतो र्यो । ईमा मसीह नै प्राण पर लटका दियो, पण बारं मुख मूँ ददं रो निमयारो भी नी निकळयो । मौन री भिनकी वानं नाई ठरा सकै ही ! बापू सामं छाती गोळी झेली अर 'हे राम' सूँ आश्रं देज नै निहाल करग्या । अंयाळं महान पुरखां रँ बलिदानां सूँ देश में साचें मूरज रो उदय होयो अर पाप रो बिनाम होयो । समाज मे नूवी चेतना आई अर नुवो बळ मिरयो ।

आज फेर परीक्षा री घड़ी आयगी है । अक रगत रो ब्हाळो ब्हेरयो है । हाय नै हाय खायरो है, आतंक छणो ऊकळरयो है । गम किया खायो जासी । पण गम री गरिमा री ऊंडी सीळी धार तातं आतंक नै काट गेरसी । हां गम राखणो पड़सी ।

गम राखणो ऊजळ चरिता रो चानणो है जिमें घणखरा खोटा काम मामो आजावै । फेर वानं चुग चुग समाज सूँ न्यारा करधा जा सकै है । गम बिना रणखेत जीत्यो भी जा सकै । फेर बो मिनख आपरं जीवन री धरोड़ री सांगोपांग रग्याळी भी नी राख सकै । चोखो जीवन जीवणो है तो मीरा री तरखां हँमता-खेलता गम पीवणो है ।

ब्रह्माच



# कौमी एकता

केशव आचार्य

भारत देश महान् रे ओ है हीरा री खान रे ।

माटी इण री सोनो उगळ उंगळ हीरा मोती,  
नंदी नाळ री माटी म्हारी, मंगरी री मदमाती ।  
मोटा मोटा बीडां री आं माटी है रंग राती,  
हरी भरी हरियाळी आ तो माटी राजस्थान रे ॥  
भारत देश महान् रे...।

पातळ री आ माटी प्यारी घेर शिवा महान् रे,  
खान हिमायूँ लागी प्यारी भाई पणां महमान रे ।  
कर्णावती राखी राखी, भारत रा सम्राट रे,  
चितौडां रा राज राखिया, हिन्दू मिल मुसळमान रे ॥  
भारत देश महान् रे...।

भलो जमानो अवै आयो, राज लोग लुगार्या,  
कानूनी री पोख्यां आयगी, छूत छूत भुलार्या ।  
राज करेला कोई भणिया, अणभणिया लिखवार्या,  
जाया है माटी रा सारा, गरीब अमीर महान् रे ॥  
भारत देश महान् रे...।

भील भाई मीणां अतो, करे राज मन चाथा,  
छुआ छूत की आदत मिटगो, राज करे ली लुगार्या ।

मोटा-मोटा महल माळिया छोटा रै संग आया,  
छोटा छोटा मोटा साथै हरिजन जन कल्याण रे ॥  
भारत देश महान् रे...।

आओ भायाँ मिलनै चालाँ, जोत नूँई जगावाँ रे,  
माटी चूनड़ हरियाली री, रूखाँ कोर लगावाँ रे।  
किरसाणाँ री माटी प्यारी राज करसाणी पावाँ रे,  
धन धान री भर दो कोठियाँ 'केशव' मगल गावाँ रे ॥  
भारत देश महान् रे ओ है हीरा री खान रे...।

० ०

## गणतन्त्र

व्र. ना. कौशिक

ओ गणतन्त्र निजराँ सूँ ऊँचो,  
निजराँ सूँ इँने मत नापो,  
'ग' आखर 'गं' गणपति रूप है,  
रिधि सिधि दाता औ गण रुखाळा,  
'ग' स्यूँ गाँव भारत रो नाँव,  
'ग' स्यूँ 'गंगा' पतित पावनी,  
'ग' स्यूँ 'गाय' मय दूध दायनी,  
'ग' स्यूँ 'गोबर' नेत री जिन्दगी,  
'ग' स्यूँ 'गायत्री' महा मन्त्र है,  
घट्ट 'ग' कार निजराँ सूँ ऊँचा,  
'ण' सरूप 'कवच' यन्त्र है,  
मन वचन 'साधना' रो तन्त्र है,  
'त' तत्त्व 'ज्ञान' स्यूँ करै उजाळो,  
तम अहम रो दूर भगति आवै,  
'नूँ' नाद यूँ 'प्राण' जड़ चेतन रो,  
'जीवन जन्म मरण नै समझो,'

'त्र' प्राता है सगळी जगती रो  
 रखाळो जीव मात्र रो जाणो,  
 ओ गणतन्त्र निजरां सूं ऊंचो,  
 ओ गण तन्त्र नजरां सूं ऊंचो ।  
 गण तन्त्र जन मन मी जोत जगावै ।  
 जीवतात् गणतन्त्र राज्यम् ॥

००

## मन रौ बोझ

कल्याणसिंह राजावत

अमर मदा वाणी री जोबण, जीवन समझ तमासा रै  
 बोझ घणो मन रौ भारी, ओ तन तो तोळा मासा रै

बीती सूं परतीती राखै, आगत आवभगत बिसरै  
 मूढ कळपना रा तिरसंकु, सदा अधर बम में बिचरै  
 धरती पर आखड़बाळा, क्यूं बात करै ऊंची ऊंची—  
 सपना री संगत मोवणियां, किण रै पय उजास करै

उळझी घणी अकल ही ज्यारी, सुळझै किण बिध भासा रै ।  
 बोझ घणो मन रौ भारी ओ तन तो तोळा मासा रै ॥

आगळ ढकी जकां रै मन रा, पाप पडत खुलता देख्या  
 ओटी आग राख रै ओटै, बां रा तन बळता देख्या  
 खितरा कसणा काठा बांध्या, उतरी लाज ऊपर आई—  
 बांधी पाळ जका धारा पै, बां रा तन बळता देख्या

भिनव सदा स्याणप मे जीवै, पण कुचळादी सासां रै  
 बोझ घणो मन रौ भारी ओ तन तो तोळा मासा रै

सूरज इतरी ना सिद्धावावै, पण तारा उतपात करै  
 रैण अमावस रै वै कुमनी पण पूनम ही घात करै  
 रंग फूल री रमै न रग रग, सौरभ राज करै मनडै—  
 देव वासना रा भूखा पण मिनख भोग रा आस करै

आसा अथक वधावै आग, पकडै पांव निरासा रै  
 बोझ घणौ मन रौ भारी ओ तन तो तोळा मासा रै

## भाषा अर विव्यांन

श्यामसुन्दर शीपत

समझण लागी दुनिया मारी  
 है भाषा सूं विव्यांन बढी

विभ्यान पूगियौ सिखरां पर  
 विग्यांन पूगियौ जा अम्बर  
 विग्यांन सौधिया समदर-तल  
 विभ्यान चीर दीना भूतल  
 जल-थल-अम्बर-ऊँडै भूतल, चौमेरू है विग्यांन खडौ  
 है भाषा सूं विग्यांन बढी...

रख छाती हाथ विचारो तो  
 विग्यांन कठै सूं आयी है  
 किणरी गोदी मैल्यौ-कूदयो  
 किण मावड हूय पिलायो है  
 भाषा मावड विग्यांन पुत्र, (पण) मां सूं सुत रो मान बढी  
 है भाषा सूं विग्यांन बढी...

भापा है वृक्ष विग्यांन साख  
 भापा अनन्त, विग्यांन लाख  
 भापा है मूल, विग्यांन ब्याज  
 भापा मल्हार, विग्यांन गाज  
 उलटी तकड़ी जग करे तोल, (कद) श्रद्धा सूं सम्मान बडौ  
 ज्यों भापा सूं विग्यांन बडौ

भापा है विश्व, विग्यांन देश  
 भापा शरीर, विग्यांन भेष  
 भापा है नींव, विग्यांन कळस  
 भापा महेश, विग्यांन शेष  
 भ्रम में भटकी दुनिया भोळी (कर्व) राम नही हनुमान बडौ  
 ज्यों भापा सूं विग्यांन बडौ \*\*

## ओ म्हारो छोटो ओ परिवार

धनञ्जय वर्मा

ओ म्हारो छोटो सो परिवार  
 जिके मे में, म्हारि घर आळी  
 एक चांद सो बेटो, चांदणी सी बेंटी  
 गिणती रा म्हे सदस्य थ्यार ।  
 मन्न जिसे किसी भी मिल रही है मजदूरी  
 करणो है गूजर राखणी है सबूरी  
 महंगाई री मेहर सूं  
 आछे-भले लोगी का ईमान डगमगाययो है  
 अकास में उड़ाण भरणिया  
 लट्ट देणी सीघा जमीन पर आग्या है ।  
 टाबरा नै



'ढग-ढाले' री इस्कूला में पढ़ाणो है  
 बीया नै आदर्श नागरिक बणाणो है  
 खान-पान चाय हळको होवै  
 पण ! होवणा चाय निरमळ-विचार ।  
 डोळ सार सिर घुसोणै खातर  
 एक आछो सो मकान ले राख्यो है  
 आया-गया री— आव भगत मार  
 फलकां नै भी थोड़ो-भोत भांख्यो है  
 माडी मोटी बचत करके  
 भविष्य खातर भी की वचारयो हूँ  
 जीया कीया जिन्दगी नै  
 अपनी औनात मुजब जंचरयो हूँ ।  
 पराधीन होणो सबसूँ बडो पाप है  
 मुं-बाणी पड्यै री पीठ पर, घोड़ै री एक टाप है  
 बस सागै चालसी, भलमणसाईं  
 बण के रहणो है मिलनसार ।  
 जिन्दगी की सगळी गर्द  
 हाभां सूँ ही बुहाहंगा  
 दो पइसा भांगण खातर  
 कदे हाथ नी पसाहंगा

## काळ रो कहर

गणपत सिंह

सूखा रो की हाल मुणाऊं  
 नित्यामी रे माल रो ।  
 मानसून तो दगो दे गयी  
 सापीइो बण काळ रो ॥

आधूणा रो वव वायरो  
 मौसम वण्यो वडो दुखदाई  
 म्हीनां सै वरखा रा बीत्या  
 इन्द्र देव नी छाट गिराई  
 आक कर लीला वण फू-या  
 अे अकाल रा लक्षण भाई  
 एडो काल न जोयो म्हेतो  
 कै वै विरघ सौ साल रो ।

सावण होवै हो मन भावण  
 रिमझिम मन्द फुहार रो  
 हरी मखमली साडी पहर्यां  
 धरती रे सिणमार रो  
 हीदा, झूल, रही ललनावां  
 गीतां री अनुपम रचनावां  
 आ सै बातां सुपनो ह्वं गी  
 जोय बवण्डर थार रो ।

अवसर नदी रेत री ववै  
 घर-आंगण सगळा भर देवै  
 सांझ सकाळी भर-भर तसळां  
 घरआळी उलीचती रवै  
 कदै सडक पटरी नै ढक कै  
 बस अर रेल एकाती रवै  
 धी बखता रो हाल कहूँ की  
 मँहगाई री मार रो ।

भाव कुतर रा गेहूँ जितरा  
 लीली घास निजर नी आवै  
 दूध दही धी री नी पूछो  
 हमें छाछ रा भळका आवै  
 मँहगाई नुरसा वण वैठी  
 जो मूंडो दिन-दिन फैलावै  
 बिन पानी सब सून अठे  
 यो आलम हुयौ कमाल रो ।

जस तस कर नर काम चलावै  
 काळ कहर पसवां पर ढावै  
 गल्यो घावलो भूख खिलावै  
 अस्थि पजर खा वण जावै  
 निरख-निरख नै राम हुहाई  
 नैणां औसूं सूं भर आवै  
 दीख रह्यो सै जिगा निजारी  
 पसवां रा कंकाळ रो।

## विरखा सूं मुगती भई

सन्तोष पारीक

अगूण छेई  
 वस्योई एक गाव में  
 भूतां रो आतक  
 खूब मच्योडो हो  
 लोग डरपीज्योडा  
 रात रो आठ वज्या  
 पछे  
 घर सूं बारे नी  
 निकळता  
 लमो लग पड़्योडा  
 चार काळां  
 पछे  
 अबकाळ पांच सात  
 विरखा हुण सू  
 लोग रै चहरां  
 माथे आयोडी

उदानीं धूर हूयगी

अर पाँच-सात

अतिरक्त विद्युत्

दिना सू भूत पप

गाव मे राकडलीला

करण मारुं नी आवन नृ

हयाई री चौकी

वंछ्या

सौ मिनखा मे

एक स्याणो मिनख

रमकू काको

कंबो

भाइड़ा

मालाबी रे परमाद

करथा पछे

भूतड़ा नीं आया

आपण गाव मे

दिन पाँच-सात पछे

पंदरा भूत एक साथे

मेऊ। हूयर गाव री

हयाई री चौकी पर आया

अर एक स्वर सु

कंदप मा ना

बन श्वाँ मुनतां

होगो है

पाने तब करवा नै

श्वे कंदे ही नो आदन्

कपूंक

श्वाने ओ पछेने हे सोई

क, निरखा रे बकरा नृ

दनां पौवन साने

का श्वाँ पछे पछेने

कृत्तु नै रीना।

# तूटती लकीरां

दीपचन्द सुधार

किणी बदमास नै  
सरवर रै  
शान्त अर शीतळ जळ मे  
भाटी न्हांक दियो  
रीस खाय' र लैरा  
उण नै पकड़ण सारु दौड़ पडी  
पण/आपरी सीमा मे बंध्योडी होवण सू  
आगै नी बद सकी  
ई दरद नै भूल'र  
शान्त व्हेगी ।  
पण आपां/जुमां सू विणयोडी  
रीती-नीति री बाता नै  
वेधहक लाघता  
भाग रिया हां  
जिग्यासावां नै/सुरा पान करा रिया हां  
ई वास्तै/जोवण रै हर मोड़ मार्य  
जैर घुळ रियो है  
मिनख, मिनख रै सागै  
अविमवास करतो  
घुटण रै बातावरण माय  
जी रियो है ।

# सांचो सपनों

केशव 'पयिफ'

भेद भाव रो लद्यू जमानो  
मिनख-मिनख सब एक है ।  
घन्धा पूळी न्यारा-न्यारा  
प्राण सबां रा एक है ।  
गांधी बाबो सांचो वैग्यो, छुआछूत छूमन्तर वैग्यो ।  
पयां पगरखी डील अंगरखी  
पैरे ज्यू इन्सान है ।  
घन दौलत सूं बालो आनै  
म्हारो हिन्दुस्तान है ।  
सपनो सब रो सांचो वैग्यो, छुआछूत छूमन्तर वैग्यो ।  
आज प्रेम सूं ना'य घोय सब  
मन्दिरये दरसण जावै ।  
हरि-जन बैठ हरि रो पैडी  
गंगा री गाथा गावै ।  
पाखण्डी पटकातो वैग्यो, छुआछूत छूमन्तर वैग्यो ।  
भारत मां रा पूत लाडला  
नुंवा पंथ पं फूल चढावै ।  
लोकतन्त्र की फेरे माळा  
आत बान पं सीस कटावै ।  
नुवो उजाळो घर घर देग्यो, छुआछूत छूमन्तर वैग्यो ।  
जात पात रा बन्धन टूट्या  
ऊंच नीच रो कठ ठिकाणो ।  
खरो कमावां-नाम कमावां  
चौखो लागे आणो-जाणो ।  
घर-घर मे गंगाजळ बेग्यो, छुआछूत छूमन्तर वैग्यो ।  
सपनो सब रो सांचो वैग्यो, छुआछूत छूमन्तर वैग्यो ॥

# आखा घर में धुँआ ही धुँआ

त्रिलोक गोयल

मैया जी वषावें बैठा माल पुआ ।

आखा घर मे धुँआ ही धुँआ ॥

कहत कबीर सुणो भाई साघो, कोई नै धुँआइो मिले कोई नै पुआ ।

सूखा लाडू फोटा-साँधा, गली जेवटी नार्या-वाँधा ।  
काँधा पनड़ एक दूजा रा, हाथी देखण चाया आँधा ॥  
नागा नाचै, धमका होवै, गाय हीजडा: 'हुआ हुआ' ।

मिनख हो गया गुडवा घाऊ, इण बस्ती हर चीज बिकाऊ ।  
वाण पटक के अजुन ऊभा, मगला कौरव काका, ताऊ ॥  
ऊँदा पड़े साँघरा-पासा, इव जिनगाणी हुई जुआ ।

बैठ री अठै नीद री गोळघां, मैलो-गादुयां, उजळी खोळघा ।  
लजवती वेसरमो बाई, लावा घूषट, खुल्ली चोळघा ॥  
मिजमाना ती खीर-चूरमा, घर रा भूखा: हँसे तुआ ।

आपाधापी धक्कम-धक्का, जीवो जाणै सिरफ उचक्का ।  
घोरारम, गोधम, अंधारा, मार रह्या है चोका छक्का ॥  
कुडसी किमन कन्हार्ई, मोड्या भजन सुणावै नुवा नुवा ।

ऊपर नीचै खीचा ताणी, भला भला रो उतर्यो पाणी ।  
देखो, सुणो, बाँचल्यो, चावे, लरडुयां हाँक- रह्या सँलाणी ॥  
राज रोग सू देश दुखी है, एक न लागी दवा-जुआ ।

दोष भई दूजा रै मार्य, शीश सेवरा बाँधे हायें ।  
बँगण खावै, बुरा बतारवै, टेर मिलावे, माधया मार्य ॥  
'जीआ' जीवो दोरो होयो, मार्यो, माछर जुआ ही जुआ ।  
करम करम री बात कबीरा कोई नै धुँआइो मिले कोई नै पुआ ॥

# वाजला

अरविन्द चूखी

(1)

धाने काँई ठा पड़ सकै, थे नसै मे छो,  
मीता कोई भी हड़ सकै, थे नसै मे छो ।  
मिनखापणै री दिन कठै, है राकसा री रात,  
भड किवाड ! रावण बड सकै, थे नसै मे छो ।  
दब्योड़ी, मिनकी रा कान, ऊदरा कतरै,  
आ वानै नी पकड़ सकै, थे नसै में छो ।  
नागा अर बूचा, सबसूँ कँईजे ऊँचा,  
वारै साम्ही, कुण लड़ सकै थे नसै में छो ।  
कैवण में आवे, पता पतझड मे जड़ै,  
बसन्त में भी पान झड सकै, थे नसै में छो ।

(2)

धाने कुण कह्यो कै कपूत सो लागै,  
स्यावास ! म्हारा बेटा तू सपूत सो लागै ।  
बगत साथै जिकौनी चाल सकै वो,  
देखै जिकै नै ही ऊत सो लागै ।  
बोली री मीठी तो साकर दीसै,  
खारो दोन मिर में भाठा-जूत सो लागै ।  
भगवान पाछै डागदर नै बँद गिणीजै,  
जे हड़ै पीसा—प्राण तो जमदूत सो लागै ।  
पाँचूँ आंगळ्याँ मिलै, तो बर्ण एकता,  
कसकर थे बाँधौ ! मुक्की मजदूत सो लागै ।  
बोले, जद फूल झड़ै, उठार परो पड़ै;  
भूरख दूर सूँ ही राजदूत सो लागै ।  
वी घर रा रैवासी, तो घर छोड़ न्होट्या,  
जाती बेळा बोत्या, 'अठै भूत सो लागै ।'  
घिरपा में बारी सँग वार्ता लागै ज्हे'र सी,  
पण प्रेम में हर काम सहवूत सो लागै ।  
जिन्दगी अर मौत किचै औरत है पड़ाव,  
'अरविन्द' जमानी बाधो वसीभूत सो लागै ।



(3)

पिराण डील मं नी मर्या-मर्या सा छे,  
मानछा ईं टेम रा डर्या-डर्या सा छे ।  
सगपण भ्हरा-बीरा, हता, सातरा घणा,  
पण आजकाळीं लीह रो ज्युं जर्या-जर्या सा छे ।  
सहेन्यां म्हानि पूछे, 'यारा पर घणा कस्या ?'  
बै सोवणा अर मोवणा भर्या-भर्या सा छे ।  
लोग सूका-सूका चिप्योईं जवाडां रा,  
पीळा पीळा छे, कठे हर्या हर्या सा छे ।  
निन्याणमं रो फेर, आडो पटकसी चौफेर,  
सन्तोळी भवसागर नूं तर्या तर्या सा छे ।

(4)

धे स्हारो द्यो, बै आदमी सफल वण ज्यासी,  
स्हारो चारै आपरै असल वण ज्यासी ।  
धे तो ही रंगीन हवाई अेरचूं मै एक शे'र,  
आपां मिलस्यां जीवन गजल वण ज्यासी ।  
मिरगानिणो ! होठ थां का फूल पांख सा,  
म्हारै सूं मिलास्यो तो कमल वण ज्यासी ।  
ये रूप रा राणी सा, सिणगार रा सोढी,  
मुळको तो सरी ! झूपडी महल वण ज्यासी ।  
'अरविन्द' प्रेम साटै ताजभैल नी मांगै,  
हिवडै सारू हिवडी न्याव अदल वण ज्यासी ।

## अखण्डता रो दिवलो

रामनिरंजन शर्मा 'ठिमाऊ' .

अखण्डता रो प्यारो दिवलो  
जगसी सारी रात,  
अन्धियारै नै दूर भगसी  
आवलो परभात ।



भोटोड़ा महला मांही

रैहवणियाँ

साँप रै चरित्र नै

सागै लेर'जीवणियाँ

अँ मिनख

म्हाँ पर

जै'रं री फुंकाराँ

नाँखता रैवै है

अर म्हाँ

बुत वणियोड़ा रैवा हा

छेकड कदताई

बुत वणियोड़ा रैहस्याँ

झुगियाँ मांही भेळी है

म्हारली पीड

आंगण रै बिरछ माथै

बैठी चिडकली

धी भूख रै खातर

ची ची कररी है

राधिका रो दूध

वी बढत नै सुखा दियो है

और पूरो शहर

रोगलो होण लायो है

फेर भी म्हाँ चूप हाँ

घोडा सा अँ मिनख

लारसै बढत सू

म्हारा हक छोसता रिया है

के उणाँ वास्तै

म्हं थोडा हाँ

म्हारा भीत

म्हारो एक होणो

म्हाँ माई

सूरज पैदा करैलो

अर ओ सूरज

अन्धेरो पैदा करणियाँ नै



आई. पी. एस , आई. ए. एस. ...!  
 सेगा री न्यारी-न्यारी रेटां है ...!  
 उणा रा पंदा होवण रा विचार सुं ले'र  
 उणा री पढाई-लिखाई रो सगळो खरच,  
 अर रकम रो चक्रवर्ती व्याज जोड'र  
 दूल्हो री कीमत आंकीजे !  
 जिण वेटी रँ बाप रँ खीसा मे  
 जित्ता वत्ता नोट है,  
 वो आपरी वेटी सालू उत्तो ही नफीस अर  
 कमाऊ बाँदराजा खरीद सके ...!  
 वा रेट चार लाख सुं ले'र  
 आठ-दस लाख रुपिया  
 तक आंकीजे,  
 विवा रो दूजो खरच—  
 अलग ...!  
 आप भी दीन-दयाळु सुं करोनी अरदास ?  
 के वो आपने एक अदद दीकरो देवे—  
 जको होवे आइ पी एस ... आइ. ए. एस. ...?

## किसान रौ विस्वास

मईनुदीन कोरो

जग रूस्यां म्है, घाहं कोनी ।  
 पण तूं रूस्यां, कर्म-रो-बात है ॥  
 जंठ - आपाढा री, तपती लूवा ।  
 चोटी सुं एढी ताई, पाणी चूवा ॥



रामायण रो रावण मरग्यो,  
 रावण रा रगत बीज ऊगा।  
 नीति ने नागी कर,  
 सूळी पर चढ़ती देखूँ ॥  
 मन म्हारो जद भर आवै ॥

नर'री घान ने बळती देखूँ,  
 रीत कुरीति पळती देखूँ।  
 हाका करती ने लाय झोंकता,  
 चित्कारा करती देखूँ ॥  
 मन म्हारो जद भर आवै ॥

मूंगारत री मार खावतो,  
 हळ वेत्यां मे शोळ खावतो।  
 लूण छळी सूं रोद्यां खाता,  
 जगपाळक करसाण ने देखूँ ॥  
 मन म्हारो जद भर आवै ॥

दुनियां में सस्ना री हाडों ने,  
 आपस रा...मचता रोळा ने।  
 बापू री तस्वीर चितारतो,  
 अखबारां मे देखूँ हूँ ॥  
 मन म्हारो जद भर आवै ॥

## जिन्दगाणी

सीताराम सोनी

जलम स्यूं भरवा तक रो टेम  
 किणी तरे पूरो कर देणो इज जिन्दगी छै ।

हंसवा ऊँ रोवा तक ॐ ॐ  
 रोवा ऊँ हैमवा तक  
 खेलवो अर खाणो ॐ । ॐ  
 काम धन्धा अर सोवा को अराम,  
 जिणने जिन्दगाणी री सज्ञा देवो ।

अठिने अभावाँ स्यूँ लड़तो  
 अणपड गरीब किमाण,  
 परकिरती रो सतायोड़ो,  
 सिरकार रो ठुकरायोड़ो,  
 वरग समाज सूँ न्यारो  
 वैठ्यो झूँपडी रै माँय,  
 मिनखपणो निहारे (निरले)  
 आ इज है के जिन्दगी...।

और, बठीने पइसाँवाला  
 भोग विलास में लाव्योड़ा  
 घमण्ड में इतरावता  
 छाती फुलाय र चालणवाळा...  
 यो भी एक जीवण व्हे,  
 आखरी जिन्दगी के बला है...?  
 जकी आपरो न्यारो मातम राखे...  
 आनमा री पीड़ा स्यूँ धाक्योड़ो मिनख घोत्यो—  
 समाज रो भलो करवो ही  
 जिन्दगी ने प्यार करणो है  
 ई को नाम है जिन्दगाणी...।

००



# बादली

## चतुर कोठारी

नील गगन में बाट जोवतां,  
आँखियाँ ऊँची रेंगी रें।  
आसा रो दिवलो जोडन्ता,  
बाती बळ बळ कंगी रें॥  
हार जीत औ टीपणियाँ री,  
वाती जूटी जावें रें॥  
तरस्या नै क्यूँ छोड बादली  
किण देशाँ बिलमावें रें॥  
हिवडें हूक जगावें रें॥

बिन पाणी सब सेत सूक्या,  
सूक्या नदी - नाळा ओ।  
रूँख-वरख औ जंगल सूक्या,  
सूक्या समन्दर घारा ओ।  
तरस्योडा पेंतेरु फड़ फड़,  
पूँ तड़फ्योडा जावें रें।  
तरस्यां नै क्यूँ छोड बादली,  
किण देशाँ बिलमावें रें।  
हिवडें हूक जगावें रें॥

घास-मूस औ कड़वी खूटी,  
डाण्डा अब कई पावें रें।  
खळी मिलेनी, दाणा दिखेनी,  
बाछर जद कई खावें रें।  
गायी री सूफी आँतडियां,  
साँसाँ निकळी जावें रें।  
तरस्याने क्यूँ छोड बादली,  
किण देशाँ बिलमावें रें।  
हिवडें हूक जगावें रें॥



# बादली

महेन्द्र यादव

गरज गरज हिवड़ा नै फाड़ै  
भूखा बादलक की ज्यूं धाड़ै  
पण मुळकै कोन्या बादली

घर रा पांखी परदेश गया  
चहुँ दिश नैण उडीक रह्या  
म्हारो जोवन सूटयो जाय  
पण मुळकै कोन्या बादली

गालां रो लाली न तावड़ो चाटै  
उळझ-उळझ मारग मे लूगड़ी फाटै  
इणतजार करतां बावळी होगी  
पण मुळकै कोन्या बादली

रुखां की ज्यूं गोरी रो—  
सिपगार सूखग्यो  
हिया रा उजास नै काळ चूसग्यो  
नेह रो समन्दर डूवतो ही जाय  
पण मुळकै कोन्या बादली

अजै पणघट पै पायल रो  
इणपकार ना उठै  
आंगण मे रूप रो दीयो ना जळै  
चांदणी रात बैरी तन नै जळीवती  
पण मुळकै कोन्या बादली ।



म्हारा संजम री पाळ  
 अतरेताळ ।  
 अर, म्है बावळी  
 देखती, रंयी  
 धुंआ, धुंआ होती  
 जिन्दगणी नै ॥

मन रो बेलगाम घोड़ो  
 दौड़तो रंयो ।  
 आडे काँकड़, दरबड़ा दरबडा ।  
 चेतना रो चामट्यो  
 उलझग्यो, स्वेटर रा फन्दा ज्यूं  
 अर,  
 थारो, म्हारो हेत ।  
 जाणै, नन्दी रा  
 ढावा आली रेत ॥

## चाहे प्राण गमाऊँ अँ

गणपत सिंह मुग्धेश

म्हारी प्यारी भारत माता, लुळ लुळ शोश नमाऊँ अँ ।  
 थारो शान सदीव बधाऊँ, चाहे प्राण गमाऊँ अँ ॥

धूँ सदियाँ सूँ गोरवड़ी माँ, जग जानी जग मानी अँ ।  
 थारो रूप सुरग मूँ मुन्दर, थारो नँ लामाणी अँ ।  
 अणगिणयाँ हीरा री अरणी, किण किण नाम गिणाऊँ अँ ॥

गंगा जमना विन्ध्य हिमालै, चार घाम री लीला है ।  
 काशी पुष्कर तिस्पति सै, तोरघ घणा छबीला है ।  
 मेळै येळै तीज तिवारा, थारी शोभा गाऊँ अँ ॥

घड़ी तिरंगो फ़ैरातो मूं, 'जयहिन्द' बोन्नो जाऊं जे ।  
महाकाळ रो रूप दिखाती, आगे बढ़तो जाऊं जे ।  
बैर्या री लाशो रो दिगली, उण री भीम लगाऊं जे ॥

अपर्णा इण माटी रे मार्य, दुश्मण चालां चलिया है ।  
अपर्णा ही भार्या ने बहका, अपर्णा सामां करिया है ।  
सैणा ने घर समझा ताऊं, दुश्मन मार भगाऊं जे ॥

बैतर कोटि धारा देटा, कदी ना आपस झगड़ांला ।  
अपर्णा घर री सारी बातें, धारी ईच्छा सुटांला ।  
धरम प्रान्त सब पाछे पैली, भारत रो कहलाऊं जे ॥

००

## मिनखड़ा सोच विचार

जुगलाल वेदी

पैठन्यो कलजुग पाँव पसार ।

मिनखड़ा इव तो मोच विचार ॥

गधेड़ो खेतां बीच घरें—गावड़ी छूटें भूख भरे ।  
कोयलड़ी मुरीली तान करे—ना वीपे कोई ध्यान धरे ॥  
काग पै बजै पट्या पट ताळी—कि गुमसुम वैठी कोयल काळी ।

कागलां जय्य-जय्य कर्यो लंगार ।

मिनखड़ा इव तो सोच-विचार ॥

झूठ बोले हैं मणा-मणा—कि झूठा हाँड वप्या ठप्या ।  
झूठ का लम्बा लम्बा हाथ—पसरगी डाळी डाळी पात ॥  
पगट्यां पगट्यां गईं समाय—साच को काम रती भी नाय ।

साच पै पड़े दड़ादड़ भार ।

मिनखड़ा इव तो सोच विचार ॥

झूठ कररी है ताँडिव नाच—जठे मिले रती ना साच ।  
के तसीन पंचात जेल—झूठ की भरस्यो गाडी रेल ॥  
रिहा भोळी जनता नै चूस—दोनु हाथा हँ लेवे घूस ।

धूस को होरयो गमं वजार ।

मिनखड़ा.....

वाबूड़ा नहा धोय उजळा होय—कि चान्या जाणं सामरे कोय ।

टांग के अन्तर की फोई—क जाणं 'एक्टर' है कोई ॥

जावें बैठ दफतरां मांय—काम क हाथ लगावें नांय ।

कि जाणौ घर की है सिरकार ।

मिनखड़ा.....

॥ 4 ॥

पान जरदे को मुंडे मांय—कि लम्बा लम्बा वाळ बढाय ।

कोई जै जावें काम री चात—धूस बिता करै नी वात ॥

अयां सै धोळें दोफारां—कि देखो कियां गजब धारचा ।

गजब होरचा धोळें दोफार ।

मिनखड़ा.....

देश मे बढिरचो आंतिकवाद—देश दिखें हो तो वरवाद ।

हिंसावादी वणर्या भोत—अहिंसक मरै कुत्तां की मौत ॥

नकटा, नागा नमक हराम—गंवता, गुंडा, गिडक गुलाम ।

अणां को कद होमी सुघार ।

मिनखड़ा.....

चूस भोळी जनता रो रगत—कहावें साचा देश भगन ।

पड्यो करतो कथनी मे फोर—पलटता कोन्या लागें देर ॥

अयां का अगवा हो गया आज—जणां क शर्मं रही न लाज ।

बणें सै गांधी, नेहरू खान गफार ।

मिनखड़ा इव तो सोच विचार ॥

० ०

## ओ म्हारो गाँव है

ओम पुरोहित 'कागद'

ओज्युं पीपळ रो छाव है

मपनी-जगली नांव है

घूक हथाळ्यां ठांव है  
हां जी, ओ म्हारो गांव है ।

जद दिन विमंजै  
जगं दिया  
चांद रं चानणं  
टीगर खेले दड़ी भेडिया ।

बिजळी रं खन्वां भै स बंधं  
नारां री बणं तणियां  
बिजळी रो खाली नांव है  
हां जी, ओ म्हारो गांव है ।

करसां बोवै साऊ खावं  
वापू रं नारां रो  
गांव मांय खाली नांव है  
बिजळी कडकं ठण्ड पडै रे  
करसां खसै खेत मांय  
खातां मांय जमीदार रो दांव है  
हां जी, ओ म्हारो गांव है ।

अंगूठा री नी सूकं स्याही  
मघली जाई जगली परणाई  
मा गंणा रख रिपिया न्याई  
साहूकार री वै'यां मांय  
म्हारी संगळी पीढी रो नांव है  
गांव सगळो पड्यो अडाणं  
बैकां रो खाली नांव है ।

क—मानै करजो  
ख—खेतां खसणो  
ग—गरीबी  
घ—घरहीन  
इस्ती बारखड़ी  
गांव रो चौपाळ है ।



पाँच स्यूं पञ्चीस रा टीगर  
खेता रो'या चरावै लरड़ी  
माठर फिरै सै'र माँय  
गाँव माँय स्कूल रो खाली नाँव है  
हाँ जी, ओ म्हारो गाँव है ।

अणभावणा

अणखावणा

बणै नेता वोटाँ रै ताण

ठग ठाकर है म्हारा

गेडी रै ताण ।

अडार्णाँ रो कहानी कै

खेत दवाणा रो वाणी दै

घेंटी मोम बोट नखावै

जीत परा फेर डोल बजावै

लोक राज रो खाली नाँव है

हाँ जी, ओ म्हारो गाँव है ।

अटी ढीली खेत पाघरो

अटी काठी खेत घोराँ पर

अळगो-आँतरो

मन्तरी रो सुपारसाँ

खेत मिलै साँतरो ।

खेत खतौन्याँ

हक हकूकताँ

जमीदार रै हाथ माँय

गाँव वापडो फिरै गूंग माँय

चाहँ कूँटाँ पटवारी रो दाँव है

हाँ जी, ओ म्हारो गाँव है ।

# आदमखोर

वासुदेव चतुर्वेदी

घपला  
गड़बड़ घोटाला  
राम भजो  
फेरता जाओ  
उलटी माळा  
खोटा करिया काम  
बहैईयों जद  
रापट रोजियो  
ऐड-बेड उटपटांग  
मनमते झूडे  
चक छाठी अर  
मस्त रेवे  
माँच वात यूँ केवे  
गाडराँ री पीठ पै  
आयांडी ऊन ने  
कोई नी छोडे  
राम भजो  
चाँदी रो चम्मच  
सोना री कटोरी  
जो भी हाथ लागै  
ले उडो अर  
उडा ओ मज्यो  
काई के रिया हो  
राम धरम राखो  
अरे अणी हाथ दो  
वणी हाथ लो  
झगडो न झंटी  
काम पडयाँ पै  
फेको नोट अर

काढ़ो काँटो,  
 बन्द दरवाजो  
 खटाक सू खुल जाव  
 काम ब्हे जाव  
 रण सू पैली  
 चाँदी री चकमक  
 नोटों रा तडगिया  
 उछलाव  
 धन भाग  
 धरती रा जाया  
 धरती रा मनखाँ ने  
 डकारता जाव  
 भगवान रे घर सू  
 पइसा बाज़ा लोगाँ ने  
 मोटी बीमारी लगाव  
 गरीब गुरवा बापडा  
 कूँकर ऊपरलँ पाडे आव  
 जतरो लान्बो जूतो ब्हे  
 बतरी इज जियादा  
 पालिस छाव  
 ज़ाटी गंगा जद देवण लाग  
 तो  
 धाप्या ने धपाव  
 भूखा ने तरसाव  
 पाणी नी बरसै जद  
 अकाल री ओलखाण  
 नोटों री गड्डिया सू  
 निजर आव  
 बगला री पाँघा  
 पाणी मे डूबे के नी डूबे  
 पण  
 ब्ही एक टाँग पे उभौ ब्हे'र  
 तपस्या जद करे  
 उण नै देख अर

भोळी भाळी माळलिमा  
 जाने सूं जावें  
 जें गोपाल/जें हरि  
 मली करी रे करतार  
 गंजा ने नाखून दिया  
 जिणा सूं आपणी टाट खुजावें  
 आ गंगा  
 यूं ई व्हेती आई हे  
 यूं ई बेवेला  
 भरी गाडी मे सूपडा रो  
 काई बोझ  
 पण  
 आदमी तो आदमखोर व्हे'र  
 जीवला ।

००

## आंगणै पड्यो बीज बोल्यो

विद्वम्भर प्रमाद शर्मा

घरती रे आंगणै पड्यो बीज बोल्यो—  
 सुण मिनख ! कुदरत बडी जब्बर है।  
 सार नै खीच'र म्हारें में बांध दियो  
 समझ नै नितार'र मग्नै काम मिलै।  
 मूं मांग्यो वर मिल सी।  
 घरती धन जण सी।  
 सार संचनण हुसी।  
 मेहनत मुळक'सी।  
 मानखो पूजीज ही।  
 नूवी बगत धारी आतमा में जाग सी—  
 जुग बदळमी। घरती'कें आंगणै पड्यो बीज बोल्यो।

००

# घुळरी भाँग समन्दर में

शिय मृदुल

आज नहीं भीठास रहघो है, गन्ना और चुफन्दर में ।  
मिनखाचारो तड़कै तरस्यो, घुळरी भाँग समन्दर में ॥

पाणी रो है काळ जमी पं,  
ओ दुख जायँ राहघो नहीं ।  
मोती - मानस - चून मायनै,  
रहिमन ! पाणी रहघो नहीं ॥

पाणी तज नै सून हुआ सब  
व्यथा कठै जा गाऊँ म्हे ?  
ठाँण-ठाँण पर भँस बँधी है,  
क्रिण नै वीन मुणाऊँ म्हे ?

रीति-नीति अर मज्जनता सब, उळझी फिरँ लफन्दर में ।  
कणी जगाँ रो तिरस बुझाऊँ, घुळरी भाँग : समन्दर में ॥

मोटा - मोटा शेर - बवर्ची,  
छोटाँ पर नीत घूरै है ।  
झपट गरीबाँ री रोटी वै,  
घी-शक्कर मे चूरै है ॥

मरजी हुवै ज्युँ फसल नोट री,  
बौलै, काटे, ऊरै है ।  
अरज कराँ तो आँध्यै काँडे,  
दाँत्याँ करै लबूरै है ॥

मनै घतावो फरक काँई है, इस्या मिनख अर चन्दर में ।  
मिनखा चारो कठै तलाशाँ, घुळरी भाँग समन्दर में ॥

देख दशा धरती री काँपै,  
अन्नस गाँधी - गौतम रो ।  
और मुहम्मद, नानक, ईसा,  
मर्यादा पुत्रपोत्तम रो ॥

यूरेनियम रा बीज जमी घर,  
जगाँ-जंगा जन बोवै है।  
सत्य-अहिंसा शब्द-कोष में,  
दो-दो झुञ्कियाँ रोवै है ॥

जगाँ-जगाँ चाणक्य विराज्या मठाधीश, वण मन्दर मे।  
चौफेराँ धारुद विछयो है, घुञ्जरी भाँग समन्दर में ॥  
कयनी अर करनी रै माही,  
जमी-गगन रो अन्तर है।  
छुरी बगल मे पण मुखड़ा में,  
राम - नाम रो मन्तर है ॥

सो चूहाँ रो करै सिरावण,  
बिल्ली तीरथ न्हावै है।  
शस्त्राँ रा बोपारी सगळा,  
गीत शाति रा गावै है ॥

साँठ-गाँठ करवावै स्याणा, पौरस ओर सिकन्दर में।  
टुकड़ा-टुकड़ा धरती बंट रो, घुञ्जरी भाँग समन्दर में ॥

० ०

## मिनखवणों मत भूल

जर्यासह चौहान

जगत वणाणियो आ मिनख जून  
घण निराँत मे बैठ'र घण निपुणाई सूँ वणाई  
इण रचना खातर वो विघणा  
कितोई बिखो काट्यो हुसी  
इण में कोई दो राय नी कै  
मिनख रै बंधवा सागै अणूयो अंधारो छंट'र  
उजाळा री झालर तणगी

इण तरं भूं मिनख विसालता री मूरत वणायो  
 ओ मिनख नूवां विचारां रो घर हुइभ्यो  
 एइओ जीवन जिस्यो मिनख रो  
 दुनिया मे फेर कठेई शायद इज मिलै  
 आ कुदरत री देण एक मातर मिनख ने मिली  
 पण कानी देखूं तो यू लागै  
 जुग पर जुग वीतणै उपरांत इण में ऊपर-ऊपर ली सफलता  
 भले ही हिलूंरा लेवण रागी  
 जीवन री ऊंडी अर आतम चेतणा री सफलता  
 को पाई नी  
 लूंठो अर फूठरो मिनखपणो  
 सतरंग इन्दर घनख रै ज्यूं  
 पसरतो नी दिखणो चाहिजै  
 दिखावा सूं मिनख नी वणै  
 मिनखाचार सूं मिनख वणै  
 आज री वगत मिनख रे भाजना मे  
 आ काई फेर बदळ हुइगो के  
 ओ आपणै जीवन रूपी बळद नै  
 भाटा मे हाकण लाग्यो  
 इण नै रूपाळी माटी रा खेत  
 अर भाटा मूं भरी डूंगरी रो खयाल कोनी रह्यो  
 आ दुखती वात है  
 मिनख, मिनख नै मार'र राजी हुसी  
 मिनख, मिनख पर 'आघात कर' खुसी मनासी  
 इस्त्यो बोदो टैम और कद समझ्यो जासी  
 इण हरकर्ता सूं किण तरे मिनख जूण उजागर हुवेली  
 जिन्दगाणी तो दिवले री जोत ज्यूं बळणे सूं सफल हुवे  
 जिन्दगाणी तो त्याग सूं अर माटी में मिळ'र  
 वलिदान होवण सूं अमर हुवै ।

• •

## रामानवास सोनी

मुख रो सावण वरसे उण घर  
 आंगणिये दो फूल खिनै ।  
 जे माळी हुसियार हुवै तो  
 विघना रा ई आंक टळै ॥

घरती आमै बीच रुखाळी क्यारी क्यारी सोवणी  
 डाळी डाळी निजर पसारा वेल फळै नी चौगणी  
 बागा बीच गुलाब सरोसा फुलडा नाचै प्रीत पळै ।  
 जे माळी हुसियार हुवै तो—

बाग आपणी आपा माळी दोस करम नै देवां क्यूं  
 लिछमण रेखा मती उलांघो भाग भरोसै रैवां क्यूं  
 छोटो आंगण सुख सरमावण मन मरजी रो मोद मिलै  
 जे माळी हुसियार हुवै तो—

गंधारी रे सौ मुत जाया पांडव पांच धनुरधारी  
 भीव सरोसा जबरा जोधा अरजुन बल रो भण्डारी  
 अक चन्द्रमा नौ लख तारा चांद विन्या क्यूं तिमिर ढळै  
 जे माळी हुसियार हुवै तो—

अणचाही आ बेल पसरणी घरती बोझ सबै कोनी  
 रोटी थोड़ी मिनख मोकळा लुटती लाज रवै कोनी  
 माव उघाडा गुंगा गेला किण विघ जीवै गिगन तळै  
 जे माळी हुसियार हुवै तो—

सिध सपूती जामण घरती जिणनै मती लजाईजै  
 नैनो सो परवार पाळजै वाळव मती बघाईजै  
 जिण आंगण जीवण रस छळकै उठै सांति सुख बेल फळै  
 जे माळी हुसियार हुवै तो—



# उधार रा आँसू

ससिकर खटका राजस्थानी

एक आखर भी तो नो बदल्यो  
सगळ्या ज्युं रा ज्युं है  
सूळी पर यीमु लटकेडो है  
लोई रा टपका  
धरती नै लाल बणा रैया है  
मुकरात विष रा प्याला नै  
घूंट घूंट पी रैयो है ।  
महावीर मुण नी सकै जुग रो पीड़  
बगत धमा धम उण रै  
काना मे कीला ठोक रैयो है  
गौतम अँधारै अँधारै उठनै चलयो गयो  
गांधी रै सामी छाती  
घडा घड़ गोळ्या मरी जा रैयो है  
मोटा मिनख ज्यारा नाँव मुण नै  
माथो आपू आप नीचै शुकै  
वे सगळ्या पोव्या मे व्हेव्या बन्द  
घराँ री दीवाराँ नै देवी देवता री ठौड  
नट नटण्याँ रा चित्राम लाग रैया है  
जमानो गुंगो हूँग्यो  
साँव काळ मे वळग्यो  
दरवाजा पर नागफण्या उग रैयो है  
एयरकडीसन कमराँ मे साँप  
चेहरा पर मिनख रो चौखटो चिपका सूँ सूँ करै  
साँवा मिनख आँतरा सू ही डरै  
उणनै मन छेडो वै जग री पीड भुलावण सारू  
मोम रम पीयेड़ा है  
उणारी आँव्याँ मे जे आँसू है  
मगळ्या मगरमच्छा सूँ उधार लिपोडा है ।

११

# कियाँ दहै जावै है

जितेन्द्रशंकर बजाड़

आज है जो राज है पण कान ?  
काल मे दिन  
पारो है न म्हारो है, आज'र कालरे श्रीष  
आयो राज अन्धारो है  
इपीज जन्धारे मे बान मं इरो मन  
गोरण री बान दगे मन  
काल मे दिन  
आज मं न्यायो है  
मेघट अन्धारे ईज नी  
आगे पणो उजाळो है ।

परमात्मा मे बैठा गायत्री विद्यो  
गार्ह है नीज पदपार्थ  
नी भूने है विद्यो  
गुरुज रो पं.र आयणो अर गायणो  
पण  
अर गिनय ई भूने है गुरुज री आयण पार्थ  
उरण मे बान  
गद् भोत नार्थ, पाळ नार्थ,  
धोर विनवार्थ जादरो ३ व  
मर जावै है आयण भाजा गुरुज री पूण ।  
पारण री पाण विद्यो है म मे ईज गुरु  
गायण—

# अरयो ह्यो महारो गाँव

नन्दकिशोर चतुर्वेदी

एक दिन

म्हने मिल्यो हो

लहराता खेता रे पसवाइं

हरियाती फसलां री चादर ओढ्यां

रेजा री बुगतरी मे

उंगण-निदियो गाँव,

म्हें

जागरण रा ढोल ढमाका लारें

मुळक'र गायी परभाती

लेवतो रेंयो

सुख सपना सूं पाती

टुकडा-टुकडा मे

देवतो रेंयो विस्वास री बानगी

अर

किस्त दर किस्त

जागतो रेंयो गाँव

व्ही दिन

म्हें देख्यो अठें

बादळ सूं बरसतो हेत

हवा सूं लहराता खेत

रेत रा धोरा मे

मुळकती मोठ बाजरी

अर

पमेवा सूं सिचियोडा गेला मे

हरखावतो रेंयो गाँव

धीरे धीरे

उगमणा-उजास ने

लुभावण लागी आधूणी आभ

वन्दना का नाम पर

पड़यन्त्र,  
अर नूवी नूवी करामात  
बदलाय री बात पर  
मौमम में उगवा लागी  
नाल हरी बतियाँ

अर याग बगोची री जी  
पगरवा लागी कंकरीट रो जंगल  
आदमगोर यण गहर  
निगल्लनो रीयो गाँव

अबं  
नी हगियावनी भेत  
नी कूनतो कोयना  
प्यारमेर फिर  
धूळो उडाता इजिन  
गरहृति रा गरय गुमान मूं  
रीगनो रोरोट गो आदमी  
अर  
पागटा पगां मूं  
परै जावनो गाँव ।  
(मदग्यहावनो गाँव)

अबं इहै  
गोप रीयो हूं  
दूटा दूटा बेहग में  
इहानो गुनेगो भूत  
अनीन री मिनघात  
मेळ मुगावत  
अर ईमान घरन मूं बूँ तो  
इहाँ पोयी  
बी रा एव लरा दे सीता ही  
दुर्जा दे कुमान  
अन्दो हो इहानो लीव  
अली ज टाँव

# रजपूतण

ज्ञानसिंह चौहान

विसवास करै, विसवाम भरै,  
विसवास हियो रजपूतण रो ।  
जिण दिन्न डिगै विसवास,  
व्हो, मरण दिवस रजपूतण रो ॥

रंगड आ रजवट्ट जणै,  
रजपूतण आ रजपूतण है ।  
खल बरल मचै, अँ जीव छुपै,  
रण चण्ड नहीं, रजपूतण है ॥

विसवाम वामरी ठौड अठै,  
बखत वखेरे विरदावळियाँ ।  
तन, मन, धन दुराण दिये,  
रजनै रजपूतण छाँवळियाँ ॥

धिन्न घडी धिनं पावन पळव्हो,  
रजपूतण नै जिण वेळ घडी ।  
साखी साँच, मायरे खातर,  
आ वोटी वोटी कहूँ पडी ॥

ममता, समता, खिमता, छिमता,  
विघना विघ विघ सूँ भरी पडी ।  
रजपूतण रे रग रग मे आ,  
निछरावळ री निजराने भरी ॥

# सूरज रो सन्देसो

विद्योत्तमा यमा

सूरज उगियो  
होळें-होळें जाणं कोई  
मुबी नवेली वीनपी रो  
पूंपटो उठायो ।  
दरमण हुया,  
ऊकळा, मुळता,  
प्यारा गा मुग्रहा रा  
रग-रेंगीसै सोमार रा ।  
दूजें वानी  
गमन्द रो पाणी,  
उछट्ट-उछट्ट कर  
गीर मू मितण भाव्यो ।  
पा<sup>२</sup> दिगावी मे,  
पटी, पय पमारपी,  
पिनपागियां भरती,  
गोंया गिन्यां नें जगावण नें  
सूरज रो सन्देसां देवण नें,  
उशन भर रेंया हा ।

दूना पाट पुरीजण साव्या ।  
दूगा-बहेरा, गोंग-मुगाई  
-हाई-धोंबें, गोंग गावें,  
या भाई टावगियां रो टोटी,  
गाभें बूई, धूम-सुभाई ।  
गमन्द री सहलीं भी,  
आजीला सावणीं नें  
गामें वेवणीं नावण सावणीं ।  
मुबी उमण,  
दूरी वृती,

पूरी ताकत  
 झिलमिल करती आमा  
 चमकण लगी ।  
 अरे मिनख  
 करलें भलो उपयोग,  
 इण उमग, फुर्ती, ताकत गे ।  
 आळस नै त्याग;  
 कुटु-म, समाज,  
 राज, देस  
 सब री आसा नै पूर

मत भूल भाईचारा नै  
 मत भूल देहरी  
 छिन भगुरता नै,  
 मत भूल  
 सभे रा बदळाव नै  
 सब सँ बडो धरम है  
 मानव धरम,  
 वडो करम है  
 करतव पाठणो  
 जुट जा तू आपरै करतव म,  
 मिनखाँ रा धरम म  
 छिन-छिन रा उपयोग म;  
 गुण ले सूरज रा सन्देशा न ॥

## पारश्रुयों

कमला जैन

ऊँचो चढ़, ऊँचो गयो,  
 धूमँ चामँ गेर ।  
 नेल दिखावँ जगत नै,  
 वो अणदीश्यो रेर । (कृत्रिम ज्ञापण)

खावै नी पण पीवै है ।  
 सांसा नी पण जीवै है ।  
 पगल्या नी पण चालै है ।  
 पूछै नी पण कँवै है ॥ (कम्प्यूटर)

एक मूण्डो, एक कान है,  
 बात करण रो काम है ।  
 दूर - दूर सन्देशो पूँचै  
 कोई उण रो नाम है । (टेलीफोन)

मूँ केवाँ वो सुणतो जाय,  
 हिवडो बोनाँ सूँ भरतो जाय ।  
 चावाँ तो सगळो कँदेवै,  
 नातर छानो-मानो रैवै । (टैपरिकाडं)

० ०

## काळी बांदळी

सुकान्त 'सुमि'

राट-निहारै मरुधर थारी  
 आओ काळी बांदळी ।  
 प्यासी धरती आजःपुकारै  
 आओ काळी बांदळी ॥

प्यासी धरती, प्यासा मरुधर,  
 मिनख पलेरू प्यासा तरवर,  
 तप तावडो-शिखर दुपहराँ,  
 अम्बर सूँ अगनी बरसावै,  
 सूरज री किरणाँ तड़फावै,  
 उमड़-धुमड़ वादल धण जावो ।  
 आओ काळी बांदळी...



भूखा प्यासा फिर जिनावर  
 सूखा सारा खेत है  
 आँधी अर तूफान रै संग मे  
 उड़े सुनहरी रेत है  
 धारी आस लगायी बँठयो  
 धरती रो किरसाण है ॥  
 आओ काळी बादली...

धोरी रो सिणगार पुकारै  
 जेजडला अर फोग पुकारै  
 मिनख गया परदेश है  
 झर-झर कान्ता नीर बहावै  
 धर जोगण रो भेष है ॥  
 आओ काळी बादली...

उमड-धुमड नभ मे छा जावो  
 अम्बर सँ इमरत बरसावो  
 मोठ - बाजरी और काचरी  
 पेतता मे इतरी उपजावो  
 गिनार जिनावर रैवे नी भूखा  
 आओ काळी बादली...

## एक हाथ घूँघटा में

जगदीश संज

एक हाथ घूँघटा मे, छोटी पणो मुण्डो,  
 छोटी-मो है तन पण, मोटो पणो मूण्डो ।

नार मांरे नपडी ने, पगी मांरे पायन,  
 झुगियाँ है साना मांदि, नैण मांदि पायन,  
 पण ने टिकायाँ धोटी, बाज नई पायन,  
 बनी देडी बन-ठण, दनो मूयाँ मूण्डो ।  
 एक हाथ ॥

हे बीस बरस बनो, बनी दस साल री,  
 बनो हाँचो चाले पण, बनी धीमी चाल री,  
 भीगी-भीगी पलंका सुं, टेढी-टेढी भालरी,  
 मुं तो सीधी चालू पण, बनो जाणे कूकड़ो ।

एक हाथ\*\*\*॥

रती भर खाँमी कोनी, बाई धारा तन मे,  
 म्हाने थूँ वता दे गौरी, काई धारा मन मे  
 सहेल्याँ ने सोच लागो, सोच लियो मन मे  
 बनो रवयो एक रात पण ले गयो फूलडो ।

एक हाथ\*\*\*॥

जोशीडामे जोश घणो, बोत्यो ऊँची राग मे,  
 काई तो कसर कोनी, बाई धारा भाग मे,  
 जिन्दगी तो जलङ्गई, मिल गई छाक मे,  
 जिन्दगी री यात्रा मे, घणो होसी दुखडो ।

एक हाथ\*\*\*॥

० ०

## मेरो देश

दीनदयाल शर्मा

कागद रे सताँ माय  
 आँकड़ाँ री फसलाँ देख'र  
 हिवडो उडार होरचो है  
 कै मेरो देश  
 इक्कीसवी सदी गाय  
 जारघो है ।

# अग्नि परीक्षा

बीनणघा  
वाळी नी जावं  
आ तो अग्नि-परीक्षा है  
इण माय  
सीता बी नी बच पावै ।

## चक्कर

हरीश व्यास

पी'र जावती लुगाई नै  
धणी होळैसीक कैवण ला-यो—  
मरवण  
अवकै कागद थोडा दंग सूँ लिखजे  
नीतर व्है जावैली गडबड  
क्यूँ कै प्रौढ-मिवसा रै चक्कर मे  
दापू ई पढण लाग़ा है धडाधड ।

## प्रगति

एक नेता  
दरजी री दुकान पे  
देवा -यो कुर्ता रो नाप,  
ली दो 'तोद' रो नाप—  
फीलो पड ग्यो छोटो,  
दी दो मायै हाथ  
जदी या समझ मे  
आई बात,

आखर अणी देस रो  
 भाग क्यूं फूटै है ?  
 क्यूं कै देस रै  
 विकास रो  
 केवल ओइज सूचक है ।

००

## कालीन्दर नाग

इब्राहिमखी सम्मा

म्हैं तो अजै ताईं  
 जाणतो हो कै इण  
 धरती माथै,  
 एक ही तरह रा  
 कालीन्दर नाम हुबै हैं,  
 और वै काट खावै  
 तो मिनख-मानवी और  
 जिनावर सगळा ही,  
 बिना टिकट सुरंग लोक  
 चला जावै है,  
 पण अबै मने ग्यान हुवो  
 कै धरती माथै कालीन्दर  
 नाग है घणा,  
 जिको आपरो विप टैम, टैम माधै  
 जनता नै देय नै  
 दु खी बणावै है ।  
 म्हारा देश रा लोग क्यूं  
 खावण में मिलावट करै है  
 चांधाँ रो सीमण्ट क्यूं  
 रातू रात मोटा सेठाँ रै  
 गोदाम री लामरा मोभा बढावे है ।

नकली चीजाँ क्यूँ असली  
 रै भाव भगवान रै नाँव री  
 सीगन्ध सँ बिक्रं हँ ।  
 दहेज रै खातर कितरी  
 ही कन्यावाँ विना ब्याह रै  
 रह जावै है ।  
 दहेज रा लोभी क्यूँ आपरी  
 जोडायत नै जळाय हाथ सँकै है ।  
 इण देश री धरोहर,  
 मूरतियाँ क्यूँ विदेशी री  
 शोभा बढावै है  
 हिट्या नै दलात्कार  
 जँडा अपराधाँ री सख्या क्यूँ  
 दिन दूणी रात चोगुणी बर्धै हँ ।  
 आतकवादी क्यूँ आपरा  
 सवारथ खातर लोगाँ री  
 हिट्या करै नै डकैतियाँ  
 घालै है ।

## नित अखबार देखल्यो

सम्पत सिंह 'सरल'

काळजा मे चालती, दुधार देखल्यो ।  
 तिन देख्याँ सार्ग, तिल री धार देखल्यो ॥

तनाँ-मनाँ कै आडी, लोगाँ भीत मीचली,  
 पाइसी हेलो पाइयो, तो आँखे मीचली,  
 कुण है कुण सँ कमती आँर-पार देखल्यो ॥

भर जिनगानी काळी-मीळी धूणी मे घुटी,  
 नाय मूँ जे बचगी, चौड़े आबरु लुटी,  
 प्रोपदी रो चीर, तार-तार देखल्यो ॥

कोयली कूकावै, चील कागला तिरै,  
जण-जण जैर भरेड़ो, मौत साथ मे फिरै,  
आँट्यां तकती काँवळां री डार देखयो ॥

जात-पात, धर्म भेद, मद भापा को बड्यो,  
हार्यां ले हथियार भाई, भाई पर चड्यो,  
सोळा आनां सांच नित अखचार देख्यो ॥

० ०

## जका बखत नै सैसी

विासुआचार्य

जीवण छाई रात अन्धारी  
पण रोज नी रैसी  
छटसी-छटसी दुःख रा वादळ  
सुख रा वाळा बैसी

जीवण छाई रात\*\*\*

राख हिर्यं थोड़ी सी ध्यावस  
मौसम बदळै ला  
पड्योडां चौरावां माथें  
वैगा सम्भळैला  
दुःख रो जीवण वणसी कहाणी  
चकवो चकवी कैसी

जीवण छाई रात\*\*\*

माड़ी मौळी बखत आवतो  
और जावतो रै'धै  
बै'ई गाई जै इतिहामां में  
हंसता सै'दुःख सै'वै  
बखत वां रै ही सागं हीसी  
जका बखत नै सैसी

जीवण छाई रात\*\*\*

हिम्मत आळा हायां आग  
 धूजै पहाड़ समन्दर  
 पूलां री माळा वण जावै  
 डसणां नाग कळन्दर  
 वंजड़ भूमि मांय दूध री  
 धी री नदियां वैसी—

जीवण छाई रात...

० ०

## वाजल

अर्जुन 'अरविन्द'

समै री बिछावण पर, लाज री लीरां बिखरगी।  
 कुण री करियोडी खोड़ कुण रै माथै उतरगी।

अणछैव अँधारो जाणै किण परबत पौढयो  
 पीडा री रेखावाँ, रंडापा रै लार करगी।

चरडचूँ बोले व्यवस्था री गाडी रा पहिया,  
 योजना रा लबादा ओढ जिनगानी पसरगी।

कानाफूसी करतो बायरो पोछ मे, विछ्यो  
 करम खोड़ली नार ज्यू हियै री आस बिसरगी।

वेईमानी रो नूतो हाथ मे ईमान रै  
 वेसरमी रा फूल नीत आँगण-आँगण धरगी।

वायरा मे निपजती नित नवा नाराँ री भीड़  
 धरती री शोळी अब भूख रो फसल सं भरगी।

० ०

## सम्पर्क-सूत्र

1. श्रीचन्द्रदान चारण, नवयुग ग्रन्थ कुटीर के पीछे, कोट गेट, बीकानेर
2. श्री नानूराम संस्कर्ता, तांक माहित्य प्रतिष्ठान पो० कालू-334602
3. सावर दइया, 3 च, 14 पवनपुरी, बीकानेर
4. श्रीमाली श्रीबलभ घोष, सुगन्धगली, ब्रह्मपुरी, जोधपुर
5. श्री जेठनाथ गोस्वामी उप जिला शिक्षा अधिकारी बालोतरा (बाडमेर)
6. अमोलक चन्द जागिड विसाऊ (झुंझनू)
7. उपा किरण जैन, अतिशय क्षेत्र बाड़ा, पदमपुरा, जयपुर
8. नृसिंह राजपुरोहित, पुरोहित कुटीर, छाडप-344036 (बाडमेर)
9. मीठेश निर्मोही, उ०मेद चौक, जोधपुर-6
10. रामनिवास शर्मा, प्रिंसिपल, राजस्थान बाल भारती, बीकानेर
11. शिवराज छंगाणी, नत्थूसर गेट, बीकानेर
12. मीठालाल खत्री, प्र० अ०, रा० उ० प्रा० विद्यालय, चौराऊ, (जालोर)
13. पुष्पलता कश्यप, हनुमान मन्दिर, कचेडी डाकखाने के पाम, जोधपुर
14. महावीर प्रसाद पंवार, अध्यापक, राज० डागा वि०, श्री डूंगरगढ़ (चूरू)
15. गौरीशंकर व्यास, व० अ० रा० मा० विद्या० बागोड़ा (जालोर)
16. भीखालाल व्यास, प्र० अ० रा० मा० विद्या० अजीत, बाडमेर
17. उदयवीर शर्मा, प्रधा० रा० उ० विद्या० गुडा पोंख (झुंझनू)
18. श्री विष्णुदत्त शर्मा, रा० उ० प्रा० वि० सरवाणा, जालोर
19. श्री केशव आचार्य, आकोला, वाया भूपालसागर (चित्तौड़गढ़)
20. ब्र० ना० कौशिक, बिहाणी शिक्षा महाविद्यालय, श्री गगानगर-335001
21. कन्याण सिंह राजावत, चितावा हाउस, झोटवाड़ा, जयपुर
22. श्याममुन्दर थीपतं, प्राचार्य, अ० श० गोपाल हा० सै० विद्या, जैसलमेर
23. धनञ्जय वर्मा, नगर परिषद के सामने, बीकानेर
24. गणपतिसिंह, प्र० अ० रा० मा० विद्या० गूगा, (बाडमेर)
25. मन्तोष पारीक, प्र० अ० रा० उ० प्रा० विद्या० नई आबादी, लूनकरणसर, बीकानेर
26. दीपचन्द सुधार, रा० उ० प्रा० विद्या० न० 1 मेडता शहर (नांगौर)
27. केशव पथिक, शिक्षक, रा० उ० प्रा० विद्या० (कचहरी) मु० पो० कपासन चित्तौड़गढ़
28. त्रिलोक गोयल, अग्रवाल उ० मा० विद्या० अजमेर
29. अरविंद चूरवी, ओमवाल पचायत मार्ग, चूट-331001 (रा०)



30. रामनिरंजन शर्मा 'मिठ्ठाऊ', साबू उ० मा० वि० मिलानी (झुंझनू)
31. हनुमानसिंह पूनिया, रा० उ० प्रा० विद्या० चौहबड़ी बाया रामपुरादेरी,  
(चुल)
32. भगवन् दवे, अ० अ० रा० मा० विद्या० माण्डवास (पाली)
33. मईसुदीन कोरी, प्र० अ० रा० प्रा० विद्या० कोरियो का वास न० 1 बीकानेर
34. सुरेश 'उदय', बरिष्ठ अध्यापक, रा० मा० विद्या० थाणा (उदयपुर)
35. सीताराम मोनी, रेलवे स्टेशन के पास, लाइन-341306 (नागौर)
36. जयसिंह चौहान, जोहरी भवन, काव्यवीथिका कालोड (उदयपुर)
37. चतुर कोठारी, अ० रा० उ० मा० विद्या० सामरा (उदयपुर)
38. महेंद्र पादव, रा० उ० मा० विद्या० मानबड़ा पो० चापामर, पलोदी
39. श्रीमती शारदा शर्मा, अध्या० राज० उ० प्रा० विद्या० श्री गंगानगर
40. हेमलता पारनेरकर अ० अ० रा० वा० उ० मा० विद्या० वेगू (चित्तौड़गढ़)
41. गणपतिसिंह मुंछेल, देदरिया ब्यावर-305901
42. जुगलाल बेदी, रा० उ० प्रा० विद्या० मण्डेला, (झुंझनू)
43. ओम पुरोहित कागद, 24 दुर्गा कालोनी, हनुमानगढ़ सगम
44. विश्वम्भर प्रसाद शर्मा त्रिवेक कुटीर, मुजानगढ़
45. गिव मूडुल, रा० वा० उ० मा० विद्या० वेगू (चित्तौड़गढ़)
46. रामनिवास मोनी, झोंरो की गली, डीडवाना (नागौर)
47. जशिकर खटका राजस्थानी, कवि कुटीर, विजयनगर, अजमेर
48. जितेन्द्र शंकर वजाड, पो० पाहु दा (वेगू) चित्तौड़गढ़
49. नन्द किशोर चतुर्वेदी, पो० कुआयल (उदयपुर)
50. शान्तिसिंह चौहान, रा० वि० प्रशिक्षण महाविद्यालय, बीकानेर
51. विद्योत्तमा वर्मा, रा० वि० गिरवूड (उदयपुर)
52. कमला जैन, व्या० रा० उ० प्रा० विद्या० गिरवूड (उदयपुर)
53. सुकान्त मुनि व्या० श्रीकरनपुर, (रागानगर)
54. जगदीश सैन, मू० पो० नराणा बाया चारमुजा रोड (उदयपुर)
55. दीनदयाल शर्मा, पुस्तकाध्यक्ष, रा० मा० वि०, हनुमानगढ़ सगम (रागानगर)
56. हरीश व्यास, गोमाल गज, प्रतापगढ़ (चित्तौड़गढ़)
57. इम्राहिम या मन्मा, प्रधा० रा० प्रा० वि०, रामदेव कॉलोनी, जालोर
58. सत्यसिंह 'सरल', 53 शिल्प कॉलोनी, शोटवाडा, जयपुर
59. बामु आचार्य, वाहेली चौक, बीकानेर
60. अनंजु अरविंद, काली पस्टन रोड, टोक
61. वामुदेव चतुर्वेदी, एन० आर्द० ई० थार० टी०, उदयपुर







### सूर्यशंकर पारीक

राजस्थानी भाषा एवं साहित्य के मनीषी । बचपन से अनेक संस्थाओं में शोधकार्य किया, शोधार्थियों को मार्गदर्शन दिया ।

जन्म : संवत् 1979 । प्रकाशित कृतियाँ : सरोधो, सिद्ध चरित्र, मूरज कुंडाळो, गौर व्यावलो, घरती, सिद्ध जसनाथजी रो सिरलोको, सिद्धराज ।

शोध पत्रिका 'वैचारिकी' का सम्पादन किया, शताधिक शोध निबंध लिखे, पुरस्कार प्राप्त किये । भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान से सेवा निवृत्ति के उपरान्त स्वतन्त्र लेखन में निरत ।